

आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 मार्च, 2020
डाक प्रेषण तिथि 10 मार्च, 2020

वर्ष : 78 अंक : 03
चैत्र, 2076 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 100

डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2018-20
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2018-20
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

मार्च, 2020

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आचरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥



Website : www.jinwani.in

धर्म का सार तीन बातों में आ जाता है -

1. आत्मा को वश में करो
2. पर-आत्मा (दूसरे) को अपने समान समझो और
3. परमात्मा का भजन करो।

- आचार्य हस्ती

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती



आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा



जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरूपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक

अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

सह-सम्पादक

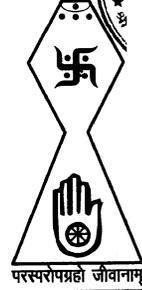
नौरतनमल मेहता, जोधपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

सम्पादकीय कार्यालय

ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088
E-mail : editorjinwani@gmail.com

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2018-20
WPPLicence No. JaipurCity-WPP-04/2018-20
Posted at Jaipur RMS (PSO)



देवे नेरइण्डु य अइण्ड्रो,
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
इक्किक्क भवण्णहणे,
समयं गोवम! मा पमायणु।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 10.14

देव नरक गति में जा प्राणी,
उत्कृष्ट काल तन धारण कर।
एक एक भव ग्रहण करे,
गौतम! प्रमाद क्षण का मत कर।।

मार्च, 2020

वीर निर्वाण सम्बत्, 2546

चैत्र, 2076

वर्ष 78

अंक 3

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.

20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.

20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-

संरक्षक सदस्यता : 11000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि "JINWANI" बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता 'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, E-mail : sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	भगवान महावीर की अहिंसा के पाँच लक्ष्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	9
विचार-वारिधि-	जीवन-निर्माण के सूत्र	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. 10	
प्रवचन-	आत्मशुद्धि के लिए आवश्यक हैं		
	प्रतिक्रमण एवं सामायिक	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. 11	
	उपाध्यायप्रवर की पुण्यशालिता के प्रसंग	-श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. 13	
	आचरण की सम्यक् विधि से आत्मोत्थान	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.16	
	मोहभाव मिटाओ : आनन्द बढ़ाओ	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. 20	
दीक्षा-शताब्दी-	शाकाहार और प्राणिरक्षा के क्षेत्र में		
	आचार्यश्री हस्ती का योगदान	-डॉ. दिलीप धींग	23
	प्रतिक्रमण की पूँजी	-श्री अरुण मेहता	30
शोधालेख-	जैन परम्परा में योग और उसका साहित्य	-श्रीमती रुचि अनेकान्त जैन	34
युगीन-चिन्तन-	जैन आचार्यों की समकालीन युगचेतना	-प्रो. वीरसागर जैन	38
तत्त्व चर्चा-	जैन दर्शन में भाषा	-डॉ. ओ. पी. चपलोत (सी.ए.)	41
	आओ मिलकर कर्मों को समझे (4)	-श्री धर्मचन्द जैन	45
सुवा-स्तम्भ-	आधुनिकता से अध्यात्म तक	-श्रीमती खुशबू पटवा	48
प्रासङ्गिक-	कोरोना वायरस : प्राकृति का कहर.. या		
	प्रकृति की चेतावनी?	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	52
गीत/कविता-	कषायों का कर शमन, वीतरागता में		
	रम यह मन	-श्रीमती अंशु संजय सुराणा	12
	कोटि-कोटि वन्दना हमारी है	-श्री धर्मचन्द जैन	15
	आदर्श सन्त मुनि 'मानचन्द्र'	-श्री सुमित जैन	15
	आचार्य हस्ती ने कमाल कर डाला	-डॉ. दिलीप धींग	19
	महावीर के सिद्धान्तों को, गर जो		
	तुम अपनाओगे	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	22
	जिनवाणी के सच्चे उपासक	-श्रीमती सुशीला भण्डारी	29
	ये अँखियाँ बड़ी तरसार्ती	-श्री सन्तोषचन्द बम्ब	37
	हे शक्ति पुञ्ज! हे महापुरुष!	-श्रीमती सविता शेखर चौपड़ा	51
	सन्तोषी सदा सुखी	-श्री शिखरचन्द छाजेड़	58
	आस्रव भावना	-श्रीमती अभिलाषा हीरावत	91
विचार/चिन्तन-	विश्व के लिए खतरा है मांसाहार	-श्री मनीष चोरड़िया	47
	आत्मीय निवेदन	-श्री महेश नाहटा	51
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-श्री गौतमचन्द जैन	59
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	61
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	81
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	-विभिन्न लेखक	83

भगवान महावीर की अहिंसा के पाँच लक्ष्य

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

प्राणिमात्र के प्रति आत्मवद्भाव से ओतप्रोत भगवान महावीर ने जिस अहिंसा का सन्देश दिया, उसके पाँच प्रमुख लक्ष्य प्रतीत होते हैं—1. आत्मशुद्धि, 2. प्राणिरक्षण, 3. पर्यावरण-संरक्षण, 4. उन्नत-समाज और 4. विश्व शान्ति।

यह जीवन का अनुभव है कि हिंसा का भाव चित्त को मलिन बनाता है। क्रूरता, द्वेष, प्रमाद आदि विकारों के कारण मनुष्य हिंसा ग्रस्त होता है। यही नहीं क्रोध, अहंकार, माया और लोभ के वशीभूत होकर भी मनुष्य हिंसा करता है। वह हिंसा करते हुए अपने क्रोधादि विकारों का पोषण एवं संवर्धन करता है। इन विकारों के संवर्धन से आत्मा मलिन बनी रहती है। हिंसा का भाव रहते हुए कभी किसी की आत्मा शुद्ध नहीं होती। आचाराङ्गसूत्र में हिंसा को अहित एवं अबोधि का कारण कहा गया है। हिंसा से पहले स्वयं का अहित होता है, दूसरे का अहित उसके पश्चात् होता है। हिंसक अज्ञान में जीता है। हिंसा का भाव ज्ञान के प्रकाश में समाप्त होता है। इसीलिए सूत्रकृताङ्ग में कहा गया है कि ज्ञानी होने का सार यही है कि वह किसी की हिंसा नहीं करता—एवं खु नाणिणो सारं जं नं हिंसइ कंचन। -सूत्रकृताङ्ग 1.1.4.10

आचार्य अमृतचन्द्र पुरुषार्थसिद्ध्युपाय ग्रन्थ में हिंसा एवं अहिंसा का लक्षण रागादि विकारों के प्रादुर्भाव एवं अप्रादुर्भाव के आधार पर करते हैं—‘अप्रादुर्भावः खलु रागादीनां भवत्यहिंसेति।’ रागादि विकारों की उत्पत्ति न होना ही अहिंसा है। हिंसा जहाँ आत्मभावों को मलिन बनाती है वहाँ पर अहिंसा आत्मभावों के शोधन में सहायक होती है। हिंसा कर्मबन्धन की हेतु है, अतः वह आत्मा को अशुद्ध करती है। हिंसा का मूल भाव चित्त में उत्पन्न होता है। इसलिए उसमें अशुद्धि का प्रादुर्भाव होता है। आत्मा की शुद्धि का प्रथम चरण हिंसा के त्याग का भाव है। विवेक अथवा यतना से भी हिंसा

पर नियन्त्रण किया जा सकता है।

प्रभु महावीर ने मन, वचन एवं काया-इन तीनों स्तरों पर अहिंसा की स्थापना की है तथा हिंसा स्वयं न करने, दूसरे से न करवाने तथा हिंसा करने वाले का अनुमोदन न करने के स्तर पर सूक्ष्मता से उसकी विवेचना की है। जब कोई पूर्ण अहिंसक होता है तो वह इन सभी स्तरों पर हिंसा का त्यागी होता है और वह आत्मशुद्धि से सम्पन्न होता है।

क्रोध का भाव हिंसा को जन्म देता है, लोभ का भाव एवं परिग्रह का भाव भी हिंसा को जन्म देता है। लोभी एवं परिग्रही व्यक्ति हिंसा को निरन्तर बढ़ावा देते रहते हैं। अतः अहिंसक बनने के साथ क्रोध, लोभ, परिग्रह आदि पर भी विजय प्राप्त करनी होती है, जो आत्मशुद्धि में सहायक है।

भगवान महावीर की अहिंसा प्राणिमात्र के रक्षण पर बल देती है, यह न केवल मनुष्य, अपितु पशु-पक्षियों के प्राणों की रक्षा को भी महत्त्व देती है। आचाराङ्ग सूत्र में तो पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक जीवों के रक्षण को भी महत्त्व दिया गया है। वहाँ यह कहा गया है कि सभी प्राणियों को आयुष्य प्रिय है, सब सुखसाता चाहते हैं सबको दुःख प्रतिकूल लगता है, सबको जीवन प्रिय है, सब जीव जीना चाहते हैं, इसलिए किसी की हिंसा करना उचित नहीं है। संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा अभी मानवाधिकार का मुद्दा उठाया जाता है, किन्तु भगवान महावीर तो 2600 वर्ष पूर्व ही ‘प्राणिमात्र को जीने का अधिकार है’ यह मुद्दा उठा चुके हैं। हम हमारी सुख-सुविधा के लिए उन प्राणियों की हिंसा करने के लिए उतारू रहते हैं, किन्तु उनकी चेतना के प्रति संवेदनशीलता का अनुभव नहीं कर पाते हैं। प्रभु महावीर ने इस तथ्य की स्थापना की है कि सभी प्राणी

चेतनाशील हैं। चेतनाशील होने के कारण उनके प्रति हमारी आत्मीयता एवं संवेदनशीलता अपेक्षित है। वे आचाराङ्ग सूत्र में कहते हैं—तुमं सि णाम तं चेव, जं हंतव्वं ति मण्णसि।
—आचाराङ्ग सूत्र 1.5.5

तुम वही हो, जिसे तुम मारने योग्य समझते हो। इस वाक्य में अन्य प्राणियों को अपने स्थान पर रखकर देखने की प्रेरणा की गई है।

प्राणों से रहित कर देना ही हिंसा नहीं है, किसी को चोट पहुँचाना, किसी पर शासन करना, किसी को परिताप देना, किसी को गुलाम बनाना या किसी को अशान्त करना भी हिंसा है। इसका तात्पर्य है कि भगवान महावीर की अहिंसा प्राणियों के प्राणरक्षण के साथ उनकी स्वाधीनता, समता और बन्धुता को भी महत्त्व देती है। जिस प्रकार मुझे चोट पहुँचाने, मुझ पर शासन करने, मुझे परिताप देने, मुझे गुलाम बनाने एवं मुझे अशान्त करने पर पीड़ा का अनुभव होता है उसी प्रकार दूसरों को भी वैसा ही अनुभव होता है।

प्राचीन वैदिक परम्परा में यज्ञादि में हिंसा एवं बलि को धर्म कहा गया है। मुस्लिम परम्परा में बकरे, ऊँट आदि के कत्ल के साथ ईद का त्यौहार मनाया जाता है। जैनधर्म इसका विरोध करता है एवं उन बेकसूर तथा मूक प्राणियों के रक्षण की प्रेरणा करता है। इसी का सुपरिणाम है कि जैन परम्परा में शाकाहार पर बल दिया गया एवं विश्वस्तर पर 'जैन फूड' प्रसिद्ध हुआ। चीन जैसे कुछ देशों में अभी भी अनेक प्राणियों का मांस खाया जाता है, जिसका घातक परिणाम कोरोना आदि वायरस रूप में देखने को मिल रहा है। यह वायरस जन संहारक है। यद्यपि विश्वस्तर पर मांसाहार को छोड़कर शाकाहार को अपनाने वाले लोगों की संख्या भी बढ़ रही है, किन्तु अभी भी इस दिशा में प्रगति की अपेक्षा है।

गृहस्थ श्रावक के पाँच अणुव्रतों में एक अहिंसा अणुव्रत होता है जिसमें यह भी निर्देश किया गया है कि जो मनुष्य या प्राणी जितना कार्य करने में समर्थ है उस पर उससे अधिक बोझ डालना भी हिंसा है, प्राणियों की रक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए सबके प्रति मैत्रीभाव रखने की प्रेरणा की गई है—'मित्ति मे सव्वभूएसु।' मैत्रीभाव

अहिंसा का सकारात्मक रूप है जो अहिंसा के भाव को समृद्ध बनाने में सहायक है। जिसके प्रति मैत्री होती है उसकी हिंसा करना सम्भव नहीं है। जब अन्य प्राणी हमारे मित्र हैं तो उनकी हिंसा का भाव उत्पन्न नहीं होगा। जहाँ मैत्री है वहाँ हिंसा नहीं होती। इसलिए प्रभु महावीर की अहिंसा प्राणिमात्र की रक्षा का सन्देश देती है।

आजकल पर्यावरण-संरक्षण को मानव जाति की रक्षा के लिए आवश्यक माना जाता है। पर्यावरण प्रदूषण जहाँ मानव जाति के लिए घातक है वहाँ पर्यावरण-संरक्षण उसके लिए सहायक है। प्रभु महावीर के द्वारा प्रतिपादित अहिंसा पर्यावरण-रक्षण में सहयोगी है। आचाराङ्ग, सूत्रकृताङ्ग, प्रश्नव्याकरण आदि आगमों में भगवान महावीर की वाणी पर्यावरण चेतना से ओतप्रोत दिखाई पड़ती है। इसमें एक इन्द्रिय से लेकर पञ्चेन्द्रिय तक के जीवों की रक्षा का उपदेश सन्निहित है। हमारे चारों ओर जो कुछ है, वह सब पर्यावरण है—'परितः आवरणं पर्यावरणम्।' हम भी उस पर्यावरण के अंग हैं। यह पर्यावरण दो प्रकार का है—सजीव और निर्जीव। निर्जीव या अजीव पदार्थों में पुद्गल का पर्यावरण मुख्य है। यह सूक्ष्म एवं स्थूल रूप में विद्यमान है। दुनिया में जितनी चकाचौंध है वह सब पुद्गल के रूप में दृष्टिगोचर होती है। टी.वी. पर विभिन्न प्रकार के चैनल पर जो कार्यक्रम आते हैं वे सब पुद्गल रूप हैं। मोबाइल का जो हम प्रयोग करते हैं, उस पर चित्र देखते हैं, चित्र भेजते हैं, सन्देश भेजते हैं वह भी पौद्गलिक पर्यावरण का रूप है। हमें जो बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएँ आकर्षित करती हैं, सड़कों पर वाहन दौड़ते हैं वे भी पर्यावरण का निर्माण करते हैं। वे सब भी पौद्गलिक रूप हैं। हमारा भोजन एवं दवाओं का प्रयोग भी पौद्गलिक है। पर्यावरण का दूसरा रूप सजीव पदार्थों से युक्त है, जिसमें पेड़-पौधे, जलवायु, अग्नि, पृथ्वी, कीड़े-मकोड़े, मच्छर, मकखी, वायरस, पशु, पक्षी और मनुष्य आदि भी पर्यावरण के अंग हैं। ये सभी यदि प्रदूषित नहीं हैं अथवा स्वभाव में हैं तो एक-दूसरे के लिए सहयोगी बनते हैं, परस्पर उपग्रह करते हैं, किन्तु यदि इनमें किसी प्रकार का विकार उत्पन्न होता है तो वे पर्यावरण को दूषित करते हैं।

स्वस्थता के लिए एवं जीवन के सुसंचालन के लिए प्रदूषण मुक्त पर्यावरण की आवश्यकता होती है। जल यदि प्रदूषित है तो उसका सेवन करने वाले प्राणी भी रोगग्रस्त होते हुए देखे जाते हैं। वायु का प्रदूषण भी स्वास्थ्य को बाधा पहुँचाता है। शरीर के अनेक रोग प्रदूषित जल एवं वायु के कारण उत्पन्न होते हैं। जलकायिक एवं वायुकायिक जीव इस प्रदूषण से त्रास पाते हैं। वनस्पति भी जल एवं वायु की भाँति हमारे जीवन संचालन का प्रमुख स्रोत है। अभी वनस्पति को कीटनाशकों के प्रयोगों से प्रदूषित किया जा रहा है। इससे भी मानव समाज में कैंसर जैसे रोग उत्पन्न हो रहे हैं। स्वस्थ जीवन के लिए ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है। विभिन्न औद्योगिक इकाइयों, वाहनों, मशीनों, एयरकण्डिशनर आदि के कारण वायु में कार्बन-डॉइ-ऑक्साइड की मात्रा निरन्तर बढ़ रही है तथा ऑक्सीजन की कमी हो रही है, ऑक्सीजन की पूर्ति पेड़-पौधों से होती है। अतः पेड़-पौधों को काटना, उनको हानि पहुँचाना परोक्ष रूप से मानव जाति एवं अन्य प्राणियों की जीवन-रक्षक ऑक्सीजन की सुलभता में बाधक है। आज फर्नीचर, कागज आदि के लिए वनों का निरन्तर विनाश हो रहा है जिसे रोकने की आवश्यकता है। प्लास्टिक का अधिक प्रयोग स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध हो रहा है। अतः प्लास्टिक की थैलियों एवं प्लास्टिक से निर्मित सामग्री का भी पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से अधिक प्रयोग त्याज्य है। सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री के लिए अनेक मासूम प्राणियों की हिंसा की जाती है तथा सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री चर्म रोगों को जन्म देती है इसलिए इन पर भी संयम आवश्यक है। खाद्य वस्तुओं में मिलावट भी जैविक वातावरण को प्रदूषित करती है।

भगवान महावीर के द्वारा प्रतिपादित अहिंसा सभ्य, सुसंस्कृत एवं उन्नत समाज की आधायिका है। वह समाज उन्नत नहीं कहलाता जो परस्पर लड़कर एक-दूसरे की हानि करता है, अपितु वह समाज उन्नत होता है जिसमें मनुष्य एक-दूसरे के उपकारक होते हैं तथा एक-दूसरे की सुख-सुविधा का ध्यान रखते हैं।

इसमें अहिंसा की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। हिंसा जहाँ व्यक्ति एवं समाज दोनों के लिए हानिकारक है वहाँ अहिंसा दोनों के लिए उपकारक है। दूसरे पर धौंस जमाना, शोषण करना, आतंक फैलाना, भयभीत करना ये सब हिंसा के रूप हैं। यह हिंसा समाज में समानता एवं स्वतन्त्रता के अधिकार का हनन करती है। बाह्य सुख-सुविधाओं के आडम्बरों से ही कोई समाज उन्नत नहीं बनता। उन्नत समाज में भावात्मक विकास की आवश्यकता होती है। एक-दूसरे के प्रति संवेदनशीलता एवं सहयोग के भाव से समाज उन्नत बनता है।

किसी के प्रति अहित का भाव, अनादर का भाव, अपमान का भाव उन्नत समाज के लिए बाधक है। महात्मा गाँधी ने स्वयं अहिंसा का पालन करते हुए अहिंसा को सामाजिक स्वरूप प्रदान किया। आचार्य हेमचन्द्र ने कुमारपाल राजा के माध्यम से 'अमारि' (अहिंसा) की घोषणा करायी एवं अहिंसक समाज की स्थापना में भूमिका अदा की। आज भी गुजरात में अहिंसा का प्रभाव दिखाई देता है। धर्म एवं राज्य के विस्तार के लिए भी हिंसा का प्रयोग उचित नहीं है। सबके प्रति अहिंसक भाव ही एक-दूसरे को जोड़ता है तथा समाज को उन्नत बनाता है।

व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में शान्ति की स्थापना में अहिंसा एक महत्त्वपूर्ण आधार है। सारी अशान्ति हिंसाजन्य है, हिंसा स्वयं अशान्ति की सूचक है। युद्ध भी हिंसा के ही बृहद् रूप हैं। दो देशों के मध्य होने वाले युद्धों से उन देशों के साथ ही सम्पूर्ण विश्व पर हिंसा का प्रभाव परिलक्षित होता है। दो देशों में आपसी द्रोह एवं कटु सम्बन्ध भी हिंसा को जन्म देते हैं, किन्तु यदि अहिंसा को महत्त्व दिया जाय तो आपसी सम्बन्धों में स्वतः परिष्कार हो सकता है। विश्व की शान्ति के लिए पारिस्थितिकी सन्तुलन भी आवश्यक है। जो अहिंसा की अवधारणा के साथ ही सम्भव है। भगवान महावीर ने जिस अहिंसा का प्रतिपादन किया, उसमें विश्व के सभी प्राणियों के जीवन को लक्ष्य में रखकर किया। वे समुद्री जीवों, स्थलचर, नभचर आदि सभी जीवों के प्राणरक्षण को महत्त्व देते थे।

वैश्विक शान्ति तभी स्थापित हो सकती है जब सभी प्राणियों के रक्षण का भाव हो। मन में भी किसी के प्रति हिंसा का भाव उत्पन्न न हो। भगवान महावीर के द्वारा प्रतिपादित षट्कायिक जीवों के स्वरूप को समझकर यदि उनकी रक्षा की जाती है तो विश्व सुरक्षित रह सकता है। विश्व में अशान्ति के कई कारण हो सकते हैं,

किन्तु उनमें अधिकांश कारणों के निवारण में अहिंसा उपयोगी है।

इस प्रकार वीतराग प्रभु महावीर की अहिंसा का आयाम अत्यन्त विस्तृत है। यह अहिंसा व्यक्ति, समाज एवं विश्व की विविध समस्याओं के निराकरण में सहायक है।

बैंकॉक शिविर के पल

1-2 फरवरी, 2020 को बैंकॉक के नवकार मन्त्र जाप ग्रुप (NMJ) द्वारा आयोजित धार्मिक शिविर में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। यह शिविर बैंकॉक से 100 किलोमीटर दूर नाखोन नायोक में आयोजित था। इस ग्रुप के सदस्यों ने अत्यन्त उत्साह के साथ योजनाबद्ध रीति से शिविर का आयोजन कर धर्मक्षेत्र में एक नया कदम उठाया। शिविर में 200 प्रबुद्ध युवा स्त्री-पुरुषों एवं 70 बालक-बालिकाओं ने जिज्ञासा एवं उत्साहपूर्वक शिविर का लाभ लिया। बैंकॉक में बालक-बालिकाओं की पाठशाला भी चलती है, जिसका संयोजन श्रीमती प्रभाजी सोनी एवं श्री गौतमचन्द्रजी जैन करते हैं। बच्चों में धार्मिक जानकारी देखकर प्रमोद हुआ। श्री प्रकाशजी बम्ब, श्री अंकितजी जैन, श्री सुनीलजी बोहरा, श्रीमती ज्योति भण्डारी, जिन्नीजी खींचा, नवीनजी जैन, मुकुलजी, विनोदजी सोनी, नीताजी डागा, पिंकीजी छाजेड़, नीतिजी डागा, पिंकीजी बोहरा जैसे स्वाध्यायी भी हैं जो नियमित रूप से ज्ञानार्जन में लगे हैं। श्री महावीरजी सेठ, श्री सुभाषजी चौधरी, श्री महेन्द्रजी गोयल, श्री मुकेशजी चौधरी, श्री महेन्द्रजी सांखला, श्री गौरवजी लुणावत, शिल्पीजी जैन, सलोनीजी सेठ, सपनाजी बोहरा, मोनाजी चौधरी आदि श्रावक-श्राविका सभी परस्पर हिलमिल कर कार्य को मूर्त रूप प्रदान करते हैं। यहाँ अधिकांश युवा बन्धु हैं जो 15-20 वर्षों से यहाँ रह रहे हैं। पर्युषण के आठ दिनों में यहाँ स्थान किराए पर लेकर सामूहिक प्रतिक्रमण किया जाता है। प्रतिक्रमण जानने वाले 5-7 श्रावक-श्राविका हैं जो प्रतिक्रमण करा सकते हैं। यहाँ पर लगभग 500 श्वेताम्बर जैन परिवार हैं, जिनमें लगभग

250 स्थानकवासी हैं। नवकार मन्त्र जाप ग्रुप के माध्यम से माह में एक रविवार को नवकारमन्त्र जाप का आयोजन किया जाता है एवं एक अच्छा संगठन बना है जिसकी कार्यकारिणी सर्वसम्मति से अपना कार्य करती है। इस संगठन में अधिकतर लोग मूलतः राजस्थान के हैं एवं जवाहरात के व्यवसाय में कार्यरत हैं। ये बैंकॉक में रहकर भी धर्म से जुड़े हैं एवं जुड़े रहना चाहते हैं-यह अभिनन्दीय है।

शिविर में मुझे चार विषयों पर बोलने का अवसर प्राप्त हुआ-(1) धर्म का सच्चा स्वरूप, (2) अपना विकास अपने हाथ, (3) धर्म से परिवार में सुख-शान्ति (4) मुझे क्या चाहिए? इन विषयों के माध्यम से जैनधर्म दर्शन के सिद्धान्तों की महत्ता उजागर हुई एवं जीवन में उनके प्रयोग को समझा गया। प्रबुद्ध श्रोताओं से प्रश्नोत्तर भी हुए। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता ने भगवान महावीर के जीवन प्रसंगों की प्रेरणाप्रद अभिव्यक्ति की तथा श्री दिलीपजी जैन, अधिष्ठाता-आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान ने बालकों को उपयोगी ज्ञान वितरित किया। उन्होंने एक दिन कर्मसिद्धान्त पर उद्बोधन दिया तो श्री मनीषजी मेहता ने बालकों को भी सम्बोधित किया। हम तीनों ने अत्यन्त आत्मीयता के साथ बैंकॉक शिविर का लाभ लिया तथा वहाँ के श्रावक-श्राविकाओं से आत्मीयता प्राप्त की। शिविर में प्रथम दिन नाटिका का मञ्चन एवं दूसरे दिन प्रभातफेरी के कार्यक्रम भी आकर्षण के केन्द्र रहे। विशेष उपलब्धि यह रही कि वहाँ 100 सेअधिक महिला-पुरुष प्राणातिपात-विरमण व्रत अंगीकार कर एकव्रत धारी श्रावक-श्राविका बने।

-डॉ. धर्मचन्द जैन

आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

नियदृमाणा वेगे आयारगोयरमाइकखंति, नाणभभट्टा
दंसणलूसिणो। नममाणा वेगे जीवियं विप्परिणामेति।

-आचारांगसूत्र (सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल), प्रथम
श्रुतस्कन्ध, षष्ठ अध्यायन, चतुर्थ उद्देशक, सूत्र 35
अर्थ-कितनेक संयमी साधक; वेश का परित्याग करने
पर भी आचार-सम्पन्न मुनियों का आदर करते हैं उनके
प्रति धन्यता का भाव ज्ञापित करते हैं, वे संयम-निष्ठ
मुनियों की निन्दा नहीं करते परन्तु अज्ञानी पुरुष; ज्ञान
एवं दर्शन से विध्वंसक होते हुए स्वयं उन्मार्गगामी हो
जाते हैं।

विवेचन-जीवन में विषयों से विरक्ति का होना अत्यन्त
कठिन है, क्योंकि विषयों के सेवन में ही हमें जीवन की
प्रतीति होती है। जो विषय सेवन को निस्सार समझ लेता
है तथा प्रशम सुख की ओर अग्रसर होकर आत्म गुणों
का विकास करना चाहता है, अपने आत्मबल को
बढ़ाकर आध्यात्मिक रस में निमग्न होना चाहता है वही
साधक विषयों से विरक्त होता है। कुछ साधक भावुकता
में आकर प्रव्रज्या अंगीकार कर लेते हैं अथवा वैराग्य
भाव को ज्ञानपूर्वक स्थिर नहीं रख पाते हैं, वे साधु
बनकर के भी विषयों के प्रति आकर्षित हो जाते हैं। इस
प्रकार के साधकों की चर्चा आचाराङ्ग सूत्र के षष्ठ
अध्यायन के चतुर्थ उद्देशक में गई है।

प्रस्तुत सूत्र में दो महत्त्वपूर्ण शब्दों का प्रयोग हुआ
है- 'नाणभभट्टा' एवं 'दंसणलूसिणो।' कुछ साधु ज्ञान से
भ्रष्ट एवं सम्यग्दर्शन के नाशक होते हैं। वे आचार के
विषयों का कथन तो करते हैं, किन्तु स्वयं आचार पालन
में शिथिल हो जाते हैं। वे संसार से निवृत्त होकर भी
संसार में ही रुचि रखते हैं। आचार का कथन करने मात्र
से कोई आचार-पालक हो, यह आवश्यक नहीं है। इस
सूत्र के पूर्व दो सूत्रों में यह प्रतिपादित किया गया है कि
कुछ साधु अपने संयम के संकल्प में स्थिर नहीं रह पाते
हैं तथा कामनाओं में गूढ़ होकर समाधि से रहित होकर

शास्ता गुरुजनों को भी कठोर वचन बोलने लगते हैं। वे
कषाय की अग्नि से प्रज्वलित रहते हैं तथा रसलोलुपता
से युक्त हो जाते हैं। यही नहीं वे शीलवान्, उपशान्त एवं
प्रज्ञापूर्वक संयम पालन में पराक्रम करने वाले मुनियों को
बदनाम करते हैं।

जो साधक आचार पालन में ज्ञानपूर्वक स्थिर नहीं
रहता उसमें दोष दृष्टि विकसित हो जाती है। वह अपनी
कमियों पर ध्यान न देकर दूसरों के गुणों को भी दोष रूप
में देखता है। वह सत्शिक्षा देने वाले गुरुजनों एवं
आचार्यों को अपने सुख में बाधक समझता है।

कुछ ऐसे साधक होते हैं जो संसार से निवृत्त तो हो
जाते हैं किन्तु सम्यग्दर्शन एवं सम्यग्ज्ञान से पतित हो
जाते हैं। उनकी चर्चा इस सूत्र में की गई है। वे दूसरों को
तो आचार की विषय-वस्तु का प्रतिपादन करते हैं।
दूसरों को आचरण करने की शिक्षा देते हैं, किन्तु स्वयं
ज्ञान एवं दर्शन से भ्रष्ट रहते हैं। ऐसे साधक नम्रता का
व्यवहार करके भी अपने संयमी जीवन को विकृत कर
लेते हैं।

इस सूत्र का अभिप्राय यह है कि बाह्य आचरण के
लिए सम्यग्दर्शन एवं सम्यग्ज्ञान की नींव आवश्यक है।
सम्यग्ज्ञान तथा सम्यग्दर्शनपूर्वक किया गया आचरण ही
मुक्ति का साधन बनता है। मात्र आचार का दिखावा एवं
आचार का उपदेश आत्मकल्याणकारी नहीं होता। संयम
का पालन श्रद्धा एवं ज्ञान से ही पुष्ट होता है। ज्ञान के
द्वारा संयम में आई शंकाओं का निराकरण होता है
जिसके लिए आगम का स्वाध्याय आवश्यक है तथा
संयमियों के साथ रहकर उनसे संयम का पोषण भी
आवश्यक है।

आचाराङ्ग सूत्र में सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं
सम्यक् चारित्र शब्दों का एक स्थान पर प्रयोग भले ही
दृग्गोचर न हुआ हो, किन्तु इस सूत्र के माध्यम से इन
तीनों की महत्ता का बोध हो जाता है।

जीवन-निर्माण के सूत्र

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा.

- ■ ■ महापुरुष अपनी जगहितकारी प्रवृत्तियों और कल्याण कामना से स्वयं याद आते हैं, वे याद कराये नहीं जाते।
- ■ ■ त्यागी होने पर भी जब तक साधु छद्मस्थ है-आहार, विहार और संग का प्रभाव होता ही है।
- ■ ■ गुरु और गुणीजनों की सेवा, बाल-जन का संग-त्याग, स्वाध्याय और एकान्त चिन्तन भाव-निर्माण के साधन हैं।
- ■ ■ सद्भावों की लहरें कई बार आती हैं, परन्तु अनुकूल संग और वातावरण के बिना टिकती नहीं।
- ■ ■ जिसने सदाचार का पालन नहीं किया वह साहसी और निर्भय नहीं रह सकता।
- ■ ■ शासन एवं धर्म-रक्षण का कार्य केवल साधुओं का ही समझना भूल है, साधु की तरह श्रावक संघ का भी उतना ही दायित्व है।
- ■ ■ श्रावक-श्राविकाओं के द्वारा स्वाध्याय अध्यात्मबल से पुष्ट होना चाहिए।
- ■ ■ जरा सा भी कोई सामाजिक कार्य में चूका कि उसकी अच्छाइयाँ भूलकर निन्दा करने लग जाते हैं। सामाजिक-जीवन का यह दूषण है।
- ■ ■ सद्दृष्टि के अभाव में शास्त्र शस्त्र बन जाता है।
- ■ ■ लोभ-मोह पर जिसका अंकुश है वह स्व-पर का हित कर सकता है।
- ■ ■ सैकड़ों आदमी आपके सम्पर्क में आते हैं। यदि व्यवहार के साथ अहिंसा, निर्व्यसनता आदि का प्रचार करें तो अच्छा काम हो सकता है।
- ■ ■ साधक महिमा-पूजा और सत्कार को भी परीषह मानता है। उसमें प्रसन्न होना, फूलना एवं अहंकार करना अपनी कमाई को गँवाना है।
- ■ ■ संघ का कर्तव्य गुणी जन का आदर करना है।
- ■ ■ गुणप्रेमी अपना कर्तव्य समझकर सत्कार-सम्मान करे या गुणानुवाद करे, परन्तु साधक को उसमें निर्लेप रहना चाहिए।
- ■ ■ गृहस्थ चाहे पूर्ण पाप या आरम्भ परिग्रह का त्यागी नहीं है, फिर भी उसका लक्ष्य पाप घटाने का होना चाहिए।
- ■ ■ वीतरागवाणी का यह महत्त्व है कि वह सुख-दुःख के कारणों को समझाकर प्राणी को कुमार्ग से बचाती एवं सुमार्ग में जोड़ती है।
- ■ ■ जो मन में कुछ और रखता है तथा बोलता कुछ और है, वह धर्म का अधिकारी नहीं होता।
- ■ ■ मनमाना या इच्छानुकूल नहीं चलकर स्व-आत्मा के नियन्त्रण में चलना ही स्वतन्त्रता है।
- ■ ■ गुरु से कपट करने वाला शिष्य शिक्षा के अयोग्य होता है।
- ■ ■ कामी सौन्दर्य में कृत्रिमता करता है।
- ■ ■ यदि एक विद्वान् सही अर्थ में धर्मारोधन से जुड़ जाता है तो वह अनेक भाई-बहनों के लिए प्रेरणा का स्तम्भ बन जाता है।
- ■ ■ असंयम दुःख और संयम सुख का कारण है।
- ■ ■ प्रतिदिन सामायिक का अभ्यास विषमभाव को घटाकर मन में समभाव की सरिता बहाने वाला है।
- ■ ■ महर्षियों ने धर्म का सार तीन बातों में कहा है-1. आत्मा को वश में करो, 2. पर-आत्मा को अपने समान समझो और 3. परमात्मा का भजन करो।

- 'नमो पुरिसवरगंधहृत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

आत्मशुद्धि के लिए आवश्यक हैं प्रतिक्रमण एवं सामायिक

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

आगममर्मज्ञ परमश्रद्धेय पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा पीपाड़ शहर में अध्यात्मयोगी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. की दीक्षाशती के शुभारम्भ पर माघ शुक्ला द्वितीया 26 जनवरी, 2020 को फरमाये गये प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता द्वारा किया गया है।

-सम्पादक

सौभाग्य है पीपाड़वासियों का। यहाँ आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी महाराज) की जन्म-शताब्दी महोत्सव मनाने का सुयोग भी आपको मिला। दीक्षा शताब्दी कहने का नहीं, करने का समय होता है। संघ ने भी करने की बात पर बल दिया है। आप ज्ञान करना चाहें तो आवश्यक-सूत्र का ज्ञान करें। सब काम छोड़कर जिसे पहले किया जाता है, वह आवश्यक होता है। आवश्यक सूत्र का अध्ययन एवं प्रतिक्रमण भी उसी प्रकार आवश्यक हैं।

जीवन में आवश्यक है-अशुचि का निवारण। आप सुन्दरता के लिए शृङ्गार और साज-सज्जा तो बाद में भी कर सकते हैं, लेकिन पहले आवश्यक है-अशुचि का निवारण। आवश्यक है दोषों का निकन्दन। आवश्यक है-पाप का प्रक्षालन। आवश्यक है पाप से निवृत्ति और आवश्यक है दोष से मुक्ति। मैं यहाँ संख्या की बात नहीं कर रहा हूँ। हर व्यक्ति यह सोचकर चले कि मेरे जीवन की शुद्धि कैसे हो? हर व्यक्ति को अपनी शुद्धि करनी होती है। शुद्धि करने वाले लोग शुद्धि करते हैं। कई रिवाज से शुद्धि करते हैं तो कई लाइसेंस रिन्यू करने के लक्ष्य से शुद्धि करते हैं तो कई समझ बढ़ाने के लिए भी शुद्धि करते हैं। आप कैसे भी शुद्धि करें, शुद्धि करना आवश्यक है।

आप आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी महाराज) के दीक्षा-शताब्दी वर्ष के शुभारम्भ पर यह संकल्प करें कि हमें अपने दोषों की शुद्धि करनी है। जिन्हें प्रतिक्रमण याद नहीं वे एक-एक

लाइन भी याद करेंगे तो शताब्दी वर्ष में प्रतिक्रमण कण्ठस्थ हो जाएगा। जिन्हें प्रतिक्रमण याद है, वे अर्थ-भावार्थ समझें। शुद्धि के लिए प्रतिक्रमण आवश्यक है। प्रतिक्रमण में दोषों की शुद्धि की जाती है, पाप से हटा जाता है।

पहली बात है-प्रतिक्रमण, तो दूसरी बात है-सामायिक। दीक्षा जीवन भर की सामायिक है। आपकी सामायिक देशकालिक है। देश सामायिक एक घण्टे की हो सकती है तो ज्यादा भी की जा सकती है। आप सामायिक करें, नित्यप्रति सामायिक करें। मैंने उपाध्यायप्रवर की गुणानुवाद-सभा के दिन कहा था-हमारे में भी उपाध्यायप्रवर जैसी समता का सञ्चार हो। समता का सञ्चार कैसे? रेत का सञ्चार होता है तो हवा का भी सञ्चार होता है। पानी का सञ्चार भी आपने देखा होगा। क्या कभी आपने अपना सञ्चार देखा है? आप ठण्डे हैं या गर्म? आप जानते हैं कि आदमी क्रोध में गर्म होता है जबकि खुशी में-शान्ति में आदमी ठण्डा रहता है। समता वाला सिद्धि पाएगा ही, ऐसा नहीं कहा जा सकता। बहुत बार समता वाला सिद्धि पाने से रह जाता है तो उसमें किसी को आश्चर्य करने की बात नहीं। सामायिक में समता है, लेकिन घर जाते ही वह समता न जाने कहाँ चली जाती है? सामायिक में समता है, पर दुकान पर चढ़ते ही वह समता क्यों नहीं रहती?

आप आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव) का जीवन तो देखें। चार घरों में वह एकाकी लाडला बालक था। एकाकी होते हुए भी उसने मात्र दस वर्ष की अवस्था में

दीक्षा ले ली। आज, जिनके चार-चार लड़के हैं, चार में से किसी एक को दीक्षित करने का कहो तो.....? है कोई, यह कहने वाला कि मेरे एक लड़के को आप दीक्षित करें। कभी-कोई सन्त-सतीवृन्द के सान्निध्य में आता-जाता हो तो भी हलचल मच जाती है।

आचार्य भगवन्त ने दीक्षा ली। वे अपनी माताश्री के साथ दीक्षित हुए। माँ ने दीक्षा में सहयोग किया। आज की ये माताएँ क्या कहती हैं? कितना सहयोग करती हैं? आप अपना चिन्तन करना। मैं पीपाड़ में जन्मा हूँ। मैंने जब से होश सम्भाला, राता उपासरा देखा है। राता उपासरा कभी खाली नहीं रहा। कोई-न-कोई उपासरे में सामायिक करते मिलता तो कोई प्रतिक्रमण करते। सामायिक-प्रतिक्रमण, दया-संवर, उपास-पौषध करते-करते कोई-न-कोई जरूर दिखाई देता। मैंने राता उपासरा कभी खाली नहीं देखा, आज क्या स्थिति है? आज सामायिक करने वाले सामायिक तो करते हैं, पर घर पर करते हैं। घर की सामायिक में कभी दूध वाला तो

कभी पानी वाला आता है, कभी बच्चा रोता है तो कभी कोई बुलाने वाला भी आ सकता है। कोई नहीं तो आपकी फोन की घण्टी बजती है, मोबाइल पर मैसेज आता है। अतः घर के बजाय धर्मस्थान में सामायिक हो। पहले इसी पीपाड़ में चाहे कांकरियाजी हो या मुणोतजी, चाहे गाँधीजी हो या चौधरीजी, हर कोई उपासरे में आकर सामायिक-प्रतिक्रमण, दया-संवर, उपास-पौषध करता।

कमाई करने के लिए दुकान है, तो धर्म-साधना करने के लिए धर्मस्थान क्यों नहीं? आप आचार्य भगवन्त की दीक्षा-शताब्दी वर्ष में धर्मस्थान में सामायिक प्रारम्भ करें। सामायिक समता के लिए हो और सन्तोष की भावना पैदा करने के लिए हो। आप सामायिक-प्रतिक्रमण याद करें और जिन्हें याद है वे अर्थ-भावार्थ समझें। आप आवश्यक-सूत्र की परीक्षा दें तो आपका दीक्षा-शताब्दी वर्ष मनाना सार्थक होगा।

कषायों का कर शमन, वीतरागता में रमे यह मन

श्रीमती अंशु संजय सुराणा

छोटी सी ज़िन्दगी में, क्यों आत्मा का नुकसान करें
प्रभु फरमाते 'अप्पणा सच्चमेसेज्जा'
चलो अब खुद से ही खुद की पहचान करें।
शान्त, मधुर है जो स्वभाव से,
उस आत्मा को क्यों परेशान करें
प्रभु फरमाते हैं, कोहो पीइं पणासेइ
करके क्रोध फिर क्यों, प्रीति का घमासान करें।
विनम्रता की कसौटी पर, आत्मा सदा अवगाहन करे
प्रभु फरमाते हैं, माणेण अहमा गई
विनयनाशक मान को अपनाकर,
दुर्गति में क्यों प्रस्थान करें।
शुद्ध आत्मा में कभी भी,
माया नहीं किञ्चित् स्थान धरे

तिर्यञ्चगति का खोले द्वार, मित्रता माया से जाती हार
आश्रय स्थान धर्म का सरल आत्मा,
पैदा फिर क्यों व्यवधान करें
सन्तोषी आत्मा ही पाती है,
सुख के अनुपम वरदान खरे
प्रभु फरमाते हैं, लोहो सव्वविणासणो
जिन वचन है हितकारी,
श्रद्धा रख आत्मा का कल्याण करें
पुनर्भव के मूल का सिंचन करते,
उन कषायों से अब तो डरें
प्रभु वाणी का लें अवलम्बन,
भव की जड़ का काटें बन्धन
शुद्ध आत्मस्वरूप प्रगताने हेतु, कषायों का शमन करें
बरसाओ प्रभु कृपा अब इतनी,
बस वीतरागता में ही मम आत्मा रमण करे।
-एस 149, महावीर नगर, टॉक रोड, जयपुर (राज.)

उपाध्यायप्रवर की पुण्यशालिता एवं सरलता के प्रसंग

मधुर व्याख्यात्री श्री गौतममुनिजी म.सा.

प्रस्तुत प्रवचनांश शान्त-दान्त-गम्भीर, आत्मार्थी, प्रबल पुरुषार्थी पण्डित रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के निकटवर्ती, अन्तेवासी सन्तरत्न मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. के उपाध्यायप्रवर से सम्बन्धित प्रसंग दिवसों पर एवं गुणानुवाद सभा में फरमाए गए विभिन्न प्रवचनों एवं पीपाड़ शहर में जनवरी 2020 के प्रवास समय में मध्याह्न में सुनाए गए संस्मरणों के आधार पर नमन मेहता, पीपाड़ शहर द्वारा उन्हीं के शब्दों में संकलित किए गए हैं।

-सम्पादक

(1) उपाध्याय भगवन्त विहार करते हुए कोटा की तरफ पधार रहे थे। यद्यपि सड़क के किनारे ही चल रहे थे तथापि पीछे से चारे (भूसे) से ओवरलोड एक ट्रक गुजरा और उसकी टक्कर से उपाध्याय भगवन्त नीचे गिर गए, लेकिन उपाध्याय श्री जी की पुण्यशालिता देखिए, ठीक सामने ही सड़क के उस किनारे एक क्लीनिक खुला हुआ था जहाँ उपाध्याय श्री जी का प्राथमिक उपचार तुरन्त हो गया। यह प्रसंग इस बात की ओर इंगित करता है कि पुण्यशाली महापुरुषों के सामने यद्यपि समस्या आती नहीं और आती भी है तो तुरन्त समाधान सामने मिल जाता है।

(2) ऐसा ही एक प्रसंग जोधपुर के उपनगरों के विहारक्रम का है। हाउसिंग बोर्ड के 16वें सेक्टर के धर्म स्थानक में पधार रहे थे, लगभग डेढ़ किलोमीटर ही चल पाए और उनका चलना मुश्किल जैसा ही हो गया, एक कदम भरना भी उनके लिए कठिन हो रहा था, सहवर्ती सन्तों एवं श्रावकों ने उनसे निवेदन किया कि-स्थानक के लिए मुश्किल से आधा किलोमीटर का विहार ही बचा है, थोड़ी देर विश्राम कर फिर आगे चलते हैं, कुछ विश्राम कर चलने के लिए उद्यत हुए भी, मगर स्थिति जस की तस रही, अभी भी एक कदम भी भरना मुश्किल हो रहा था।

उस परिस्थिति में सहवर्ती सन्तों ने उपस्थित श्रावकों से कहा-‘देखो भाई, यहाँ आसपास कोई खाली मकान हो तो’; तो एक भाई बोला- ‘म.सा.!

कल यहाँ पूरा मोहल्ला देखकर गए मगर कोई खाली मकान नहीं मिला।’

तब सन्तों ने कहा-‘देखो! पुनः एक बार सन्तों के साथ जाकर देखो, शायद महापुरुष के पुण्य प्रभाव से कहीं ठहरने की जगह मिल जाए।’ आप आश्चर्य करेंगे जहाँ उपाध्यायश्री जी रास्ते में खड़े थे, ठीक उसी के सामने एक जैन घर के नीचे का सारा भाग खाली पड़ा था और सन्तों की गवेषणा पर उस जैन भाई ने पूर्णभावेन ठहरने का स्थान दिया और अपना अहोभाग्य समझा।

(3) एक ऐसा ही उनकी पुण्यशालिता का नज़ारा आज भी मण्डावर के लोगों की स्मृति में सजीव है। घटना पुरानी जरूर है, पर उनकी पुण्यशालिता के जीवन्त प्रभाव की जीती-जागती पेशकश है। उपाध्याय भगवन्त एक धर्मशाला में विराज रहे थे और किसी एक विशेष प्रसंग दिवस पर लोगों का बहुत आवागमन था। आगन्तुक एक बालक खेलते-खेलते ऊपर की मञ्जिल में पहुँच गया। उस क्षेत्र में बन्दर बहुतायत में हैं जो अक्सर भवन की छतों पर आ जाया करते हैं, और जब वह बालक ऊपर की मञ्जिल में गया तो वहाँ आए एक बन्दर को देखकर घबरा गया और भागने लगा, अपने बचाव के लिए उसने ऊपर से छलांग लगा दी और नीचे जहाँ उपाध्याय भगवन्त खड़े थे ठीक उनके सामने ही आकर वह बच्चा गिरा, आश्चर्य की बात देखिए उस बच्चे को खरोंच तक नहीं आई-ऐसा उन पुण्यशाली पुण्य पुरुष का पुण्य प्रभाव था।

(4) उनकी सशक्त पुण्यशालिता का एक और ऐसा ही प्रसंग है। पीपाड़ चातुर्मास पूर्णाहुति की पूर्व संध्या में सायंकालीन समय पर स्थण्डिल भूमि से लौटते समय उपाध्यायश्री जी अचानक गिर गए, नाक और होंठ के बीच के नाजुक हिस्से में जबरदस्त चोट भी आई, पर आश्चर्य की बात है 'उस समय डॉक्टर साहब वहीं पर पहले से मौजूद थे' और तत्काल निरवद्य उपचार हो गया, ऐसे नाजुक हिस्से में टाँके लगने के दौरान भी अपना पूर्ण समभाव बनाए रखा, 'आह-उफ्फ' तक की भी आवाज़ नहीं-ऐसा साक्षात् भेदज्ञान का नज़ारा; चातुर्मास होने से मरहम-पट्टी का धागा तक भी नया काम में नहीं लिया-ऐसा प्रभु आज्ञा के प्रति समर्पण भाव; सूर्यास्त का समय निकट होने के बावजूद भी उनकी संयम के प्रति जो गहरी सजगता रही-वह लोगों को सहज आकर्षित कर रही थी और उस समय उपस्थित सभी जनों को उनकी उस पुण्यशालिता का सहज और प्रत्यक्ष अनुभव हो रहा था। धन्य है जिनशासन के ऐसे पुण्यपुरुष।

(5) उनकी पुण्यशालिता को इस बात से भी सहज ही ग्रहण किया जा सकता है कि वह एक ऐसे महापुरुष रहे जिनको अपने हाथों से एक नहीं बल्कि तीन-तीन साधकरत्नों (रत्नसंघीय आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., नानकवंशीय आचार्य श्री सोहनलालजी म.सा. एवं नानकवंशीय आचार्य श्री सुदर्शनलालजी म.सा.) को आचार्य पद की चादर ओढ़ाने का गौरवपूर्ण पुण्य योग प्राप्त हुआ।

(6) चातुर्मास की विनति करने वाले उपाध्यायश्री जी से आग्रह किया करते कि-'आप अपने स्पष्ट भाव फरमाओ' तब उपाध्यायश्री जी प्रतिक्रिया देते हुए फरमाते-'भाई! मैं मेरे ही भाव कह दूँगा तो आचार्यश्री जी क्या करेंगे, संघ में चातुर्मास खोलने की व्यवस्था आचार्य श्री के पास ही होती है।'

यह थी उपाध्याय श्री जी की संघीय व्यवस्था में सहकार की भावना।

(7) पूज्य उपाध्याय श्री जी का जीवन सहज था, सरल था, लेकिन सजगता से ओतप्रोत था। आगन्तुक दर्शनार्थी छोटे-मोटे कोई भी नियम-पच्चक्खाण माँगते, आप बहुत ही ऋजुता के साथ तुरन्त करवा देते। ऋजुता इतनी गहरी थी कि कोई मांगलिक माँगने के लिए आता चाहे वह बालक हो या युवा या बुजुर्ग, कोई भी मांगलिक के लिए कहता तो फरमाने में बिल्कुल भी विलम्ब नहीं करते। एक भाई तो यहाँ तक बोला-'म.सा.! धन्य हैं आपको! इतनी बार मांगलिक सुनाने के बाद भी आपके चेहरे पर कोई शिकन के भाव तक नहीं हैं।' उपाध्यायश्री जी ने प्रत्युत्तर में फरमाया-'भाई! स्थानकवासी परम्परा में लोगों के जुड़ने का और श्रद्धाभाव की मजबूती का यही तो एक सम्बल है। यह भी नहीं देंगे तो रहेगा क्या?' अहो! कैसी धन्य भावना, कैसी ऋजुता...

(8) उपाध्यायश्री जी आहार करने के लिए विराजते, पर उन्होंने जीवन के अन्तिम समय तक किसी भी दिन, कभी भी अपने हाथ से लेकर नहीं खाया; जो सन्तों ने दे दिया खपत के अनुसार ले लिया, परन्तु हाथ से लेकर कभी नहीं खाया, ना कभी माँगा; जबकि बड़े सन्त थे, सर्वेसर्वा थे, चाहे हाथ से लेकर भी खाएँ तो कोई बाधा वाली बात नहीं, परन्तु अन्तिम समय तक बहुत ऋजुता और लघुता में ही जीवन जीया।

(9) उनकी ऋजुता अच्छे-अच्छे लोगों को श्रद्धा से नत कर देती थी। विहार के क्रम में एक बार जलगाँव चातुर्मास की तरफ आगे बढ़ रहे थे। नीमच के अन्दर श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. जो अब तक साथ में थे, वे बुजुर्ग सन्तों को लेकर आचार्य श्री की आज्ञानुसार मारवाड़ की तरफ पुनः लौटने को तत्पर हुए और श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. के स्थान पर श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा., उपाध्यायश्री की सेवा में रहे, उस समय उपाध्यायश्री ने ऋजुता का परिचय देते हुए कहा-'भाई! इञ्जन (श्री गौतममुनि जी के स्थान पर श्री प्रमोदमुनि जी) बदल गया। कितनी सहजता, कितनी

लघुता अर्थात् अपने आप को कभी बड़ा नहीं माना, हमेशा लघुता के भावों में ही जीते रहे।

(10) उपाध्यायश्री जी जीर्ण वस्त्रों का भी पूर्ण उपयोग करने में कलाकुशल थे। एक बार वे जीर्ण वस्त्रों को सिल रहे थे तो एक भाई आया और उनकी ऐसी सदुपयोग भरी कलाकुशलता को देखकर कहने लगा— 'भगवन्त! धन्य है आपको!' 'आप असार में भी सार निकाल रहे हैं' और हम सार (मानव जीवन) से भी सार नहीं निकाल पा रहे।

कैसे कर्मयोगी महापुरुष, जिनका किया गया प्रत्येक कार्य भी एक विशेष प्रेरणा का आयाम बन जाता है।

(11) आचार्य श्री हस्ती ने अपने पश्चात् संघ की व्यवस्था दो महापुरुषों को आचार्य एवं उपाध्याय पद पर विभूषित कर आगे बढ़ाई, परन्तु इस सर्वमान्य निर्णय में संघ एक विशेष ऊहापोह की स्थिति में पहुँच गया कि—

'दोनों महापुरुषों में से पहले जय किस महापुरुष की बोली जाए? एक और उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म.सा. दीक्षा और वय-दोनों में अग्रज थे तो वहीं आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. पद की अपेक्षा बड़े।'

ऐसी ऊहापोह की स्थिति को देखते हुए उपाध्याय भगवन्त श्री मानचन्द्रजी म.सा. ने 'आचार्य पद के चादर महोत्सव' में स्वयं खड़े होकर अग्रांकित बात कही जिससे कि यह स्थिति सर्वदा के लिए समाप्त हो गई; उन्होंने कहा— 'मैं आज से संघ को आदेश देते हुए यह कहता हूँ कि संघ में सदैव पहले आचार्य की जय बोली जाएगी, उसके पश्चात् सन्तों की।'

कैसा सुन्दर-सर्वोपयुक्त-सर्वमान्य समाधान एक महापुरुष का, जिसने भी यह सुना वह संघ में ऐसे निःस्पृह और निर्मोही सन्तरत्न को पाकर स्वयं को और संघ को धन्यातिधन्य समझ रहा था।

कोटि-कोटि वन्दना हमारी है

श्री धर्मचन्द्र जैन

माँ छोटा के नन्द, कुल अचल के चन्द,
तेरी समता, सरलता, सजगता निराली है।

शान्त-दान्त गुणवान, मोहक है मुस्कान।
दया पालो भाग्यवान, बोली मीठी प्यारी है।

अनुकूल प्रतिकूल सब में आनन्द माने,
संयम में रत रहे, साधना निखारी है।

उपाध्याय पद शोभे, ज्ञान क्रिया तव शोभे,
जोधाना शहर में देखो, शोभा अति प्यारी है।

ऐसे मानचन्द्र जी के चरण कमल माँही
पल-पल कोटि-कोटि, वन्दना हमारी है।।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक
शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

आदर्श सन्त मुनि 'मानचन्द्र'

श्री सुमित जैन

आचार्य हस्ती शिष्य, पण्डित रत्न मुनि मान थे।
आचार्य हीरा शासन सहयोगी, उपाध्याय श्री मान थे।।
प्रवचन शैली अद्भुत, संघ के नूर गुरु मान थे।
जन हितैषी समाज सुधारक, महान गुरुवर मान थे।।
सरल मिष्टभाषी वाणी भूषण, मुनिवर मान थे।
ज्ञान क्रिया के अद्भुत संगम, पण्डित रत्न श्री मान थे।।
जिनशासन की शान, आदर्श सन्त, रत्न मुनि मान थे।
उपाध्याय पद गौरवान्वित कर, चमके गुरुवर मान थे।।
गुरु का जीवन देखो, त्याग सेवा प्रतीक, गुरु मान थे।
शासन सेवी महान त्यागी, अनुपम सन्त गुरु मान थे।।
जैनधर्म को खूब दिपाया, अमर रहे गुरु मान जी।
सादा जीवन उच्च विचारों के धनी हमारे गुरु मान जी।।

-202, भगवन्तम् हॉस्टल, डी.आर.डी.ओ.
कॉम्प्लेक्स, तिमारपुर, लखनऊ रोड़, दिल्ली

आचरण की सम्यक् विधि से आत्मोत्थान

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर में 14 नवम्बर, 2019 को तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने प्रवचन में असंयम को सारे दुःखों की जड़ बताते हुए अपने भीतर झाँकने की प्रभावी प्रेरणा की। प्रवचन का आलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है। **-सम्पादक**

स्वधर्मी बन्धुओं!

आज आपके सहकार से और गुरु भगवन्तों की कृपा से स्वाध्याय का सुन्दर अवसर उपलब्ध हो रहा है। कल दोपहर में तैतीस बोल की वाचना चल रही थी। स्वाध्याय में उत्तराध्ययन सूत्र के 31वें अध्ययन की पहली गाथा है-

चरणविहिं पवक्खामि, जीवस्स उ सुहावहं।

जं चरित्ता बहु जीवा, तिण्णा संसारसागरं।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन 31, गाथा 1

गाथा में चलने की विधि बतलायी है। विधि से चलने वाले के जीवन में कोई कठिनाई नहीं आती। अन्यथा, संसार में कदम-कदम पर कठिनाइयाँ हैं। संसार से पार जाने के मार्ग को सुखे-सुखे चलकर बहुत सारे जीव संसार से पार हो गए हैं।

अध्यात्म में ज्ञान, दर्शन और चारित्र्य ये तीन चीजें चाहिए। चारित्र्य में तप समाविष्ट हो जाता है। कहीं चार में कहा, कहीं तीन में कह दिया, यह कथन करने की शैली है। कथन की इस शैली में एक, दो या तीन नहीं, संख्यात-असंख्यात भेद कर सकते हैं।

हमारा जीवन बहुत छोटा-सा है। ज्ञान क्या? जाने हुए का आदर करना ज्ञान है। दर्शन क्या? सुने हुए में आस्था करना, विश्वास करना, श्रद्धा करना दर्शन है। चारित्र्य क्या? चारित्र्य में मिले हुए का सदुपयोग करना होता है। जानकारी जीवन बन जाए तो वह ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य मुक्ति प्रदाता बन जाए तो चरण विधि में वे ज्ञानाचार है, दर्शनाचार है और चारित्र्याचार भी हैं।

तपाचार-वीर्याचार उपलक्षण से इसमें समाविष्ट हैं।

आज 14 नवम्बर है। आज के दिन को बाल-दिवस के रूप में मनाया जाता है। पण्डित जवाहरलालजी नेहरू का जन्म-दिवस बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। पण्डित जवाहरलालजी के पिता थे मोतीलालजी नेहरू। उनके लिए अच्छा दृष्टान्त आया। आप में से कम ही लोगों ने वह दृष्टान्त सुना होगा।

सबसे पहले हमारा अपना स्वाभिमान जगे। अंग्रेज तो चले गये, अंग्रेजी छा गई। हमें किसी वाणी से द्वेष नहीं है। वाणी चाहे जो हो, किसी भाषा से द्वेष नहीं होना चाहिए। भगवान के चौंतीस अतिशय होते हैं, साथ ही उनके पैतीस अतिशय भी होते हैं। भगवान ने अर्द्धमागधी में देशना दी, पर वह वाणी सुनने वाले के कान में उसकी परिचित भाषा में सुनाई पड़ती थी। भगवान की वाणी सभी समझते थे। आज भी संसद में चाहे हिन्दी में बोलो या अंग्रेजी में अथवा तमिल-तैलगू-मलयालम में, हर सांसद यन्त्र की सहायता से अपनी भाषा में सुन सकता है। भगवान का तो अतिशय था, भगवान अर्द्धमागधी भाषा में फरमाते, सुनने वाला उसे अपनी भाषा में सुनता था।

आज अंग्रेजों का शासन भले ही नहीं है, लेकिन अंग्रेजी की गुलामी तो है। भारतीय संस्कृति त्याग-प्रधान है तो पाश्चात्य संस्कृति भोग प्रधान। आज पश्चिम के लोग भले ही अपनी संस्कृति से हार चुके हैं, वे भारत की संस्कृति अपनाना चाहते हैं। हमारे देश के अधिकांश लोग क्या चाहते हैं? भारतीय संस्कृति में कई हैं जो पाश्चात्य संस्कृति को ज़्यादा महत्त्व देते हैं। ऐसे

लोगों के लिए तो यही कहा जा सकता है- 'देखा-देखी साजे जोग, छीजे काया बढ़े रोग।' किसी ने ज़रा-सा हेयर कटिंग में बदलाव किया या शर्ट की कॉलर कभी लम्बी-कभी छोटी की तो देखा-देखी कटिंग और कॉलर रखवाने की होड-सी लग गई। कभी कपड़ों की डिजाइन में बदलाव आता है तो कभी चलने के तरीके में।

अपनी बात चल रही थी, मोतीलालजी नेहरू को लेकर। वे बड़े वकील थे। पत्नी के सामने पति की हत्या हो गई। कोई पुष्ट प्रमाण नहीं, इसलिए नीचे की अदालतों में मुल्ज़िम बरी होता गया। प्रीवि कौंसिल में केस गया। भारत में जैसे सुप्रीम कोर्ट है, इंग्लैण्ड में प्रीवि कौंसिल। उस बहिन ने मोतीलालजी नेहरू को वकील बनाया। बहिन पैसे वाली थी, इसलिए मोतीलालजी नेहरू जैसे बड़े वकील को किया।

केस लन्दन की अदालत में था। मोतीलालजी नेहरू लन्दन पहुँचे। उनके खाने की, ठहरने की बराबर व्यवस्था की गई। मोतीलालजी नेहरू प्रीवि कौंसिल पहुँचे, पर एक शब्द नहीं बोला। लोगों ने भी यह कहना शुरू कर दिया कि गुलाम देश का वकील क्या तो बहस करेगा, क्या बोलेगा? मोतीलालजी नज़र नीची किये बैठे रहे।

मर्डर किया तो किसने? न कोई गवाह न कोई सबूत। कोर्ट ने सबूतों के एवं गवाहों के अभाव में केस खारिज़ कर दिया। भारतीय विद्या लम्बे समय से विश्व को प्रकाशित करती आ रही है, उसी के प्रतीक एकदम शान्त रहे। उस महिला का सब्र भी टूट रहा था। इतना खर्चा किया, पर मोतीलालजी टस से मस नहीं हुए।

जिस व्यक्ति ने हत्या की, वह प्रीवि कौंसिल के कठघरे में खड़ा था। मोतीलालजी नेहरू कठघरे में खड़े व्यक्ति के पास गए, उसे गले लगाया, बधाई दी और कहा- 'तुम्हें भगवान का शुक्र गुज़ार होना चाहिए, जो इस बार तुम बच गए। आइन्दा कभी ऐसा गुनाह मत करना।

सब लोग सकते में थे-अरे, ये भी तो अपराधी से मिले हुए हैं। हर्षोन्माद में उस व्यक्ति ने कठघरे में खड़े-खड़े कहा- "मैं इतना पागल थोड़े ही हूँ, जो दुबारा ऐसा करूँगा।"

मोतीलाल नेहरू बोले- "जज साहब! मुल्ज़िम ने स्वयं अपना गुनाह कबूल कर लिया है।" एक वाक्य से मुल्ज़िम फँस गया।

हमें गौरव होना चाहिए भारतीय संस्कृति का, जिसने मानवता की महिमा वाली संस्कृति का बोध जगाया।

आजा चाचा नेहरू का जन्म दिन है। चर्चिल ने नेहरूजी से पूछा- "आप हमारी जेलों में कितने साल रहे?" नेहरूजी ने कहा- "चौदह साल।"

चर्चिल ने पुनः प्रश्न किया- "इतने वर्षों में आपके मन में हमारे प्रति घृणा तो रही होगी।"

नेहरूजी ने कहा- "नहीं! हमारे नेता ने दो ही बातें सिखायी है- किसी से डरो मत और किसी से घृणा करो मत।"

कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य में लिखा है- 'संक्षेप एव महात्मनो निकषोपलः।' संक्षेप में कहना बड़े लोगों की कसौटी का पत्थर है। यह बड़े लोगों की पहिचान है। गुरु हस्ती के शब्द कितने नपे-तुले होते थे।

एक शब्द भी बिना प्रयोजन के नहीं बोलना, ऐसा जिनका दृढ़ संकल्प होता है उनका बोलना सार्थक है। कुछ मत सीखो, सीखो सबसे पहले मन का दृढ़ निश्चय करना।

आज के अतीत की स्मृति है-जयमलजी की दीक्षा।

कार्यम् वा साधयेयम् देहं वा पातयेयम्

मैं कार्य सिद्ध करूँगा, भले ही मर जाऊँगा। तो सबसे पहले दृढ़ निश्चय करो। चलने की विधि इसी से आयेगी। जयमलजी 22 साल 2 महीना 2 दिन की अवस्था में मेड़ता गए। वे गए तो सामान लेने, धर्म का कोई प्रयोजन नहीं था। इतने समय तक उन्हें संयोग नहीं

मिला। लाम्बिया गाँव जो जैतारण के पास है, वहाँ कई सन्त-सती आए होंगे, पर उनको सान्निध्य नहीं मिला। मेड़ता में उन्हें संयोग मिला आचार्य श्री भूधरजी म.सा. का। कौन थे आचार्यश्री ?

जोधपुर दरबार के अन्तर्गत सिरीयारी के घाटों में डाकुओं को पकड़ने गए भूधरजी ने जब ऊँटनी की गर्दन पर वार किया तो गर्दन लटकती देखी। यह देखकर उन्हें वैराग्य आ गया। भूधरजी ने मृत्यु देखी, अकाल मृत्यु, ऊँटनी को तड़फते हुए, मरते हुए देखा और वे जग गए। भूधरजी ने 55 साल की उम्र में दीक्षा ली। पचोले-पचोले पारणक की उत्कृष्ट साधना की। रघुनाथजी ने कैसे दीक्षा ली? उन्हें कहा गया-जा, चला जा भूधरजी के पास। पूज्य श्री जयमलजी और पूज्य श्री रघुनाथजी म.सा. की दीक्षा 1787 में हुई। जीवन के किसी भी क्षण में वैराग्य उभर सकता है। संसार में रहकर प्राणी संसार तज सकता है। भगवान चलने की विधि बता रहे हैं। भूधरजी के जीवन में चलने की विधि देखी जा सकती है।

हम जो साधना कर रहे हैं उसमें आगे बढ़ने की जरूरत है। हम साधना को तेजस्वी बना सकते हैं। जरूरत है गहराई में उतरने की। जानकारी का आदर करें, चलने की विधि सीखें।

चरण विधि कैसी? सेठ सुदर्शन का आख्यान चल रहा था। मेड़ता में आचार्य श्री भूधरजी म.सा. का प्रवचन जयमलजी ने सुना। प्रवचन में सहेली से सुदर्शन की बात सुन रानी उसके लिए विह्वल थी, उस पुरुष के लिए व्याकुल थी। एक तरफ प्रकृति तो दूसरी तरफ पुरुष।

शील रतन मोटो रतन, सब रत्नां री खान।

तीन लोक की सम्पदा, रही शील में आन।।

आप टी.वी. पर, पर्दे पर, मोबाइल पर जो कुछ देख रहे हैं, वह बाहर का सौन्दर्य है। आपके अन्दर अनन्त सौन्दर्य है। बाहर का सौन्दर्य देखने वालों को अन्दर के सौन्दर्य से वञ्चित रहना पड़ता है। आप यहाँ एक टी.वी. से जुड़ते हैं तो उस अनन्त से वञ्चित रह

जाते हैं।

उत्तराध्ययन सूत्र के इकतीसवें अध्ययन की दूसरी गाथा है-

एगओ विरइं कुज्जा, एगओ य पवत्तणं।

असंजमे नियत्तिं च, संजमे य पवत्तणं।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन 31, गाथा 2

एक से निवृत्ति हो, एक में प्रवृत्ति। असंयम छोड़ो, संयम अपनाओ। असंयम इन्द्रियों का हो, मन का हो, वचन का हो, काया का हो, वह चाहे दस प्रकार का हो, चाहे सतरह प्रकार का, जितने भी असंयम हैं, वे सब दुःख के कारण हैं।

माता-पिता और गुरु भगवन्त हित चाहते हैं, पर सबसे बड़े हितैषी तो भगवान हैं। भगवान के पास किसी का कोई स्वार्थ नहीं। भगवान एकान्त हितैषी हैं, हितकारी हैं। भगवान की हितकारिता में रती भर अहित नहीं, बिगाड़ नहीं। दशवैकालिक सूत्र के चौथे अध्ययन में इस प्रकार की श्रेष्ठ प्रज्ञा कही गई है।

आपके संघ के नाम में भी रत्न हितैषी श्रावक संघ है। श्रावक संघ तो फिर भी उन्नीस-इक्कीस हो सकता है, पर हितैषी शब्द से भीतर में एक भाव आयेगा तो श्रद्धा बढ़ती जाएगी। क्यों? भगवान सबका हित चाहते हैं। भगवान का हित कल्याण, सुख शान्ति और आनन्द देने वाला है।

इन्दौर का एक जैनेतर भाई आता था। उसे पहले एक लाख रुपये मानो एक हजार लगते थे। रुपये आए और खत्म। जुआँ खेलना, शराब पीना, वेश्या के यहाँ जाने में सारा धन खर्च हो जाता। अब, यहाँ आने के बाद एक हजार रुपये एक लाख रुपये जैसे हो गए। क्यों? तो पहले खर्चा था, अब खर्चा नहीं। बढ़िया-से-बढ़िया रोटी, घी, दूध में चूर-चूर कर आराम से खाओ तो भी उतना खर्च नहीं जितना पहले होता था। यहाँ आने के बाद न वेश्या के यहाँ जाना, न शराब पीना और न ही कोई व्यसन। सन्तों के यहाँ आने पर व्यसन का कोई काम नहीं। बाहर का लाभ तो पैसे का है ही, भीतर का

लाभ सम्यग्दर्शन की प्राप्ति अलग से। शालिभद्र का उदाहरण आपके ध्यान में है।

भीतर छोड़ बाहर को भागे, बाहर मिले ना भीतर पावे। बाहर छोड़ भीतर को आवे, भीतर मिले व बाहर पावे।।

यह जीव जब तक मोक्ष नहीं जायेगा तब तक चलना तो पड़ेगा। उत्तराध्ययन सूत्र के 31वें अध्ययन की सतरहवीं गाथा कह रही है-

खेतं वत्थुं हिरण्यं च, पसवो दास-पोरुसं।

चत्तारि काम-खंधाणि, तत्थ से उववज्जइ।।

आचार्य हस्ती ने कमाल कर

डाला

डॉ. दिलीप धींग

संयम की चेतना का हुआ उजाला।
आचार्य हस्ती ने कमाल कर डाला।।
कोई तनाव में जी रहा, कोई मुटाव में।
कोई विभाव में जी रहा, कोई अभाव में।
सामायिक-स्वाध्याय का करके आह्वान,
सारे सवाल को हल कर डाला।

आचार्य हस्ती ने कमाल कर डाला।।

कहीं ज्ञान कोरा, कहीं क्रिया का ढिंढोरा।
एकांगी दृष्टिकोण को उन्होंने झकझोरा।
कथनी-करनी में भेद रक्खा नहीं,
आप्त-वचनों को आचरण में ढाला।

आचार्य हस्ती ने कमाल कर डाला।।

भेदभाव से परे सबको अपनाया।
नागराज ने भी आशीष पाया।
दया के देवता, करुणा के सागर ने,
सबको पिलाया अमृत का प्याला।

आचार्य हस्ती ने कमाल कर डाला।।

व्यथित हुए देख, लड़ते भाई-भाई!
सच्चे प्रेम की बाँसुरी बजाई।
मैत्री, एकता के सन्देशवाहक,

जितना चल रहे हैं उससे थोड़ा और आगे बढ़ने का प्रयास करें। आपके सहयोग से हमारा स्वाध्याय चल रहा है। तैंतीस बोल में पहले बोले-असंयम। असंयम मन का, वचन का, काया का उसे छोड़ना है। दूसरे बोले-दो प्रकार के बन्ध। एक राग, एक द्वेष।

आप देखने की कोशिश करें। आप अपनी चेतना जगाइये। असंयम सारे दुःखों का कारण है। दुःखों का मूल है-असंयम।

मोती भिन्न-भिन्न, अभिन्न माला।

आचार्य हस्ती ने कमाल कर डाला।।

जमाना जब प्रपञ्च में पड़ा था।
वह युग-मनीषी निर्विवाद खड़ा था।
अदभुत औदार्य, गुण-दृष्टि अपनाकर,
सारे मनो-मालिन्य को धो डाला।

आचार्य हस्ती ने कमाल कर डाला।।

साधक समय के, समय के प्रहरी।
आज की, कल की, चिन्ता थी गहरी।
अतीत की प्रेरणा, आगत का सृजन,
इतिहास पुरुष ने इतिहास रच डाला।

आचार्य हस्ती ने कमाल कर डाला।।

आध्यात्मिक शक्तियों के आलोक-पुञ्ज थे।
अमित सुख-शान्ति के सघन-कुञ्ज थे।
कौन ऐसा जो न हुआ आलोकित,
उनके आभामण्डल में नहाने वाला।

आचार्य हस्ती ने कमाल कर डाला।।

भेद-विज्ञान को समझा था, जिया था।
सहज अदभुत संधारा लिया था।
अध्यात्म-पथ के अमर पथिक ने,
छिन्न-भिन्न कर डाला कर्मों का जाला।

आचार्य हस्ती ने कमाल कर डाला।।

-सुगन हाउस, 18, रामानुज अख्यर स्ट्रीट,
साहूकारपेट, चेन्नई-600001

मोहभाव मिटाओ : आनन्द बढ़ाओ

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. द्वारा 20 नवम्बर, 2019 को जोधपुर के समर्थ नगर स्थित गोलेच्छा भवन में फरमाये प्रवचन का आलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया।
-सम्पादक

धर्म जिज्ञासु बन्धुओं!

परम प्रसन्नता की प्राप्ति के लिए पर-पदार्थों का त्याग परम आवश्यक है। पर-पदार्थ क्या? घर-परिवार, धन-सम्पदा, ज़मीन-ज़ायदाद और यहाँ तक कि यह शरीर भी अपना नहीं है। संसार का हर पदार्थ पराया है, त्याज्य है। जब सब पदार्थ पराए हैं तो अपना क्या? अपनी है आत्मा। क्यों? तो हम सबकी आत्मा में सहजानन्द विद्यमान है। यह जो अनन्त आनन्द आत्मा में विद्यमान है, सबके भीतर में है और वहीं से इसे प्रकट करना होता है।

मेरापन मिटाओ, आनन्द बढ़ाओ। संसार में जितने भी संसारी जीव हैं, वे सब दुःखी हैं। दुःख का कारण है-मोहभाव। साता-असाता की बात नहीं, किन्तु मोह-भाव की बात पर यदि विचार करें तो लगेगा जितना-जितना मोहभाव कम है, उतनी-उतनी शान्ति है, सुख है, आनन्द है। मतलब क्या? जिसका जितना मोहभाव कम है उतना ही वह कम दुःखी है। भीतर में रही आसक्ति मनुष्य को दुःखी बनाती है। आपको दुःख नहीं चाहिए तो आसक्ति कम करते जाएँ।

उत्तराध्ययन सूत्र के बत्तीसवें अध्ययन में गाथा कहती है-दुक्खं हयं जस्स ण होइ मोहो। (32/8)

जिन्हें मोह नहीं होता उनके दुःख क्षय होते जाते हैं। सभी जीव सुख चाहते हैं, दुःख कोई नहीं चाहता। जब सुख की सबकी चाहना है तो फिर दुःख से बचते क्यों नहीं? कारण है-मोहभाव। मोहभाव है, तो दुःख है। आप चाहे जितने उपाय कर लें मोहभाव है तो दुःख

रहेगा ही। दुःख दूर करने का एक उपाय है-आसक्ति का त्याग। ज्यों-ज्यों आदमी आसक्ति बढ़ाता है त्यों-त्यों जन्म-मरण का चक्र चलता रहता है।

बन्धुओं! जीव चार गतियों में भ्रमण करता है तो जीव मोक्ष में भी जाता है। कभी जीव नरक में गया, कभी तिर्यञ्च में, कभी मनुष्य गति में गया तो कभी देवलोक में। मनुष्य की गति आयुष्य बन्ध पर निर्भर है। किसी गति में बाद में जीव जायेगा, आयुष्य का बन्ध पहले होगा। मोक्ष में जाने का कार्य कहाँ होता है? मोक्ष बाद में जायेगा। मोक्ष में जाने के कारण हैं-सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यक् चारित्र और सम्यक् तप। भाव के अनुसार भव मिलता है।

मुझे चार गति में जाना ही नहीं। यह भावना भीतर में उमड़नी चाहिए। मुझे तो मोक्ष जाना है। चार गतियों में तो यह जीव अनन्त बार चला गया। कोई ऐसा आकाश प्रदेश नहीं बचा जहाँ अनन्त-अनन्त बार जन्म-मरण नहीं किया। किसी आदमी को जोधपुर ही जोधपुर में घूमना पड़े तो.....? आदमी एक जगह रहेगा तो कँटाल जायेगा। सन्त भी एक जगह रहने पर कँटाल जाता है। भगवान हमें कारण और निवारण दोनों बता रहे हैं। कारण है-मोह और निवारण है-ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप। हमारी ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप में गति-प्रगति होगी तो वह आसक्ति तोड़ने से मिलेगी।

भगवान कह रहे हैं-दुःख का कारण आसक्ति है।

जे केइं सरीरे सत्ता, वण्णे रूवे य सव्वसो।

मणसा काय वक्केणं, सव्वे ते दुक्ख संभवा।।

शरीर में आसक्ति है, पाँचों इन्द्रियों में आसक्ति है तो दुःख ही दुःख है। आसक्ति का कारण है-मन, वचन और काया। आसक्ति से सारे दुःख उत्पन्न हो रहे हैं। एक आसक्त है और एक आसक्त नहीं तो क्या दोनों समान होंगे? एक में रागभाव है, एक में वीतराग भाव तो दोनों में सुख-दुःख का अन्तर होगा या नहीं?

आप अपने जीवन को देखें क्या स्थिति है? मोह जड़ है या चेतन? मोह ने आत्मा को पकड़ा या आत्मा ने मोह को? संसार ने आपको पकड़ा है या आपने संसार को पकड़ा है? आप प्रश्न करें तो लगेगा कि यह जीवन एकमात्र साधना करने के लिए है। सुखी कौन?

न वि सुही देवता देवलोए, न वि सुखी पुढवीपईराया।
न वि सुही सेट्टी सेणावई य, एगंत सुही मुणी वीयरगो।

न देवता सुखी हैं न पृथ्वीपति राजा। सेठ-साहूकार सुखी नहीं है और न ही सेनापति। न करोड़पति सुखी है, न अरबपति। वीतराग मुनि ही एकान्त सुखी है। जिसके पास खूब जमीन-जायदाद है तो क्या वह सुखी है? व्यक्ति में जितनी-जितनी महत्वाकांक्षा होगी उसकी आसक्ति बढ़ती जाएगी। फिर-हाय धन थोड़ो..... दिन उगे मोड़ो। और भंवरो करे भन-भन..... आदमी करे धन-धन।

महत्वाकांक्षा होने पर राग में प्रवृत्ति की इच्छा है निवृत्ति की नहीं। किसी के पास पैसा बढ़ा तो क्या उसका सुख बढ़ रहा है? आपका धनवान के प्रति अहोभाव होता है या दीक्षा लेने वाले के प्रति? संयम लेने वाले के प्रति ज़्यादा अहोभाव आता है। ठीक भी है। पैसे वालों के प्रति जीरो झुकाव कब होगा? त्याग और त्यागियों के प्रति अहोभाव आना ही चाहिए।

आचारांग सूत्र में कहा-एस वीरे पसंसिए जे बद्धे पडिसोयए। वे जीव प्रसन्न हैं जो बन्धन तोड़ते हैं। बन्धन घर-परिवार का हो या सत्ता-सम्पत्ति का अथवा राग-द्वेष का बन्धन ही क्यों न हो, बन्धन तोड़े बिना जीव मोक्ष-मार्ग में आगे नहीं बढ़ सकता।

बन्धन, बन्धन है। बन्धन, बन्धन तो लगे। सबसे

पहले बन्धन को जानने की बात है। पहले जानें, जानने पर बन्धन छूटेगा। एक नगर में ज्ञानी गुरु भगवन्त का पधारना हुआ। नगरवासियों को पता चला तो वे दर्शन-वन्दन के लिए जाने लगे। एक सेठजी के घर एक तोता जो पिञ्जरे में बन्द था, वह सेठजी से पूछने लगा-“आप कहाँ जा रहे हो?”

सेठ ने कहा-“नगर में ज्ञानी गुरु भगवन्त पधारे हैं उनके दर्शनार्थ जा रहा हूँ।”

तोता बोला-“आप जा रहे हो तो मेरा एक प्रश्न पूछकर आना।”

सेठजी ने कहा-“तेरा क्या प्रश्न है?”

तोता बोला-“बन्धन से मुक्ति का क्या उपाय है? पूछकर आना।”

सेठजी गुरु भगवन्त के यहाँ पहुँचे। व्याख्यान सुना व्याख्यान सुनकर सारे लोग तो चले गए। सेठजी ने गुरु भगवन्त से पूछा-“मुक्ति का उपाय क्या?”

ज्ञानी गुरु भगवन्त समझ गए कि यह प्रश्न सेठजी का तो नहीं है। प्रश्न किसी दूसरे का है।

महाराज ने प्रश्न सुना और प्रश्न सुनते ही महाराज एक तरफ मुड़ गए मानो उनकी तबीयत खराब हो गई।

महाराज ने प्रश्न का जवाब तो नहीं दिया, लेकिन प्रश्न सुनकर वे लुढ़क गए।

सेठजी घर पहुँचे तो तोते ने पूछा-“आपने मेरा प्रश्न पूछा या नहीं? पूछा तो क्या जवाब लाए?”

सेठजी ने कहा-“मैंने प्रश्न पूछा। प्रश्न सुनकर महाराज तो पाट पर लुढ़क गए।”

तोता समझ गया कि महाराज ने उपाय बता दिया है। तोते ने भी वैसा ही किया। वह गर्दन झुकाकर लुढ़कने जैसी स्थिति बनाकर पड़ा रहा।

सेठ तोते को दाना-पानी देना चाह रहे थे, परन्तु उसको निदाल अवस्था में देखा तो पिञ्जरे का दरवाजा खोला। दरवाजा खुलते ही तोता फुर से उड़ गया।

तोता क्यों उड़ा? उसे बन्धन प्रिय नहीं था। तोते को बन्धन, बन्धन रूप लगा। सेठजी को लगा या नहीं?

आसक्ति के कारण एक करोड़ रुपये हैं तो वह दो करोड़ करना चाहेगा। एक प्लॉट है तो दूसरे प्लॉट की इच्छा करेगा। घर में बच्चा है तो भी दूसरे बच्चे की चाहना होगी। बस, यही कारण है आदमी को और-और चाहिए।

आपको बन्धन चाहिए या मुक्ति? आप बोल नहीं रहे हैं। बारहवाँ गुणस्थान क्षीण मोहनीय का है। तेरहवाँ गुणस्थान सयोगी केवली और चौदहवाँ गुणस्थान अयोगी केवली गुणस्थान का है।

आप और हम राग-द्वेष, मोह, आसक्ति कम कर दें तो हम मोक्ष-मार्ग में गति कर सकेंगे। जिसका जितना-जितना मोहभाव घटेगा उतना-उतना भीतर का आनन्द बढ़ेगा। गुरु हस्ती ने ठीक ही कहा-
मेरे अन्तर भया प्रकाश, नहीं अब मुझे किसी की आश।
काल अनन्त रूला भव वन में, बंधा मोह के पाश।

काम, क्रोध, मद, लोभ भाव से, बना जगत् का दास।।
मोह मिथ्यात्व की गाँठ गले तब, होवे ज्ञान प्रकाश।
'गजमुनि' देखे अलख रूप को, फिर न किसी की आश।।

बन्धुओं! साधक जीवन में संकल्प करना है कि मुझे निर्मोही बनना है। कई लोगों को लगता है कि मोह कम हो जाएगा तो फिर घर-परिवार का काम कैसे चलेगा? ऐसा सोचने वाला प्रेम और मोह के भेद से अनभिज्ञ होता है। मोहभाव घटता है तो प्रेमभाव नहीं घटता, बल्कि आत्मीयता बढ़ती है, प्रेमभाव बढ़ता है।

मोह घटने पर सात्त्विक प्रेम बढ़ता है। मोहभाव घटाना ही साधना है। घर-परिवार हो या धन-सम्पत्ति, हर वस्तु के प्रति अगर आसक्ति कम होती है तो उसकी साधना बढ़ती रहती है। आप सुज्ञ हैं, विज्ञ हैं, जिनवाणी सुनने वाले हैं तो वीतराग-वाणी को आत्मसात् करें। इसी मंगल मनीषा के साथ.....

महावीर के सिद्धान्तों को, गर जो तुम अपनाओगे

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

महावीर के सिद्धान्तों को, गर जो तुम अपनाओगे,
रोग, शोक सब दूर हटेंगे, परमानन्द को पाओगे।

महावीर के सिद्धान्तों को.....॥ टेरे॥

पूर्ण विधि से करो सामायिक और प्रतिक्रमण भी भाई,
बी.पी., शूगर कभी न होगी, साता-उपजे मनमांही।
यह साधना योग भरी है, डॉक्टरों से बच जाओगे,

महावीर के सिद्धान्तों को.....॥1॥

सोना, उठना रखो समय पर,
खान-पान का ध्यान रखो,
सात्त्विक भोजन का आहार हो,
गरिष्ठ वस्तु से दूर रहो।
गर जीने की कला सीख ली,
नहीं तनाव में आओगे,

महावीर के सिद्धान्तों को.....॥2॥

त्याग-तपस्या हो जीवन में, स्वस्थ जीवन आधार है,
तन में साता, मन में साता, रुक जाते सभी विकार हैं।
धैर्य-बुद्धि से करो काम सब, अच्छे सुफल पाओगे,

महावीर के सिद्धान्तों को.....॥3॥

वैज्ञानिक है धर्म हमारा, प्रभु का बड़ा उपकार है,
आरोग्यमय जीवन जीने का, प्रभु ने दिया उपहार है।
रुक जायेगी भटकन अपनी, जिन घर में जो आओगे,

महावीर के सिद्धान्तों को.....॥4॥

जैन धर्म के नियमों से,

गर जीना हमने सीख लिया,
क्रोध, कषाय को दूर भगाया,
तो समझो गढ़ जीत लिया।

गर मन में है सच्ची श्रद्धा, जीवन सफल बनाओगे,

महावीर के सिद्धान्तों को.....॥5॥

-जनता साड़ी सेण्टर, फरिश्ता कॉम्प्लेक्स,
स्टेशन रोड, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

शाकाहार और प्राणिरक्षा के क्षेत्र में आचार्य श्री हस्ती का योगदान

डॉ. दिलीप धींग

जैनधर्म अहिंसा प्रधान धर्म है। अहिंसा के अनेकानेक आयाम हैं। जैनदर्शन में अहिंसा के सभी आयामों और अर्थों को अनेक तरीकों से स्पर्श किया गया है, उन पर विशद विमर्श किया गया है तथा आचरण के धरातल पर जीवन को अधिकाधिक अहिंसामय बनाने का उपयोगी मार्गदर्शन दिया गया है।

अहिंसा का पहला चरण

अहिंसामय आचरण के अनेक चरण होते हैं। अहिंसामय आचरण के आरम्भिक चरण के रूप में मानव मात्र से यह आशा और अपील की जाती है कि वह अपना खान-पान, रहन-सहन और व्यवसाय ऐसे रखें, जिससे मूक, निरीह और निर्दोष प्राणियों का कत्ल नहीं हो। यह अच्छा और उचित अहिंसक आचरण सबके लिए सहज अनुपालनीय है। यह मानवीय और सार्वभौमिक आचरण सदैव सबके लिए हितकारी है। अहिंसा का यह शुरूआती और न्यूनतम आचरण हर मानव को श्रेष्ठ और करुणावान् मानव बनाने के साथ ही दुनिया में प्रदूषण-मुक्ति, सहअस्तित्व और शान्ति की बहाली के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

अहिंसक आचरण के इस प्रारम्भिक चरण को सरल शब्दों में शाकाहारी जीवन शैली कहा जाता है, जिसके अन्तर्गत शुद्ध सात्त्विक आहार के साथ प्राणियों की रक्षा, बेहतर स्वास्थ्य तथा अन्य अनगिनत फायदे जुड़े हुए हैं। यही वजह है कि जैनाचार्यों, जैन साधु-साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं ने हर कालखण्ड में अहिंसा, शाकाहार और प्राणिरक्षा के क्षेत्र में असाधारण और ऐतिहासिक कार्य किये, जिनके लाभ युग-युगान्तर तक समाज और देश को मिले और मिल रहे हैं। जैनाचार्यों और जैन समाज के इन कार्यों से समाज, संस्कृत और प्राकृत में समरसता और सौहार्द बना और

बढ़ा। अहिंसा और शाकाहार से जुड़े उनके प्रयासों और कार्यों का अनुकूल असर पूरे जीव-जगत पर हुआ तथा होता है।

उपकारी जीवन

जब हम जैन सन्त और अहिंसा की बात करते हैं तो उनका पूरा जीवन ही अहिंसा की विशिष्ट उपासना और अहिंसा के जीवन्त प्रचार-प्रसार से जुड़ा हुआ होता है। लेकिन यहाँ अहिंसा के शुरूआती चरण-शाकाहार और प्राणिरक्षा की चर्चा की जा रही है। शाकाहार-प्रचार और प्राणिरक्षा के क्षेत्र में विभिन्न कालखण्डों में अनेक जैनाचार्यों और जैन सन्तों के विशिष्ट और असाधारण सफल कार्यों और उपकारों के विवरण इतिहास के पन्नों पर दर्ज हैं।¹ इसी क्रम में यहाँ जैनाचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज के अहिंसा विषयक प्रयासों और कार्यों पर प्रकाश डाला जा रहा है।

आचार्य हस्ती का जीवन तथा उनके जीवन-कार्य बहुआयामी थे। उन्हें मुख्यतः सामायिक, स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक के रूप में जाना जाता है, लेकिन उनके जीवन के अन्य अनेक आयाम भी बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। उनके अन्य आयामों और अवदानों में जैन इतिहास की प्रस्तुति, विद्वत् निर्माण/प्रोत्साहन, एकता एवं सद्भाव की बढ़ोतरी आदि के साथ ही शाकाहार, जीवदया और प्राणिरक्षा के कार्य भी हैं। मनीषीप्रवर डॉ. धर्मचन्द्रजी जैन द्वारा सम्पादित उनके जीवनचरित 'नमो पुरिसवरगंधहृत्थीणं' में उनका बहुपक्षीय जीवन उजागर हुआ है।

प्रेरणा के प्रकाश स्तम्भ

आचार्य हस्ती केवल अहिंसा के आराधक ही नहीं, वरन् सकारात्मक अहिंसा और शाकाहार के प्रबल प्रचारक भी थे। उन्होंने शाकाहार के प्रचार-प्रसार के

साथ-साथ निरीह प्राणियों की हत्या के विरोध में भी समय-समय पर आवाज़ उठाई और सफलताएँ पाईं। अहिंसा के पक्ष में तथा हिंसा के विरोध में आवाज़ उठाने के लिए उन्होंने लोगों को भी प्रेरणाएँ दीं। अहिंसा और शाकाहार के प्रचार-प्रसार के लिए वे पहल और प्रयास करते हैं। दयामाता की आराधना के लिए वे लोगों का समर्थन और सहयोग भी प्राप्त करते हैं। उनका मानना था कि जैन श्रमणाचार में कई प्रकार की मर्यादाएँ होती हैं। गृहस्थ वर्ग धर्म-प्रचार और अहिंसा-प्रचार के लिए विशेष कार्य कर सकता है। अतः गृहस्थ वर्ग को छोटे-बड़े भेद भुलाकर मिलजुलकर हिंसा की खिलाफत तथा अहिंसा की खिदमत करनी चाहिये। आचार्य हस्ती के चुम्बकीय व्यक्तित्व, प्रेरक कृतित्व और प्रभावशाली उपदेशों से अनुप्रेरित होकर अनेक महानुभावों ने करुणा, शाकाहार, मानवसेवा, गोसेवा और जीवदया जैसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में विविध उल्लेखनीय कार्य किये तथा वर्तमान में भी वे कार्य कई रूपों में गतिमान हैं।

जैन सन्तों की विहार यात्राएँ समाज के लिए वरदान रूप होती हैं। वे अपने विचरण और प्रवास के दौरान जन सम्पर्क में आते हैं। विभिन्न धर्मों, वर्गों और समुदायों के व्यक्तियों से उनका सम्पर्क होता है। अवसर के अनुकूल वे लोगों को व्यक्तिशः या सामूहिक रूप में शाकाहार और व्यसनमुक्ति का सन्देश देते हैं। इस प्रकार व्यक्ति सुधार से समाज सुधार का कार्य जैन सन्तों के द्वारा किया जाता है। आचार्य हस्ती ने भी इस कार्य को पूरी सजगता और सक्रियता से अभियान की तरह किया। वे एक पहुँचे हुए साधक थे, इसलिए उनकी वाणी और प्रेरणा का असर होता था। उनके अहिंसा विषयक कुछ कार्यों को यहाँ दिया जा रहा है।

अहिंसा और सामाजिक सद्भाव

आचार्य हस्ती एक बार बड़ीसादड़ी में प्रवासरत थे। वहाँ एक जागीरदार रहता था, जो मद्य-मांस सेवन तथा शिकार करता था। आचार्यश्री ने उसको लक्ष्य करके कहा कि मनुष्य होकर भी जो धर्म के नाम पर या अपनी

आकांक्षा पूर्ति हेतु प्राणि-हत्या करते हैं, वे राक्षसी वृत्ति वाले हैं। आचार्यश्री के प्रभावशाली उपदेश से उस जागीरदार का हृदय परिवर्तित हो गया। उसने जीवहिंसा और मद्य-मांस का परित्याग कर दिया।² वहाँ उन्होंने एक हरिजन बन्धु को प्राणिहिंसा तथा मांस-भक्षण का त्याग करवाया।³ उज्जैन प्रवास एवं पाली और पीपाड़शहर के पावस-प्रवास के दौरान आचार्यश्री की प्रेरणा से अनेक हरिजन भाइयों ने मद्य-मांस का त्याग किया।⁴ उनकी प्रेरणा से मछुआरों ने भी मत्स्याखेट का त्याग कर दिया। इसके अलावा, आचार्यश्री ने अपनी प्रवचन सभा में जातिगत भेदभाव को अनुचित ठहराया और हरिजन बन्धुओं को आगे की पंक्ति में बिठाया।⁵ विक्रम सम्वत् 2046 के कोसाणा वर्षावास में वहाँ से जैन एवं जैनेतर अहिंसक समाज (वनमाली, विश्नोई, चौधरी समाज आदि) को सम्बोधित करते हुए आचार्यश्री ने ऐसे व्यसन मुक्त गाँव की प्रेरणा दी, जहाँ पशु-पक्षियों के प्रति भी दयाभाव कायम रहे।⁶ इस प्रकार उन्होंने शाकाहार को व्यापक अर्थ दिया और सामाजिक एकता को भी।

शाकाहार संकल्प

वर्तमान में शाकाहार के व्यापक प्रचार-प्रसार की बहुत आवश्यकता है। यह कार्य हर स्तर पर किया जाना चाहिये। आचार्य हस्ती ने अनेक प्रसंगों पर शाकाहारिता को आगे बढ़ाया। विक्रम सम्वत् 2027 (सन् 1971) में शोभाचार्य की दीक्षा-शताब्दी तथा स्वयं आचार्य हस्ती की दीक्षा अर्द्धशती के उपलक्ष्य में लोगों ने अनेक प्रकार के जीवन निर्माणकारी नियम, उपनियम ग्रहण किये, जिनके अन्तर्गत अनेक व्यक्तियों ने मद्य-मांस का त्याग करके हमेशा शाकाहारी रहने का व्रत ग्रहण किया। उक्त अवसर पर 686 व्यक्तियों ने प्रतिज्ञा-पत्र भरकर लिखित में मांस-त्याग का सत्संकल्प किया। लगभग इतने ही व्यक्तियों द्वारा मद्य-त्याग के प्रतिज्ञा-पत्र भी सौंपे गये।⁷ आचार्यश्री के जलगाँव चातुर्मास में भी एक व्यक्ति ने चमत्कारिक ढंग से मद्य-मांस त्याग का संकल्प किया।⁸

दक्षिण भारत प्रवास में भी उन्होंने अनेक स्थानों पर लोगों को मद्य-मांस वर्जन का उपदेश दिया। उनके उपदेशों से प्रेरित होकर अनेक व्यक्तियों ने मद्य-मांस का त्याग किया।⁹ सन्तों की प्रेरणा और शुभाशीष से इस प्रकार के प्रयासों को अधिक गतिशील बनाया जाना चाहिये।

नियमावलियों में अहिंसा

आचार्य हस्ती ने नागरिकों के जीवन में शाकाहार और सदाचार की प्रतिष्ठार्थ कई बार अनेक प्रकार की नियमावलियाँ बनाईं। उनके द्वारा बनाई हुई नियमावलियों में अन्य नियमों के अलावा शाकाहार और प्राणिरक्षा के नियम भी समाविष्ट रहते थे। जैसे-

1. प्राणियों के साथ भी प्रेम भरा व्यवहार करना। इच्छापूर्वक किसी त्रस जीव को नहीं मारना। चलते फिरते किसी जीव पर आक्रमण करके नहीं मारना।¹⁰
2. मद्य-मांस, मछली एवं अण्डे का सेवन नहीं करना।¹¹
3. गाय, भैंस, सुअर आदि की हिंसा से चर्बी लगे वस्त्रों का त्याग करना।¹²
4. चमड़े से बने बेग, जूते, पर्स आदि काम में नहीं लेना।¹³
5. अपने गाँव, नगर या उसके पास कसाईखाना हो, हिंसा की वृद्धि होती हो तो उसके लिए खुला विरोध करना।¹⁴
6. लोगों को शाकाहार के लाभ और मांसाहार के दोष समझाकर मांसाहारियों को शाकाहारी बनाने का प्रयत्न करना।¹⁵

आचार्यश्री की साधना का यह सुप्रभाव था कि उनकी प्रेरणा से नियम ग्रहण करने वाले नियम-पालन की इच्छाशक्ति भी पा लेते थे। नियम ग्रहणकर्ता खुशी-खुशी नियम का पालन करते और जीवन को अधिक खुशहाल बनाते थे।

सामूहिक व्यवस्था हो निरामिष

कर्नाटक में केजीएफ से बैंगलोर के बीच सेना के

आवास हैं। दक्षिण प्रवास के दौरान इस मार्ग पर आचार्य हस्ती की मुलाकात सेना की बटालियन के एक अधिकारी से हुई। आचार्यश्री की मंगल प्रेरणा से बटालियन के अधिकारी ने संकल्प किया कि बटालियन के सामूहिक भोज में मांसाहार का उपयोग नहीं किया जायेगा।¹⁶ एक बार आचार्यश्री राजस्थान में टोंक क्षेत्र में प्रवासरत थे। उस समय एक दिन महाराष्ट्र सरकार में मन्त्री रह चुके समाजसेवी सुरेश दादा आचार्यश्री की सेवा में पहुँचे। आचार्यश्री ने उनको महाराष्ट्र में अहिंसा के व्यापक प्रचार-प्रसार की प्रेरणा दी। प्रेरणा के प्रत्युत्तर में सुरेश दादा ने कहा-“पूर्व में सरकार की ओर से विद्यार्थियों को मांसाहार, अण्डे आदि दिये जाते थे, आपकी कृपा से वे बन्द हो गये हैं।”¹⁷

ये प्रसंग प्रेरणा देते हैं कि हमें सांस्थानिक, सामुदायिक, सरकारी इत्यादि सामूहिक स्तर पर होने वाले मांसाहार को भी रुकवाना चाहिये। कई राज्यों में सरकारी विद्यालयों में मध्याह्न भोजन में विद्यार्थियों को अण्डे अब भी दिये जा रहे हैं। अनेक सरकारी चिकित्सालयों में सरकार की ओर से रोगियों को अण्डे दिये जाते हैं। अहिंसक शक्तियों को एकजुट होकर तथा तर्कसंगत ढंग से ऐसी व्यवस्थाओं को समाप्त करवाना चाहिये।

पशुबलि निषेध

धर्म के नाम पर होने वाली पशुबलियों और कुर्बानियों का आचार्य हस्ती ने अवसर के अनुरूप प्रतिवाद किया। विक्रम सम्वत् 1995 में उनका प्रवास घोड़नदी (महाराष्ट्र) में था। उस समय वहाँ पशु बाजार लगता था, जिसमें वध और बलि के लिए पशुओं का क्रय-विक्रय होता था। आचार्यश्री की प्रेरणा से सुश्रावक प्रेमराज खाबिया ने वह पशु बाजार बन्द करवाया तथा जहाँ बकरोँ और पाडों की बलि दी जाती थी, उसे भी रुकवाया।¹⁸ कर्नाटक प्रवास के दौरान आचार्यश्री, ने कोर्ति ग्राम में होने वाली बलि रुकवाई। भरतकुमार रुणवाल तथा जन सहयोग से आचार्यश्री ने सदा-सदा के

लिए बलि-निषेध हेतु लिखित में प्रतिज्ञा करवाई।¹⁹ इसी प्रकार विरंजीपुर में भी उनकी प्रेरणा से पशुबलि बन्द हुई।²⁰ उन्होंने राजस्थान के मूण्डिया ग्राम में भी बलिप्रथा को बन्द करवाया।²¹

आचार्यश्री एक बार अनन्तपुरा ग्राम में पधारे तो वहाँ चमत्कारिक ढंग से पशुबलि बन्द करवाई। वहाँ पशुबलि करने वाले व्यक्ति को यह डर था कि बलि नहीं चढ़ाने पर देवी रूठ जायेगी। वहाँ सायंकाल पुजारी के शरीर में देवी प्रविष्ट होकर कहती है-“..... यहाँ विराजित महापुरुष (आचार्य हस्ती) के सामने मुझे क्यों बदनाम किया? मैंने कब बकरे माँगे? तुम तुम्हारे खाने के लिए बकरे मेरे नाम पर बलि करते हो। तुम्हारे कार्य का फल तुम भोगोगे।” देवी के इस कथन पर ग्रामवासी चकित थे। आचार्यश्री ने अपनी साधना के बल से एक ओर बलि रुकवाने हेतु देवशक्ति को अपने पक्ष में कर लिया, दूसरी ओर उन्होंने मानवशक्ति का समादर भी किया अर्थात् उन्होंने ग्राम-सरपंच और ग्रामवासियों का सहयोग भी लिया। फलतः उस ग्राम में बलि-कुप्रथा खत्म हुई।²²

श्रमणसंघीय प्रवर्तिनी साध्वी यशकँवरजी द्वारा जोगणिया माता (राजस्थान) में सदा-सदा के लिए पशुबलि बन्द करवाये जाने पर आचार्य हस्ती बहुत प्रमुदित हुए और उन्होंने चैत्र शुक्ला प्रतिपदा, विक्रम सम्बत् 2031 में यशकँवरजी को ‘शासन प्रभाविका’ उपाधि प्रदान की। वे जैन दिवाकर मुनि चौथमलजी के ऐतिहासिक विपुल अहिंसा-कार्यों की मुक्त मन से प्रशंसा करते थे तथा प्रेरणा लेने का आह्वान करते थे। इस प्रकार वे अहिंसा के कार्यों को विराट् हृदय से अनुमोदित और प्रोत्साहित भी करते थे।

वर्तमान में राजस्थान में पशु-पक्षियों की बलि देना कानूनन निषिद्ध है। लेकिन पूरे राज्य में आये दिन अनेक देवस्थानों पर बड़ी संख्या में खुल्लम-खुल्ला पशुबलियाँ होती हैं। दुःखद आश्चर्य होता है कि कानून के समुचित पालन की दुहाई देने वाले शासन, प्रशासन,

न्यायपालिका, मीडिया आदि सभी ऐसे विषयों पर प्रायः चुप्पी साध लेते हैं। अहिंसा माता, भारत माता और धरती माता की सेवा करने के लिए ऐसी चुप्पियाँ तोड़नी होंगी। पशु-पक्षियों की हत्या के खिलाफ हर क्षेत्र में, हर मोर्चे पर मुकाबला करना होगा।

अहिंसा दिवस

पवित्र पर्व-तिथियों, महापुरुषों की जयन्तियों और विशिष्ट दिनों में अहिंसा दिवस (अगता या अमारि) की शासकीय घोषणा एवं उसका पालन करना भारत की संस्कृति और परम्परा रही है। आगम युग से लेकर वर्तमान समय तक इस परम्परा का अनुपालन होता रहा है।²³ अहिंसक समाज की एकजुटता और जागरूकता के अभाव के कारण वर्तमान में यह परम्परा कुछ शिथिल हो चली है। इसे पुनः बलशाली और प्रभावी बनाया जाना चाहिये। इस क्रम में आचार्य हस्ती की प्रेरणा से अनेक अवसरों पर तथा अनेक क्षेत्रों में अहिंसा दिवसों की घोषणा हुई तथा घोषित अहिंसा दिवसों का समुचित पालन हुआ।

विक्रम सम्बत् 1996 (सन् 1939) में सतारा चातुर्मास में आचार्यश्री की प्रेरणा तथा अहिंसा प्रेमी आटलेजी के प्रयासों से 8 अगस्त को अहिंसा दिवस मनाया गया, जिसके अन्तर्गत कल्लखाने और मत्स्याखेट पूर्णतः बन्द रहे।²⁴ विक्रम सम्बत् 2047 (सन् 1990) में आचार्यश्री का पाली में अन्तिम वर्षावास हुआ। उस वर्षावास में आचार्यश्री की प्रेरणा तथा तत्कालीन नगर परिषद् अध्यक्ष माँगीलाल गाँधी के प्रयासों से 18 अगस्त से 25 अगस्त तक पर्युषण पर्व के दौरान पाली में अहिंसा दिवस घोषित किया गया। फलतः आठ दिनों तक पशु-पक्षी वध, मांस-मछली विक्रय और बूचड़खानों का संचालन प्रतिबन्धित रहा।²⁵

हिंसा का जिस विधि से जितना भी अल्पीकरण हो, उतना ही अच्छा है। इस दृष्टि से अहिंसा के क्षेत्र में छोटी और आंशिक सफलता को भी महत्त्व देना चाहिये तथा बड़ी और पूर्ण सफलता के लिए प्रयासरत रहना

चाहिये। समय और क्षेत्र की तरह कभी-कभी जीवों के वर्ग की दृष्टि से कुछ हिंसा रुकती है तो भी अच्छा है। आचार्यश्री के विक्रम सम्बत् 2017 (सन् 1960) के अजमेर वर्षावास में उनके संकेत और श्रावकों के प्रयासों से पर्युषण पर्व के दौरान कल्लखानों में दुधारु गायों और बैलों का कल्ल रुकवाया जाना एक ऐसा ही प्रयास था।²⁶

निमाज में आचार्यश्री के ऐतिहासिक संधारा काल में स्थानीय मांस-विक्रेताओं द्वारा संधारा चलने तक पशु-पक्षी वध और मांस-विक्रय नहीं करने का संकल्प अमारि का अनूठा स्वरूप था।²⁷ संधारा सम्पूर्ति के दूसरे दिन 22 अप्रैल, 1991 को आचार्य हस्ती की अविस्मरणीय महाप्रयाण यात्रा के दिन राजस्थान सरकार ने पूरे राजस्थान में अहिंसा दिवस की घोषणा करके उस महासन्त को सच्ची श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।²⁸ विभिन्न पुनीत प्रसंगों पर अहिंसा दिवस की इस पावन परम्परा को आगे बढ़ाया जाना चाहिये।

हिंसा का प्रतिकार हो

कुछ लोग अहिंसा और शाकाहार के प्रति पूर्ण निष्ठावान होने के बावजूद हिंसा के विरोध में आवाज़ नहीं उठाते हैं। समर्थ होने के बावजूद प्राणिरक्षा के मुद्दे पर सक्रियता नहीं दर्शाते हैं। अहिंसा के पथ पर चलने वालों को अवसर के अनुसार हिंसा और अन्याय का प्रतिकार करना चाहिये। आचार्य हस्ती हिंसा के प्रतिकार के लिए भी प्रेरणा देते हैं। आचार्यश्री कहते हैं कि नशाबन्दी, हिंसा और व्यभिचार को रोकने तथा बूचड़खानों के विरोध हेतु श्रावकों को अपनी शक्ति तथा मन्त्रिजनों को अपने प्रभाव का उपयोग करना चाहिये।²⁹ आचार्यश्री इस बात से व्यथित थे कि अहिंसा में विश्वास करने वाले बँट हुए, बिखरे हुए हैं। अहिंसा की रक्षार्थ अहिंसा के विश्वासियों को एकजुट होकर कार्य करना चाहिये। आचार्यश्री अहिंसा प्रेमियों का आह्वान करते हैं कि वे संगठित होकर और डटकर हिंसा का विरोध करें।³⁰ जीवहिंसा को बढ़ाने वाले कानून-कायदों का लोकतान्त्रिक तरीकों से विरोध किया जाना चाहिये।

शासन द्वारा बनाये कानून यदि धर्म और संस्कृति के विरुद्ध हैं तो उनका विरोध करना राज्य-विरुद्ध कृत्य नहीं है। देश, धर्म और संस्कृति की रक्षा की पवित्र भावना से हिंसक नियमों और अधिनियमों का विधिपूर्वक तथा अधिकारपूर्वक विरोध करना चाहिये।³¹ सही समय पर सही तरीके से हिंसा का प्रतिकार किया जाए तो हिंसा को पाँव पसारने का अवसर ही नहीं मिलेगा। बढ़ती हिंसा के कदम रोकने के लिए हमें उचित समय पर हमारी प्रतिकार की शक्तियों और युक्तियों का उपयोग करना चाहिये।

अहिंसा संगोष्ठी

अहिंसा के क्षेत्र में नवीन, श्रेष्ठ और प्रभावी लेखन कम हो रहा है। इसके विपरीत हिंसा के पक्ष में लुभाने और उकसाने वाली सामग्री यहाँ-वहाँ पढ़ने को मिल जाती है। आचार्य हस्ती इन स्थितियों को महसूस करते थे। वे स्वयं ज्ञानी, ज्ञानप्रिय तथा ज्ञानोपासना करने वालों के प्रोत्साहक थे। वे चाहते थे कि जनजीवन में अहिंसा की व्यापक प्रतिष्ठा के लिए विद्वान् और साहित्यकार गवेषणापूर्ण, चिन्तनपरक और मौलिक सृजन करें तथा उसे जन-जन तक पहुँचाएँ। साथ ही यदि अहिंसा की ज्ञान-साधना से युवा पीढ़ी को सम्पृक्त किया जाए तो और अधिक अच्छा है। इन्हीं विचारों को मूर्त रूप देने के लिए उनके सान्निध्य में उनके अन्तिम वर्षावास पाली में 1 से 3 अक्टूबर 1990 तक “युवा पीढ़ी और अहिंसा” विषयक विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन हुआ।³² अहिंसा, शाकाहार और जीवरक्षा के अभियान को नई पीढ़ी तथा विद्वत् वर्ग अपने-अपने तरीकों से आगे बढ़ाए तथा समाज उन्हें अपना सहयोग प्रदान करे। आचार्य हस्ती के अन्तिम वर्षावास के उक्त अकादमिक आयोजन का यह पावन सन्देश है।

व्यवहार में अहिंसा की प्रेरणा

आचार्य हस्ती शाकाहार और प्राणिरक्षा के अन्य आयामों पर भी लोगों को सचेत करते हैं। आजीविका को अहिंसक, अनिन्दित और सम्यक् बनाने के लिए वे कहते हैं कि जीविकोपार्जन के लिए हिंसक धन्धे नहीं

करने चाहिये। जो ऐसे धन्धे करते हैं, उन्हें व्यावसायिक और वित्तीय सहयोग नहीं करना चाहिये।³³ आचार्यश्री जीव-जन्तुओं को मारने के उपकरण, विषैली दवाइयाँ, मछली पकड़ने के साधन आदि के व्यवहार और व्यापार का भी निषेध करते हैं।³⁴ वे हिंसक सौन्दर्य प्रसाधनों और रेशमी वस्त्रों के उपयोग की भी स्पष्ट मनाही करते हैं।³⁵ आचार्यश्री लोगों से चमड़े की वस्तुओं तथा प्राणिजन्य उत्पादों का उपयोग नहीं करने की प्रतिज्ञाएँ करवाते हैं।³⁶ वे कहते हैं कि एक तरफ जानवरों को छुड़ाना और दूसरी तरफ हिंसा से निर्मित चीजों का इस्तेमाल करना विसंगति है।³⁷ हमारे जीवन और व्यवहार से ऐसी विसंगतियों और विडम्बनाओं की विदाई होनी चाहिये।

सर्परक्षा

करुणा के सागर आचार्य हस्ती किसी भी प्राणी को तड़पते-मरते देखकर द्रवित हो जाते थे। उनके जीवन में दो ऐसे चर्चित प्रसंग हैं, जिनमें वे मरते हुए साँप की रक्षा करते हैं। एक घटना सतारा चातुर्मास (सन् 1939) की है और दूसरी घटना दिल्ली से अलवर के बीच विहार (सन् 1958) के दौरान किसी गाँव की है।³⁸ पहली घटना में उन्होंने स्वयं अपने वस्त्राच्छादित हाथ से सावधानीपूर्वक चोटिल साँप को पकड़कर, दूर सुरक्षित स्थान पर ले जाकर छोड़ा। दूसरी घटना में उन्होंने अपने ओधे पर साँप को लेकर जंगल में सुरक्षित छोड़ दिया। ये घटनाएँ उनके साहस, निर्भयता, प्राणिमात्र के प्रति प्रेम और अगाध करुणा की परिचायक हैं।

उक्त दोनों ही घटनाओं में जब लोग साँप को मारने पर उतारू थे, तब आचार्यश्री ने लोगों को 'मत मारो' का बोध दिया। आज पर्यावरणविद् यह स्वीकार करते हैं कि जैव विविधता और पारिस्थितिकी सन्तुलन के लिए साँप तथा अन्य सभी छोटे-बड़े प्राणियों का जीवित रहना जरूरी है। हिंसा और हत्या से वातावरण में क्रूरता की तरंगें तो फैलती ही हैं, अस्तित्व का सन्तुलन भी बिगड़ जाता है। वस्तुतः जीवरक्षा, सृष्टि रक्षा का उपाय है।

भगवती अहिंसा

शास्त्रों में अहिंसा को भगवती और माता कहा गया है।³⁹ आचार्य हस्ती भी कई बार 'अहिंसा और 'दया' शब्दों के साथ 'भगवती', 'माता' और 'देवी' का प्रयोग करते हैं।⁴⁰ ऐसा करके वे अहिंसा की अतिशय महिमा बताने के साथ ही उसे लोक जीवन में प्रतिष्ठित करते हैं। वे दयामाता की सेवा के लिए सबका सहयोग लेते थे। इस क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले युग प्रभावक सन्तों और अहिंसा के सेनानियों का मुक्त मन से उल्लेख करते थे। उनके करुणामय हृदय की पुकार थी कि सर्वत्र अहिंसा की प्रतिष्ठा हो। सन् 1980 में मद्रास (चेन्नई) वर्षावास में एक बार उन्होंने कहा था- "आज यद्यपि जैन समाज सम्पन्न है, तथापि अहिंसा के प्रचार के लिए ठोस कार्य करने की आवश्यकता है।"⁴¹ एक बार अपने अहिंसा अभियान के अन्तर्गत आचार्यश्री ने सरल और स्मरणीय नारा दिया-

सब जीवों को जीवन प्यारा।

रक्षण करना धर्म हमारा।⁴²

अहिंसा धर्म के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए यह नारा इसके सम्पूर्ण अर्थों और आयामों के साथ पुनः बुलन्द किया जाना चाहिये। मानवता और दुनिया की रक्षार्थ यह बेहद जरूरी और बुनियादी कार्य है।

सन्दर्भ

1. देखें-हेमचन्द्राचार्य, दादागुरु, आचार्य हीरविजय, जैन दिवाकर चौथमलजी इत्यादि अहिंसा के विशिष्ट प्रचारक/प्रभावक सन्तों की जीवनियाँ।
2. नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं (डॉ. धर्मचन्द जैन), पृष्ठांक 132
3. नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, पृष्ठांक 132
4. वही, पृष्ठांक 136, 162, 259 एवं 260
5. वही, पृष्ठांक 136
6. वही, पृष्ठांक 275
7. वही, पृष्ठांक 166
8. वही, पृष्ठांक 668-669
9. वही, पृष्ठांक 224-225
10. वही, पृष्ठांक 117, 134, 138

11. वही, पृष्ठांक 117, 135, 138, 144
12. वही, पृष्ठांक 144
13. वही, पृष्ठांक 265, 117 तथा 256
14. वही, पृष्ठांक 117
15. वही, पृष्ठांक 117
16. वही, पृष्ठांक 222
17. वही, पृष्ठांक 273
18. वही, पृष्ठांक 82
19. वही, पृष्ठांक 211-212
20. वही, पृष्ठांक 217
21. वही, पृष्ठांक 273
22. वही, पृष्ठांक 236 एवं पृष्ठांक 670 पर विस्तृत।
23. देखें, 'जिनवाणी', फरवरी 2009 के अंक में प्रकाशित डॉ. दिलीप धींग का लेख- 'अहिंसा दिवस : परम्परा, उद्देश्य और महत्त्व'।
24. नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, पृष्ठांक 83
25. वही, पृष्ठांक 283
26. वही, पृष्ठांक 118 (वर्तमान में राजस्थान सहित देश के अनेक राज्यों में गोवंश वध पर कानूनन प्रतिबन्ध है।)
27. वही, पृष्ठांक 303
28. वही, पृष्ठांक 309
29. वही, पृष्ठांक 276
30. वही, पृष्ठांक 483
31. देखें, वही, पृष्ठांक 483
32. वही, पृष्ठांक 283
33. वही, पृष्ठांक 359
34. देखें, वही, पृष्ठ 355
35. वही, पृष्ठ 356
36. वही, पृष्ठांक 117, 256 एवं 265
37. वही, पृष्ठांक 344
38. देखें, वही, पृष्ठांक 83 एवं 660
39. (क) 'भगवई अहिंसा' -सम्बोध सत्तरी, 6 (ख) अहिंसेव जगन्माता, ज्ञानार्णव (ग) दिवाकर रशि'याँ, पृष्ठ 23, 30, 33-35, संकलन-अशोकमुनि, सम्पादन-कन्हैयालाल लोढ़ा।
40. नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, पृष्ठ 349
41. वही, पृष्ठ 220
42. वही, पृष्ठ 225

निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र, सुगन हाउस, 18, रामानुज अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600001

जिनवाणी के सच्चे उपासक

(उपाध्यायश्री मानचन्द्रजी म.सा. को समर्पित)

श्रीमती सुश्रीला भण्डारी

आपके देवलोक गमन की वह ऐसी दुःखद घड़ी थी
खबर सुनते ही दृग् छलक पड़े हमारे प्रिय गुरुवर!

हमें छोड़ आप चले गये

आप जिनशासन की शान थे

आपने बढ़ाया जिनशासन का मान

आपसे कोसों रहा दूर अभिमान

हे दयामय धर्म साधक!

धर्म साधना में सदा रहते लीन

जिनवाणी के सच्चे उपासक

ज्ञान गरिमा आपकी अद्भुत

'पण्डित उपाधि' से हुए विभूषित

गुणी जनों में पाया शीर्ष स्थान

हुए 'उपाध्याय पद' पर आसीन

आप धीर, वीर, गम्भीर, शीतल, सरल

मितभाषी, ज्योतिःपुञ्ज, दृढ़संकल्पी, सहनशील

त्यागी, तपस्वी, कठोर, अनुशासित

आगम निष्ठ, सेवाभावी, जीवन संयमित

तोड़े कषायों के बन्धन आप बने परमानन्द

आप जिस घर में पधारते उस घर सुख आनन्द बरसाते

जो आपका मंगल-पाठ सुनते उनके कष्ट दूर हो जाते

आत्मानन्द से होते विभोर शान्ति से मन लेता हिलोर

हम श्रद्धा सुमन अर्पित करते

आपको शत-शत वन्दन।

-1 क 9, हाउसिंग बोर्ड, भगत की कोठी,
जोधपुर (राजस्थान)

प्रतिक्रमण की पूँजी

श्री अरुण मेहता

युगप्रधान आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का दीक्षा शताब्दी वर्ष चल रहा है। संघनायक आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का आह्वान इस वर्ष को प्रतिक्रमण वर्ष के रूप में मनाने का है। आचार्य भगवन्त का हम सभी को यह संदेश है कि इस वर्ष भर में अधिक से अधिक प्रतिक्रमण सूत्र सीखने-सिखाने का अभियान चलाकर प्रत्येक घर को प्रतिक्रमण की पूँजी से संवर्धित किया जाना चाहिए। प्रतिक्रमणसूत्र का प्रथम चरण सामायिक है, अतः हमने पिछले माह सामायिक का स्वरूप समझ कर इस अभियान का प्रारम्भ किया था। समाई (सामायिक) की कमाई से कोई भी संघ सदस्य वञ्चित न रहे तथा प्रतिक्रमण की पूँजी से सभी घर संवर्धित बने, ऐसा प्रयास संघ ने प्रारम्भ कर दिया है, अतः प्रतिक्रमण के स्वरूप को भी समझना प्रत्येक संघ-सदस्य के लिए उपयोगी है।

अपनी भूल को भूल समझना ही आज कठिन हो गया है। हम अहंकार-वश या कषाय के वश अपनी भूल को भूल मानने को तैयार नहीं होते हैं। दूसरों पर ही सारा दोष डालने को तत्पर रहते हैं, इसके लिए एक नहीं सौ वाद (Arguments) देने को तत्पर रहते हैं। इसलिए आज हम प्रतिक्रमण का महत्त्व नहीं समझ पा रहे हैं और प्रतिक्रमण को उचित महत्त्व नहीं दे रहे हैं। आज इसकी आवश्यकता को ही गौण समझा जा रहा है। इसीलिए आज प्रतिक्रमण सीखने वाले कम हो गये हैं और सीखकर प्रतिक्रमण करने-कराने वाले और भी कम हो गये हैं। गलती करना हमारी आदत-सी हो गई है। कहावत भी है To err is human गलती करना मनुष्य का स्वभाव है। वास्तव में मनुष्य का

स्वभाव अपनी गलतियों को जानकर उनका निराकरण करने का है, उन्हें नहीं दोहराने का है, गलतियाँ करते जाना नहीं है।

पाप करने से हमारी आत्मा भारी होती है, संसार के भ्रमण को बढ़ाती है, हमारे दुःखों को बढ़ाती है, यह हम सभी जानते हैं।

ऐसा जानकर हम अपने किये हुए पापों से उपरत होने के लिए, निवृत्त होने के लिए, कर्मों को काटने के लिए अनेक उपाय करते हैं। जैसे संवर करना, सामायिक करना, स्वाध्याय करना, तपस्या करना आदि-आदि। लेकिन इन सभी क्रियाओं से भी सरल, आसान और अधिक कारगर, कम मेहनत एवं कम कष्ट का साधन है-प्रतिक्रमण। प्रतिक्रमण कर्मों को जड़मूल से खत्म करने की अचूक दवा है, सस्ती दवा है, सर्वत्र सुलभ दवा है, निराश्रित दवा है। प्रतिक्रमण कर्मरोग की महौषध है। आवश्यकता है इसका महत्त्व समझकर, इसका स्वरूप समझकर इसका उपयोग करने की।

हम दिन भर में अनेक पाप कर जाते हैं, और अपने कर्मों का खजाना भरते जाते हैं। प्रतिक्रमण रूप अचूक महौषध को अपनाकर हम अपने कर्मों से निवृत्त हो सकते हैं।

जब हम किसी को दुःख देते हैं, परेशान करते हैं, किसी के प्रति अपराध करते हैं तो उसका हमारे प्रति वैर का बन्ध हो जाता है और हमारे पाप कर्मों का बन्ध हो जाता है। ऐसा हो जाने के बाद अगर हम पश्चात्ताप करते हैं, उस व्यक्ति से क्षमायाचना कर लेते हैं, तो उस व्यक्ति के मन से भी हमारा वैरानुबन्ध कम हो जाता है, समाप्त हो जाता है। हमारा मन भी शीतल और शान्त होता है। हमारे पाप

कर्म ढीले पड़ जाते हैं, पापकर्म निष्फल हो जाते हैं, हम उन कर्मों से उपरत हो जाते हैं। यह पश्चात्ताप और क्षमायाचना करना ही प्रतिक्रमण है।

इस तरह से हम प्रतिक्रमण की साधना से अनेकानेक पापकर्मों के दुःख रूप फल भोगने से बच सकते हैं। इसीलिए हम कह सकते हैं कि प्रतिक्रमण कर्म रोग की अचूक व सरलतम महौषध है।

प्रतिक्रमण के क्रमबद्ध चरण-आगम हमें प्रतिक्रमण के क्रमबद्ध चरण उपलब्ध कराता है, जो इस प्रकार हैं-

1. **आलोचना**-अपने दोषों को, पापों को देखना। अपने दोष स्वयं को दिखाई देना। अपने दोषों की स्वीकारोक्ति ही आलोचना चरण है।
2. **निन्दा**-अपने दोषों को स्वीकार करने के पश्चात् उन दोषों को बुरा समझना, गलत समझना, अकरणीय मानना, उनकी निन्दा करना दूसरा चरण है।
3. **गर्हा**-अपने दोषों को देखकर, उनकी निन्दा करने के पश्चात् उन दोषों को गुरु आदि के सामने कहना, प्रकट करना, उनके सामने पुनः स्वीकार करना गर्हा नामक तीसरा चरण है।
4. **विशुद्धि**-तत्पश्चात् इन दोषों को अपने से अलग करना, अपनी आत्मा से विसराना विशुद्धि रूप चौथा चरण है। इस चरण में आकर प्रतिक्रमण होता है, दोषों से एवं दोषों के फल से निवृत्त हुआ जाता है।
5. **प्रायश्चित्त**-ऐसे दोषों को पुनः न दोहराने का संकल्प करना प्रायश्चित्त रूप अन्तिम चरण है।

इस काल, इस समय, इस क्षेत्र में प्रतिक्रमण अवश्यकरणीय है। इसलिये इसे आवश्यक सूत्र नाम दिया गया है। आवश्यक-सूत्र अपने दोषों को दूर करने की एक व्यवस्थित साधना पद्धति है।

स्वभाव से विभाव में जाना अतिक्रमण है तथा पुनः स्वभाव में स्थित होना प्रतिक्रमण है।

विभाव क्या? मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, अशुभ योग।

स्वभाव क्या? सम्यक्त्व, विरति, अप्रमाद, कषाय विजय, शुभ योग।

व्रत नियमों की मर्यादा का जो उल्लंघन हुआ है, उस उल्लंघन से वापस मर्यादा में आना प्रतिक्रमण है। किये हुए पापों की आलोचना, पश्चात्ताप कर उन्हें फिर न दोहराने का संकल्प करना प्रतिक्रमण है। प्रतिक्रमण एक प्रकार का आत्म स्नान है, जिससे आत्मा कर्म रहित होकर हल्की और शुद्ध बनती है।

जिस प्रकार यदि हमारे पैर में काँटा चुभ जाये, आँख में तिनका चला जाए तो हमारी गति एवं नज़र में व्यवधान आ जाता है, जिससे आगे गति करना सम्भव नहीं होता है। ठीक इसी प्रकार साधक के लिए भी गृहीत व्रत-नियमों में यदि कोई अतिचार-दोष लगा हो तो उसका शोधन करना आवश्यक होता है। इस शोधन का विधि मार्ग है प्रतिक्रमण।

यहाँ कुछ लोग ऐसा कह सकते हैं कि जिन्होंने व्रत ले रखे हैं, उन्हें ही प्रतिक्रमण करने की आवश्यकता होती है, हमने तो कोई व्रत लिए ही नहीं, तो अतिचार लगे ही नहीं, तो फिर प्रतिक्रमण हमारे लिए आवश्यक नहीं है। ऐसा सोचना सही नहीं है। निम्न बिन्दुओं से हम समझ सकते हैं कि प्रतिक्रमण करना व्रती-अव्रती सभी के लिए समान रूप से आवश्यक एवं उपयोगी है।

1. प्रतिक्रमण में लोगस्स के पाठ से 24 तीर्थकरों को वन्दन किया जाता है जो व्रती-अव्रती सभी के लिए उपयोगी है।
2. प्रतिक्रमण में गमोत्थुण के पाठ से अरिहन्तों और सिद्धों की स्तुति की जाती है जो सभी के लिए उपयोगी है।
3. खमासमणो एवं तिक्खुत्तो के पाठ से वन्दना की जाती है जो सभी के लिए समान उपयोगी है।

4. आगमे तिविहे के पाठ से स्वाध्याय आदि में लगे ज्ञान के अतिचारों की शुद्धि की जाती है जो अत्रती के लिए भी आवश्यक है।
5. 'अरिहन्तो महदेवो' के पाठ से दर्शन (सम्यक्त्व) की विशुद्धि की जाती है जो सभी के लिए समान रूप से उपयोगी है।
6. अणुव्रतों के उच्चारण से अणुव्रतों और उनके अतिचारों का दिग्दर्शन होता है, अत्रती को भी व्रत ग्रहण करने की प्रेरणा मिलती है।
7. चौरासी लाख जीवयोनि से क्षमायाचना की जाती है, जो सबके लिए जरूरी है।
8. आवश्यक सूत्र 32वाँ आगम है, जिसका नित्यप्रति स्वाध्याय हो जाता है।
9. अवश्यकरणीय भगवान की आज्ञा का आराधन एवं पालन होता है।
10. व्रती के व्रतों में दृढ़ता एवं निर्मलता आती है।
11. अठारह पापों की आलोचना एवं शुद्धीकरण होता है।
12. अकरणीय कार्यों में पन्द्रह कर्मादानों की जानकारी होती है एवं उनसे बचने की प्रेरणा मिलती है।
13. आवश्यक सूत्र के छह आवश्यकों में चौथा आवश्यक 'प्रतिक्रमण' में ही व्रतों की प्रमुखता है, शेष अन्य आवश्यक अत्रती के लिए भी समान उपयोगी हैं।
14. जितना समय प्रतिक्रमण करने में लगाते हैं, उतने समय हमारे योगों की प्रवृत्ति शुभ रहेगी। अशुभ पाप कर्मों से उतने समय के लिए हमारा बचाव होता है।
15. प्रतिक्रमण करते रहने से देश एवं सर्व चारित्र की विशेष अभिवृद्धि होती है।
16. कालेकाल शुद्ध प्रतिक्रमण करने से तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन हो सकता है।
17. प्रतिक्रमण सीखने, सिखाने और करने से

गुरुदेव के वचनों की पालना होगी।

प्रतिक्रमण कब करना—जब, जिस समय अतिचार-दोष का सेवन हुआ है, गलती हो गई है अथवा जब इसका ज्ञान एवं भान हो जाए, उसी समय अन्तर्मन से 'मिच्छामि दुक्कडं' कहकर प्रतिक्रमण करना चाहिए। जितना शीघ्र हम प्रतिक्रमण करेंगे उतनी ही जल्दी हमारी आत्मा शुद्ध हो जायेगी, पापकर्मों से मुक्त हो जायेगी। हम जब तक प्रतिक्रमण नहीं करेंगे, तब तक हमारी आत्मा दूषित बनी रहेगी तथा उस दोष की अनुमोदना रूप पाप कर्मों का बन्ध भी चलता रहेगा।

आगमानुसार इस काल, इस समय, इस क्षेत्र में पाँच समय में प्रतिक्रमण किया जाना आवश्यक है—1. देवसिक, 2. राइय, 3. पाक्षिक, 4. चातुर्मासिक एवं 5. सांवत्सरिक।

दिन भर में हुई भूलों को शाम को तथा रात भर की भूलों को प्रातः ध्यान में लाकर प्रतिक्रमण करना आवश्यक है। प्रमादवश, कषायवश जो भूलें शेष रह जायें तो उन्हें पन्द्रह दिन (पक्ष) के अन्त में ध्यान में लाकर पाक्षिक प्रतिक्रमण द्वारा शोधन करना चाहिए। फिर भी कदाचित् रह जाएँ तो चातुर्मासी के अन्त में ध्यान में लाकर चातुर्मासिक प्रतिक्रमण करना चाहिए। कदाचित् फिर भी कुछ सूक्ष्म-स्थूल भूलें अवशेष रह जाएँ तो संवत्सर के अन्त में सांवत्सरिक प्रतिक्रमण करना अनिवार्य है। संवत्सरी महापर्व के समय सभी जैनों का मन सरल एवं साधनामय हो जाता है, सभी एक-दूसरों को क्षमा का आदान-प्रदान कर वर्ष भर की भूलों से उपरत होते हैं।

जब प्रतिदिन प्रातः और सायं दोनों समय विधि सहित प्रतिक्रमण करने का विधान है तो फिर पाक्षिक, चातुर्मासिक और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण का विशेष विधान क्यों किया गया है?

हम जानते हैं कि मानव स्वभाव से विचित्र प्राणी है। छद्मस्थ होने के कारण भूलें करके भी उन पर पश्चात्ताप नहीं करता है। अहंकार में क्रोध की, द्वेष की आग अन्तर में धधकती रहती है और उसे शान्त होने में कभी-कभी कुछ दिवस, कुछ मास तक लग जाते हैं। धीरे-धीरे जब मन शान्त होता है, विरक्त होता है, तब उसे अपनी भूल का भान होता है। इसलिए उक्त पाँचों समय में प्रतिक्रमण करने का विधान किया गया है। हमें ऐसा भी नहीं सोचना चाहिए कि हम तो सांवात्सरिक प्रतिक्रमण करके पूरे वर्ष भर के पापों का शोधन कर लेंगे, फिर शेष चारों समय में प्रतिक्रमण क्यों करे? वर्ष भर में किये हुए पापों-अतिचारों का ध्यान वर्ष के अन्त में एक साथ नहीं आ सकता है। स्मरण शक्ति कमजोर होने से बहुत सारे पाप आलोचना एवं शोधन करने से रह सकते हैं। जिस प्रकार घर का सारा कचरा सिर्फ दीपावली पर ही अच्छे से साफ करें और वर्ष भर एकत्रित होने दें तो क्या स्थिति होगी, हम समझ सकते हैं। अतः प्रतिक्रमण जितना शीघ्र किया जाए उतना ही अच्छा है, उससे मन की कलुषता शीघ्रता से समाप्त हो जाती है।

आगम में बताया गया है कि साधु को प्रमादवश कोई अतिचार-दोष लग जाए, परस्पर कलह हो जाये तो तुरन्त शुद्धि करना आवश्यक है। जब तक वह साधु प्रतिक्रमण-प्रायश्चित्त नहीं कर ले तब तक उन्हें आहार करना, विहार करना, यहाँ तक कि शास्त्र स्वाध्याय करना भी उचित नहीं है। साधु की तरह श्रावक को भी यह करना समान रूप से ही आवश्यक और उपयोगी है।

व्यापारी की एक भूल लाखों-करोड़ों का नुकसान करा सकती है, डॉक्टर की एक भूल मरीज के लिए खतरा बन सकती है, इंजीनियर की एक भूल विशाल निर्माण को निरर्थक बना सकती है, वकील की एक भूल महत्त्वपूर्ण केस

हरा सकती है, उसी प्रकार हमारी एक भूल, एक गलती हमें नरक के दुःखों में पहुँचा सकती है। नित्य-प्रति की प्रतिक्रमण साधना, प्रतिक्रमण के भाव हमें इन दुःखों से बचाने में सक्षम हैं। इस प्रकार प्रतिक्रमण की साधना हमारे लिए अत्यन्त उपयोगी एवं आवश्यक है।

हम भी प्रतिक्रमण के महत्त्व को समझें, उपयोगिता समझें, कर्मों से हलके बनें। अपने दोषों को देखना एक श्रेष्ठ गुण है। यही धर्म-साधना का प्रमुख अंग है। पाप से पीछे हटे बिना, उपरत हुए बिना कोई भी धर्मारधना में आगे नहीं बढ़ सकता है।

इकतीस आगम न आयें तो भी संयम लेने की पात्रता हो सकती है, परन्तु बत्तीसवाँ आगम आवश्यक सूत्र जिसे नहीं आता है वह संयम ग्रहण करने योग्य नहीं होता है।

अतः प्रत्येक व्यक्ति इसके महत्त्व एवं इसकी उपयोगिता को समझे, समझकर इसे अपने जीवन में अपनाए, अपने आप को पाप कर्मों से एवं उसके दुःख रूप परिणामों से बचाए।

इस दीक्षा-शताब्दी में प्रत्येक परिवार गुरुदेव के आह्वान को स्वीकार कर अभी से ऐसा प्रण करे कि परिवार में कम से कम एक सदस्य अवश्य ही प्रतिक्रमण सीखेगा तथा परिवार में जो बच्चे-बच्चियाँ हैं उन्हें स्कूल कॉलेज की पढ़ाई के साथ-साथ प्रतिक्रमण अवश्य-अवश्य कण्ठस्थ करवायेगा। प्रतिक्रमण की पूँजी इन नई कोपलों के लिए स्कूल/कॉलेज की पढ़ाई से कहीं अधिक आवश्यक एवं उपयोगी है। उनके जीवन भर की पूँजी है। उन्हें दुर्गतियों से बचाने वाली कुञ्जी है। उनके जीवन का समुचित निर्माण कराने वाली है।

-पूर्व महामन्त्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,

467-ए, 7 वीं 'ए' रोड, सरदारपुरा, जोधपुर-342003

(राजस्थान)

जैन परम्परा में योग और उसका साहित्य

श्रीमती रुचि अनेकान्त जैन

‘योग’ सम्पूर्ण विश्व को भारतीय संस्कृति की एक विशिष्ट और मौलिक देन है। भारत में ही विकसित लगभग सभी धर्म-दर्शन अपने प्रायोगिक रूप में किसी न किसी रूप में योग-साधना से युक्त हैं तथा इसकी आध्यात्मिक, दार्शनिक, सैद्धान्तिक और प्रायोगिक व्याख्या भी करते हैं। भारत में प्राचीनकाल से ही साधना की निम्नलिखित दो सांस्कृतिक धाराएँ प्रचलित रहीं हैं-

1. श्रमण संस्कृति, 2. वैदिक संस्कृति। श्रमण परम्परा जैनधर्म तथा बौद्धधर्म से सम्बन्धित है तथा वैदिक परम्परा में सांख्य-योग, वेदान्त, न्याय-वैशेषिक, मीमांसक आदि सम्मिलित हैं। वैदिक परम्परा में योग दर्शन ने योग साधना की विस्तृत पद्धति विकसित की तथा श्रमण परम्परा में जैन तथा बौद्ध दोनों ने ही पृथक्-पृथक् योग-साधना पद्धति विकसित की। इन तीनों ने अलग-अलग नामों से योग-साधना को भले ही विकसित किया हो, किन्तु सभी का मूल उद्देश्य आध्यात्मिक उन्नतिपूर्वक शाश्वत सुखरूप मोक्ष की प्राप्ति ही है। अतः उद्देश्य की दृष्टि से तीनों एक हैं।

वैदिक दर्शनों में किसी ने भक्ति-उपासना को तो किसी ने ज्ञान को मुक्ति का साधन प्रतिपादित किया और किसी ने यज्ञ-कर्मकाण्ड को साधन माना। गीता दर्शन फलाकांक्षारहित अनासक्त कर्मयोग को मुक्ति का पथ स्वीकार करता है तो सांख्य-योग की साधना पद्धति अष्टांग योग है। जैन दर्शन की साधना पद्धति का नाम रत्नत्रय है जो सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान तथा सम्यक्चारित्र के रूप में जानी जाती है। बौद्ध दर्शन की साधना पद्धति का नाम अष्टांगिक मार्ग है।

योग भारत की विश्व को प्रमुख देन है। यूनेस्को ने 2 अक्टूबर को अहिंसा दिवस घोषित करने के बाद 21 जून को विश्व योग दिवस की घोषणा करके भारत के

शाश्वत जीवन मूल्यों को अन्तरराष्ट्रीय रूप से स्वीकार किया है। इन दोनों ही दिवसों का भारत की प्राचीनतम जैन संस्कृति और दर्शन से बहुत गहरा सम्बन्ध है। श्रमण जैन संस्कृति का मूल आधार ही अहिंसा और योग साधना है। इस अवसर पर यह जानना अत्यन्त आवश्यक है कि जैन परम्परा में योग-ध्यान की क्या परम्परा, मान्यता, दर्शन और साहित्य है?

योग शब्द का अर्थ

‘योग’ शब्द संस्कृत की ‘युज्’ धातु से ‘घञ्’ प्रत्यय लगकर निर्मित हुआ है। संस्कृत व्याकरण में युज् दो धातुएँ हैं। उनमें से एक का अर्थ जोड़ना है और दूसरी का अर्थ मनः समाधि¹ अथवा मन की स्थिरता है। यदि सरल शब्दों में कहा जाये तो योग शब्द का अर्थ सम्बन्ध स्थापित करना तथा मानसिक, वाचिक एवं शारीरिक स्थिरता प्राप्त करना-दोनों ही हैं।² इस प्रकार साधन और साध्य दोनों ही रूपों में योग शब्द अर्थवान् है। भारतीय दर्शन में इस शब्द का प्रयोग इन दोनों ही रूपों में मिलता है।

जैन परम्परा में योग

जैन दर्शन में योग शब्द कई सन्दर्भों में प्रयुक्त हुआ है। जैसे एक तरफ वह संयम, निर्जरा, संवर आदि अर्थ में प्रयुक्त है वहीं दूसरी तरफ मन-वचन-काय की प्रवृत्ति के अर्थ में भी प्रयुक्त है। आचार्य कुंदकुंद कहते हैं कि यह आत्मा ही संवर और योग है।³ जैन आगमों में ‘योग’ शब्द अनेक स्थानों पर संयम और समाधि अर्थ में मिलता है, किन्तु इसका दूसरा सन्दर्भ भी है-मन, वचन-काय का व्यापार, इस अर्थ में भी इसका प्रयोग आचारांग, उत्तराध्ययन सूत्र⁴, तत्त्वार्थसूत्र⁵ आदि ग्रन्थों में उपलब्ध है। वहाँ भी मन, वचन, काय की प्रवृत्ति के निरोध की प्रेरणा दी गयी है। वहाँ यह निर्देशित है कि

योगों के व्यापार से आस्रव और उनके निरोध से संवर होता है, जो मुक्ति के लिए आवश्यक सोपान होता है। इस प्रकार प्राचीन साहित्य में योग शब्द संवर, तप, ध्यान, साधना आदि के लिए प्रयुक्त होता रहा है। इस तरह जैन साधना-पद्धति में योग का अपने मौलिक स्वरूप में विशेष महत्त्व होने के कारण इसमें जैन योग की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। जैन योग के दो प्रमुख सूत्र हैं- संवरयोग और तपोयोग। तप को पुष्ट करने और उसमें गहराई लाने के लिए बारह भावनाओं अर्थात् अनुप्रेक्षाओं का विधान है⁶, अतः भावना योग भी जैन योग का एक प्रमुख अंग है।

जैन योग के प्रणेता

आज तक के उपलब्ध साहित्य, परम्परा और साक्ष्यों के आधार पर प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव योग विद्या के आदि प्रवर्तक माने जाते हैं। जैन आगम ग्रन्थों के अनुसार इस अवसर्पिणी युग के वे प्रथम योगी तथा जैन योग के प्रथम उपदेष्टा थे। उन्होंने सांसारिक (भौतिक) वासनाओं से व्याकुल, धन-सत्ता और शक्ति की प्रतिस्पर्धा में अकुलाते अपने पुत्रों को सर्वप्रथम 'सम्बोधि'⁷ (ज्ञानपूर्ण समाधि) का मार्ग बताया, जिसे आज की भाषा में योग मार्ग कह सकते हैं। श्रीमद्भागवत में प्रथम योगीश्वर के रूप में भगवान ऋषभदेव का स्मरण किया गया है। वहाँ बताया है कि भगवान् ऋषभदेव स्वयं विविध प्रकार की योग साधनाओं का प्रयोगों द्वारा आचरण करते थे।⁸ आज तक प्राचीन से प्राचीन जितनी भी जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ मिलती हैं वे सभी या तो खड्गासन मुद्रा में मिलती हैं या पद्मासन मुद्रा में। ये जैन योग की प्राचीनता और प्रामाणिकता दर्शाता है।

जैन योग का लक्ष्य

जैन योग का लक्ष्य स्व-स्वरूपोपलब्धि है अर्थात् आत्मानुभूति। जहाँ योग एवं अन्य दर्शनों ने जीव का ब्रह्म में लीन हो जाना ही योग का ध्येय निश्चित किया है वहीं जैन दर्शन निज शुद्धात्मा की पूर्ण स्वतन्त्रता

और पूर्ण विशुद्धि योग का ध्येय निश्चित करता है। जैन दृष्टि के अनुसार योग का अभिप्राय सिर्फ चेतना का जागरण नहीं है बल्कि चेतना का ऊर्ध्वारोहण भी है। इसका मूल कारण है कि जैन दर्शन में आत्मा को स्वभावतः ऊर्ध्वगमन स्वभावी माना है। संवर योग और निर्जरा योग जैन दर्शन की ऐसी विशिष्ट और मौलिक पहचान है जो अन्यत्र दुर्लभ है। मन, वचन, और काय की एकाग्रता साधक को आत्मा के सन्मुख कर देती है और साधक आत्मिक आनन्द का अनुभव करने लगता है। जैन योग आलम्बन में व्यक्त के साथ-साथ अव्यक्त को भी देखने और अनुभव करने की प्रेरणा देता है। इस तरह अनन्त सुषुप्त आत्मिक शक्तियों को जाग्रत करने का सशक्त माध्यम है जैन योग और यही जैन योग की प्रमुख विशेषता है।

जैन योग पर शोध कार्य

जैन योग एवं साधना विषय पर अब तक हुए जिन भी शोधकार्यों की प्रामाणिक जानकारी शोधार्थी को प्राप्त हुई है उसका प्रमुख स्रोत डॉ. कपूरचन्द जैन द्वारा UGC परियोजना के तहत प्रकाशित "प्राकृत एवं जैन विद्या : शोधसन्दर्भ" नामक पुस्तक तथा डॉ. वन्दना मेहता द्वारा संकलित जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ द्वारा प्रकाशित "Jain Vishva Bharti and JVBI Research work" ग्रन्थ है। इसके अलावा इन्टरनेट तथा दिल्ली के प्रमुख जैन पुस्तकालयों से भी जानकारी संकलित की गयी है। इसी आधार पर हमने पाया कि इससे सम्बन्धित विषय पर मुख्य रूप से निम्नलिखित कार्य अभी तक हुए हैं-

हिन्दी में हुए कुछ प्रमुख कार्य-

1. जैन योग का समीक्षात्मक अध्ययन, शैफाली अग्रवाल, बरेली, 2004 (अप्रकाशित)
2. पातञ्जल योग की परम्परा में जैन योग, साधना दौनेरिया, भोपाल, 2002 (अप्रकाशित)
3. आचार्य हरिभद्र का योग दर्शन-धनञ्जय मिश्र, वाराणसी, 1992, (अप्रकाशित)

4. योग बिन्दु के परिप्रेक्ष्य में जैन योग साधना का समीक्षात्मक अध्ययन, मुनि सुव्रत शास्त्री, कुरुक्षेत्र, प्रकाशित
5. जैन योग का तुलनात्मक अध्ययन, साध्वी मुक्तिप्रभा, 1983, प्रकाशित
6. जैन योग का आलोचनात्मक अध्ययन, अर्हत्दास बंडोबा डिगे, अमृतसर, 1981, प्रकाशित
7. जैनदर्शन में समत्व योग-साध्वी प्रियवन्दना, JVBI
8. पातञ्जल योग एवं प्रेक्षा ध्यान-आलम अली, JVBI
9. आचार्य हरिभद्र और पतञ्जलि का योग विषयक चिन्तन-देवीशंकर
10. जैन एवं बौद्ध योग-सुधा जैन
11. जैन एवं पतञ्जलि योग-अरुणा आनन्द
- अंग्रेजी में हुए कुछ प्रमुख कार्य-**
1. Shri Yogindudev's Parmatmprakash and Yogsaar, Aadinaath Neminaath Upadhyay.
2. A comparative study of the Yogshastra work in Jainism and in the Patanjali-yoga darshan, Sarala, Agra 1969
3. Comparative study in Jain Yoga, Ashwanikumar Ray, Bihar, 1971
4. Haribhadra's Yoga works and Psychosynthesis, S.M.Desai, L.D. Institute of Indology, Ahemdabad, 1983
5. Jain Yoga, R. Williams, MLBD, Delhi 1983
6. Preksha Meditation, J.S., JVBI, Ladnun, 1981
- इसके अलावा भी अनेक ग्रन्थ, शोधपत्र जैन योग पर प्रकाशित हो चुके हैं।
- जैन योग विषयक उपलब्ध प्राचीन साहित्य-**
- योग एवं ध्यान साधना को लेकर जैन आचार्यों ने प्राचीन काल से ही अनेक कालजयी रचनाएँ की हैं, अभी तक जो साहित्य प्राप्त हुआ है उसे संकलित करके हम इस उद्देश्य से यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं ताकि योग पर अनुसंधान करने वाले अन्य शोधार्थी इस साहित्य का भी अध्ययन कर सकें-
1. मोक्षपाहुड
 2. तत्त्वार्थसूत्र
 3. समाधितन्त्र
 4. इष्टोपदेश
 5. समाधिशतक
 6. परमात्मप्रकाश
 7. योगसार
 8. अमृताशीति
 9. ध्यानशतक
 10. योगशतक
 11. बह्मसिद्धान्तसार
 12. योगविशिका
 13. योगदृष्टिसमुच्चय
 14. योगबिन्दु
 15. षोडशकप्रकरण
 16. आत्मानुशासन
 17. योगसारप्राभृत
 18. ध्यानशास्त्र
 19. पाहुडदोहा
 20. ज्ञानसार
 21. ज्ञानार्णव
 22. योगशास्त्र
 23. योगसार
 24. अध्यात्मरहस्य
 25. योगप्रदीप
 26. अध्यात्मसार
 27. अध्यात्मोपनिषद्
 28. योगावतारबत्तीसी
 29. पातञ्जलयोगसूत्र
 30. योगदृष्टिनी
 31. ध्यानदीपिका
 32. ध्यानविचार
- आचार्य कुन्दकुन्द
आचार्य उमास्वामी/
उमास्वाति
आचार्य पूज्यपाद
आचार्य पूज्यपाद
आचार्य पूज्यपाद
आचार्य योगीन्दुदेव
आचार्य योगीन्दुदेव
आचार्य योगीन्दु
जिनभद्रगणि
आचार्य हरिभद्र
अज्ञात
आचार्य हरिभद्र
आचार्य हरिभद्र
आचार्य हरिभद्र
आचार्य हरिभद्र
आचार्य गुणभद्र
मुनिअमितगति
रामसेनाचार्य
मुनिरामसिंह
मुनि पद्मनन्दि
आचार्य शुभचन्द्र
अज्ञात
अज्ञात
अज्ञात
श्री यशोविजयगणि
श्री यशोविजयगणि
श्री यशोविजयगणि
श्री यशोविजयगणि
देवेन्द्रनन्दि (गुजराती)
अज्ञात

33. अध्यात्मकमलमार्तण्ड	कविराजमल्ल
34. वैराग्यशतक	धनदराज
35. अध्यात्मतत्त्वालोक	मुनिन्यायविजय
36. साम्यशतक	विजयसिंहसूरि
37. योगप्रदीप	उपाध्याय श्री मंगलविजय
38. अध्यात्मकल्पद्रुम	आचार्यमुनिसुन्दरसूरीश्वर
39. जैनयोग	आर. विलियम्स
40. योगशास्त्रः	आचार्य अमरमुनि
41. योगशास्त्र	आचार्य हेमचन्द्र
42. ध्यानशास्त्र	रामसेनाचार्य
43. योगदृष्टिसमुच्चय	आचार्य हरिभद्र

इनके अतिरिक्त अन्य भी योग विषयक ग्रन्थों का उल्लेख प्राप्त होता है जो जिनरत्नकोष और जैन साहित्य के इतिहास भाग-4, पृष्ठ 259 पर उद्धृत हैं।

1. योगदीपिका	पण्डित आशाधर
2. योगभेद द्वात्रिंशिका	पण्डित परमानन्द
3. योगमार्ग	पण्डित सोमदेव
4. योगरत्नाकर	जयकीर्ति
5. योगलक्षणद्वात्रिंशिका	पण्डित परमानन्द
6. योगविवरण	श्री यादवसूरि
7. योगसंग्रहसार	श्रीजिनचन्द्र
8. योगसंग्रहसारप्रक्रिया	नन्दीगुरु
9. योगसार	पण्डित गुरुदास

10. योगांग	श्री शान्तरस
11. योगामृत	श्री वीरसेनदेव
उपसंहार-	

मूलतः योग भारतीय परम्परा की एक समृद्ध देन है और पूरे विश्व में इसे सिर्फ वैदिक परम्परा का अवदान माना जाता है। जबकि मूलतः भारत में प्राचीन काल से ही जैन परम्परा ने योग एवं ध्यान विषयक, महत्त्वपूर्ण अवदान दिया है, किन्तु कई प्रयासों के बाद भी आज तक जैन योग की समृद्ध परम्परा को विश्व के समक्ष प्रभावक तरीके से इस प्रकार नहीं रखा गया कि 21 जून, को विश्व योग दिवस पर जैन योग की भी चर्चा हो। यह दुःख का विषय है कि पूरा विश्व योग दिवस मना रहा है और उसमें योग ध्यान को महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाली प्राचीन जैन योग परम्परा का उल्लेख तक नहीं किया गया। आज आवश्यकता है कि जैन योग की समृद्ध परम्परा को व्यवस्थित रूप से, ऐतिहासिक विकास क्रम के साथ उसके मौखिक स्वरूप को, सभी प्रामाणिक दस्तावेजों के साथ अत्यन्त प्रभावक तरीके से प्रस्तुत किया जाए ताकि उसके माध्यम से योग जगत् को भारत की गौरवशाली समृद्ध जैन योग परम्परा से परिचित करवाया जा सके।

-शोध अध्येता, जैन अध्ययन केन्द्र,
तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय,
मुरादाबाद (उत्तरप्रदेश)

ये आँखियाँ बड़ी तरसातीं

श्री सन्तोष चन्द बम्ब

(तर्ज :: ऐ मेरे दिले नादान.....)

ऐ मेरे गुरु हस्ती, तेरी याद बहुत आती
उपकार याद आते, ये आँखे भर आती

ऐ मेरे गुरु हस्ती.....

गुणगान करूँ कैसे, कहने को शब्द नहीं
श्रमणों में श्रेष्ठ गुरु देखा नहीं अन्य कहीं
प्रभु सम वह दिव्य छवि, तुझ में ही दर्शाती

ऐ मेरे गुरु हस्ती.....

पुलकित मन से आते, दर्शन कर सुख पाते
पाकर मांगलिक तेरी, खुशियाँ बड़ी मनाते
पर आज बिना गुरु के ये आँखियाँ बड़ी तरसातीं
ऐ मेरे गुरु हस्ती.....

सद्बोध दिया हितकर, हुए लाखों जन पावन
सामायिक और स्वाध्याय सन्देश था मन भावन
अनमोल प्रेरणा आज सन्मार्ग को दिखलाती

ऐ मेरे गुरु हस्ती.....

जैन आचार्यों की समकालीन युगचेतना

प्रो. वीरसागर जैन

आचार्य समन्तभद्र और हेमचन्द्र दोनों ने ही दो श्लोक ऐसे लिखे हैं, जिनका आशय है कि जिनशासन के हास और विकास-दोनों में ही मुख्य कारण वस्तुतः उसके वक्ता हैं; वर्तमान काल में जो जिनशासन का हास दिखाई देता है, उसका मुख्य कारण है-सुयोग्य वक्ता का अभाव और यदि आज भी कोई सुयोग्य वक्ता मिल जाए तो इस कलियुग में भी पूरे विश्व में जिनशासन का एकच्छत्र शासन हो सकता है। आचार्य समन्तभद्र और हेमचन्द्र के वे दोनों श्लोक मूलतः इस प्रकार हैं-

“कालः कलिर्वा कलुषाशयो वा श्रोतुः प्रवक्तुर्वचनाशयो वा।
त्वच्छासनैकाधिपतित्वलक्ष्मीप्रभुत्वशक्तेरपवादहेतुः॥”

-आचार्य समन्तभद्र, युक्त्यनुशासन, 6

अर्थ-हे जिनेन्द्र! आपके शासन के एकाधिपत्य के अपवाद का कारण वर्तमान में कलिकाल है, श्रोता का कलुषाशय है अथवा वक्ता का वचनाशय है।

श्राद्धः श्रोता सुधीर्वक्ता युज्येयातां यदीश तत्।

त्वच्छासनस्य साम्राज्यमेकच्छत्रं कलावपि॥

-आचार्य हेमचन्द्र, वीतरागस्तोत्र, 3

अर्थ-हे जिनेन्द्र! यदि सुयोग्य श्रोता-वक्ता मिल जाएँ तो आज कलियुग में भी आपके शासन का एकच्छत्र साम्राज्य हो सकता है।

गम्भीरतापूर्वक विचारणीय है कि ऐसे कौन-से गुण हैं कि जिनसे कोई सुयोग्य वक्ता आज भी पूरे विश्व को प्रभावित कर सकता है। मेरी दृष्टि से, ऐसे सुयोग्य वक्ता में निम्नलिखित दो गुण अवश्य होने चाहिए-

1. स्वयं तत्त्व को सही से समझा हो।
2. दूसरों को समझाने की कला में प्रशिक्षित हो।

अधिकांश वक्ताओं में पहला ही गुण नहीं मिलता। वे समझाते तो खूब हैं, पर वे उसे स्वयं ही ठीक

से नहीं समझे होते हैं। मात्र जैसा शास्त्र से या गुरु से सुना-सीखा होता है, उसे वैसा ही रटकर दूसरे लोगों को समझाने लग जाते हैं, उन्हें स्वयं भी पता नहीं चलता है कि अभी वे स्वयं ही उस विषय को भलीभाँति नहीं समझे हैं। शरीर और आत्मा भिन्न-भिन्न हैं, आस्रव-बन्ध दुःख रूप है, समस्त आरम्भ-परिग्रह दुःख रूप है, मात्र मोक्ष दशा ही सुख रूप है इत्यादि आगम-वाक्यों को वे बोलते तो हैं, परन्तु इनका आशय अभी उन्हें स्वयं को ही ठीक से भासित नहीं हुआ होता है। यही कारण है कि बात नहीं बनती, कहीं-न-कहीं गड़बड़ हो ही जाती है। वे दूसरों के प्रश्नों का ठीक से समाधान नहीं कर पाते हैं, उनके तर्कों के आगे निरुत्तर हो जाते हैं, स्वयं ही भ्रम में पड़ जाते हैं अथवा क्रोधादि करके जबरदस्ती अपनी बात को श्रोता पर थोपने लगते हैं, इत्यादि। अतः सर्वप्रथम तो स्वयं को विषय का एकदम सही-सही, वैज्ञानिक-जैसा पूर्ण समीचीन ज्ञान होना चाहिए। उसमें कहीं भी कोई भी आग्रह या अन्धानुकरण आदि नहीं होना चाहिए। जिसे स्वयं समीचीन ज्ञान हुआ हो ऐसा वक्ता अत्यन्त दुर्लभ है। आचार्य कुन्दकुन्द कृत समयसार की टीका ‘आत्मख्याति’ में उपदेशदाता में चार गुण कहे गये हैं-

(1) आगम का सेवन, (2) परापर गुरु का उपदेश, (3) युक्ति का अवलम्बन और (4) अन्त में स्वानुभव। इसका अभिप्राय यही है कि जो वक्ता केवल आगम के सेवन और परम्परा गुरु के उपदेश तक ही नहीं रुकता, अपितु उसके बाद युक्ति का अवलम्बन लेकर स्वानुभव भी करता है, वही सुयोग्य वक्ता है।

स्वयं समझ लेने के बाद उसे दूसरों को समझाने की कला होना-यह और भी बड़ी बात है। स्वयं समझना आसान है, पर दूसरों को समझाना आसान नहीं होता। उसके लिए एक अलग ही प्रकार की अद्भुत कला

अपेक्षित होती है, जो सबमें नहीं होती। इसके लिए तो विशेष प्रशिक्षण भी लेना पड़ता है। दूसरों को समझाने के लिए एक विशेष भाषा-शैली ही नहीं, मनोविज्ञान एवं देश-काल आदि अन्य अनेक विषयों के ज्ञान की भी विशेष अपेक्षा होती है। यही कारण है कि शास्त्रों में वक्ता के स्वरूप का विस्तार से वर्णन किया गया है।

दूसरों को समझाने के लिए वक्ता में अपार करुणा भी होनी चाहिए, केवल ज्ञान और प्रशिक्षण ही पर्याप्त नहीं है। करुणा ही एक ऐसा तत्त्व है जिससे कोई वक्ता संसारी जीवों के कष्टों को बिना उन्हें दुःखी किए सहजता से दूर कर सकता है। करुणा के बिना संसार में निमग्न जीवों को मुक्तिमार्ग में चलाना तो दूर, उनसे आत्मीयतापूर्वक बात करना भी सम्भव नहीं है। यही कारण है कि आचार्य गुणभद्रस्वामी ने वक्ता के गुणों में करुणा को सर्वोपरि स्थान दिया है। यथा-

जना घनाश्च वाचाला सुलभा स्युर्वृथोत्थिताः।

दुर्लभा ह्यन्तरार्द्रा स्युः जगदभ्युदयजिहीर्षवः॥

-आत्मानुशासन

अर्थ-ऐसे जन और ऐसे घन (बादल) तो लोक में बहुत सुलभ हैं जो वृथा ही उठ खड़े होते हैं, किन्तु ऐसे जन और ऐसे घन अति दुर्लभ हैं जो जगत्-कल्याण की भावना से अन्दर तक भीगे हुए हैं।

दूसरों को समझाने के लिए वक्ता में समकालीन युगचेतना भी अवश्य होनी चाहिए। जिस वक्ता में समकालीन युगचेतना होगी, वही सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित कर पाएगा।

आजकल अधिकांश वक्ताओं में समकालीन युगचेतना का भी बड़ा अभाव देखा जाता है, जो बहुत बड़ी कमी है। ऐसा इतिहास में पहले कभी नहीं था। यदि हम इतिहास में जाकर देखें तो ज्ञात होता है कि सभी पूर्वाचार्यों में बड़ी गहरी समकालीन युगचेतना पाई जाती थी और इसीलिए वे अपने उद्देश्य में अत्यन्त सफल होते थे। प्राचीन जैनाचार्यों ने जो महान धर्मप्रभावना की है, उसके पीछे एक सबसे बड़ा कारण यही रहा है कि उनमें

समकालीन युगचेतना पाई जाती थी।

समकालीन युगचेतना से तात्पर्य है कि अपने समय की समस्याओं से अवगत रहना और उनका समाधान भी प्रस्तुत करना; अपने चिन्तन, प्रवचन, लेखन आदि को युगानुरूप रखना। पूर्व के सभी जैनाचार्यों में यह समकालीन युगचेतना बहुत गहरी पाई जाती थी, इसके अनेक प्रमाण प्रस्तुत किये जा सकते हैं। यथा-

1. उन्होंने किसी एक ही भाषा-विशेष का आग्रह नहीं रखा, अपितु जब जैसा समय आया तब वैसी ही भाषा का प्रयोग किया। उदाहरणार्थ जब लोग प्राकृत में बात को समझते थे तो प्राकृत का प्रयोग किया और जब लोग संस्कृत में बात को समझने लगे तो संस्कृत का प्रयोग किया। इसी प्रकार अपभ्रंश, ब्रज, हिन्दी आदि अनेक भाषाओं का उन्होंने युगानुरूप प्रयोग किया। इसी प्रकार कन्नड़, तमिल, मराठी आदि भाषाओं का प्रयोग भी देश-काल की आवश्यकतानुसार किया। यह उनकी बहुत गहरी समकालीन युगचेतना थी।
2. भाषा ही नहीं, शैली के स्तर पर भी उन्होंने युगानुरूप परिवर्तन किया। जैसे कि जब गाथा अधिक चलती थी तो गाथा लिखी, सूत्र चलने लगे तो सूत्र लिखे, कारिकाएँ चलने लगीं तो कारिका लिखी, पद चलने लगे तो पद लिखे, इत्यादि।
3. प्रायः सभी जैनाचार्यों ने अपने ग्रन्थों में अपने-अपने समय में प्रचलित सभी मतों/सम्प्रदायों/दर्शनों/विचारधाराओं का अध्ययन-समीक्षण प्रस्तुत किया। जैसे-आचार्य अकलंक ने अपने समय में प्रचलित/लिखित सम्पूर्ण विचारधाराओं (धर्मकीर्ति आदि की मान्यताओं) का सयुक्तिक निरसन अपने ग्रन्थों में किया है। इसी प्रकार आचार्य कुन्दकुन्द ने भी अपने समय की समस्याओं/मान्यताओं (द्विक्रियावादी आदि) पर खुलकर अपने विचार व्यक्त किये हैं। यही बात आचार्य

- समन्तभद्र, पूज्यपाद, हरिभद्र, विद्यानन्द, प्रभाचन्द्र, हेमचन्द्र, जिनसेन, जयसेन आदि सभी पर घटित होती है। यहाँ सभी के उदाहरण प्रस्तुत करने का अवकाश नहीं है। कभी पृथक् से लिखने का प्रयास करूँगा।
4. सभी जैनाचार्यों ने अपने धर्म को किसी जाति, लिङ्ग, वेश, क्रिया आदि की कट्टर सीमाओं में भी नहीं बाँधा, अपितु उन्हें देश-काल-परिस्थिति के अनुसार रहने देने का निर्देश दिया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि- 'सर्व एव हि जैनानां प्रमाणं लौकिको विधिः। यत्र सम्यक्त्वहानिर्न न चापि व्रतदूषणम्॥' यह भी उनकी बहुत गहरी समकालीन युगचेतना थी।
5. सभी जैनाचार्यों ने अपने भक्तों की व्यक्तिगत, मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि समस्याओं को भी ध्यान से सुना। उनको मना नहीं किया कि हमसे तो केवल दार्शनिक प्रश्न ही पूछो। और न केवल सुना, सुनकर उन्हें उन समस्याओं का उत्तम समाधान भी बताया। उदाहरणार्थ-मैनासुन्दरी आदि की कथाओं को देखा जा सकता है।

इसी प्रकार की और भी अनेक बातें यहाँ बताई जा सकती हैं, किन्तु अभी संक्षेप में ही कुछ संकेत करके विराम लेता हूँ। कहने का कुल तात्पर्य यही है कि सभी पूर्वाचार्यों में बहुत गहरी समकालीन युगचेतना पाई जाती थी और वह आज भी हर वक्ता/लेखक में अनिवार्य रूप से होनी चाहिए, तभी वह अपनी बात (जिनशासन) को पूरे विश्व तक ठीक से पहुँचा पाएगा। आज के वक्ताओं को आधुनिक विश्व के प्रति जागरूक रहना होगा और

फिर आधुनिक भाषा एवं आधुनिक शैली का आश्रय लेकर ही बड़े रोचक ढंग से समझाना होगा, तभी हमारे पूर्वाचार्यों का यह स्वप्न साकार हो सकेगा कि- 'त्वच्छासनस्य साम्राज्यमेकच्छत्रं कलावपि।' अर्थात् हे जिनेन्द्र! आज कलियुग में भी आपके शासन का एकच्छत्र साम्राज्य हो सकता है।

सौभाग्य से आज तो समय भी बहुत अनुकूल है। केवल इसलिए ही नहीं कि आज वैज्ञानिक संसाधन बढ़ गये हैं, बल्कि इसलिए कि आज लोगों में वैज्ञानिक चेतना बढ़ी है। आज लोगों में पहले जैसी कट्टरता/संकीर्णता नहीं रही है कि हाथी के पैर के नीचे दबकर मर जाएँगे, पर जैन मन्दिर में प्रवेश नहीं करेंगे। आज लोग स्वयं तर्क से हर बात को समझने की कोशिश करते हैं कि ईश्वर जगत् का कर्ता-धर्ता हो सकता है या नहीं, आदि। पहले तो इतिहास में ऐसा समय भी आया है कि यदि कोई व्यक्ति इस बात को समझता था कि ईश्वर जगत् का कर्ता-धर्ता नहीं है तो उसे ईश्वर विरोधी कहकर ज़हर पिला देते थे या फाँसी पर लटका देते थे, पर अब पूरा माहौल बदल गया है। आज लोग इस विषय पर भी शान्तिपूर्वक सुनने-समझने को तैयार हुए हैं। जैनदर्शन का विचार पक्ष ही नहीं, आचार पक्ष भी आज बहुत विश्वसनीय सिद्ध हो रहा है। स्वास्थ्यविद् और पर्यावरणविद् भी जैन आचार को बहुत उपयोगी बता रहे हैं। इसी प्रकार की और भी अनेक बातें हैं। ऐसे में यदि कोई सुयोग्य वक्ता मिल जाए तो आज के समय में अवश्य ही जैनधर्म को विश्व धर्म बनाया जा सकता है। जिनशासन के वक्ताओं को इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक चिन्तन करना चाहिए। (शतेषु जायते शूरा.. वक्ता दशसहस्रेषु)

जैनदर्शन विभाग, लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय
विद्यापीठ, इंस्टीट्यूशनल एरिया, नईदिल्ली

पाठक सहयोग करें

जिनवाणी मासिक पत्रिका को समय पर प्रकाशित करने के लिए हम प्रतिबद्ध हैं, अतः आपसे अपेक्षा है कि आपके द्वारा प्रेषित समाचार माह 01 से 25 तारीख तक मिलने पर सम्बद्ध अंक में प्रकाशित किए जा सकेंगे।

-सम्पादक

जैनदर्शन में भाषा-विचार

डॉ. ओ. पी. चपलोट (सीए)

प्रज्ञापना सूत्र के ग्यारहवें पद का नाम भाषा पद है। जीव की छह पर्याप्तियों में एक पर्याप्ति भाषा है। ऐसे जीव जो भाषा पर्याप्ति से पर्याप्त हो चुके हैं उन जीवों को अपने मन के विचार प्रकट करने के लिए भाषा (वचन) का प्रयोग करना होता है, तब ही परस्पर विचारों का आदान-प्रदान हो सकता है। भाषा के अभाव में व्यावहारिक और शास्त्रीय अध्ययन (पठन-पाठन) तथा ज्ञान उपार्जन करने में भी कठिनाई होती है। अपने मनोगत भावों को प्रकट करने के लिए भाषा (वचन) ही बहुत बड़ा साधन है। जैनदर्शन के अनुसार भाषा से कर्म-बन्धन और कर्म-क्षय दोनों हो सकते हैं, अतः भाषा के प्रयोग में बहुत विवेक की आवश्यकता है।

परिभाषा

साधारण शब्दों में जो बोली जाती है, उसे भाषा कहते हैं या भाषा वर्गणा के योग्य पुद्गलों को लेकर एवं उनको भाषा रूप में परिणत करके छोड़ना, ऐसे द्रव्य समूह को भाषा कहते हैं।

भाषा-शब्द की व्युत्पत्ति

जैनदर्शन में 'भासा' शब्द का प्रयोग हुआ है जो अर्धमागधी का शब्द है जिसकी संस्कृत छाया 'भाषा' होती है। इसका अर्थ इस प्रकार है—“भाष व्यक्तायां वाचि” स्पष्ट बोलने के अर्थ में भाषा शब्द का प्रयोग होता है। 'भाष्यते प्रोच्यते इति भाषा' जिसके द्वारा पदार्थों का स्पष्ट बोध हो उसे भाषा कहते हैं। ज्ञान की मूलभूत भाषा को अवधारिणी भाषा कहते हैं। यह अवधारिणी भाषा चार प्रकार की होती है—सत्य, मृषा, सत्यमृषा या असत्यमृषा।

भाषा का स्वरूप

भाषा के स्वरूप को प्रभु महावीर ने निम्न प्रश्नों के माध्यम से स्पष्ट किया है—

(1) भाषा का मौलिक कारण क्या है ?

भाषा का मूल कारण जीव है, क्योंकि जीव के तथाविध प्रयत्नों के बिना भाषा की उत्पत्ति सम्भव नहीं है। भाषा से बोध होता है। औदारिक, वैक्रिय और आहारक इन तीनों प्रकार के शरीरों में जीव से सम्बद्ध जीव प्रदेश होते हैं जिनसे जीव भाषा द्रव्यों को ग्रहण करता है, तत्पश्चात् भाषक (वक्ता) बनकर बोलता है।

(2) भाषा किनसे उत्पन्न होती है ?

भाषा शरीर से उत्पन्न होती है एवं वह भी केवल औदारिक, वैक्रिय एवं आहारक शरीर से ही उत्पन्न होती है, चूँकि इन तीन शरीरों में ही भाषा के द्रव्य निकलते हैं।

(3) भाषा का संस्थान कैसा होता है ?

भाषा वज्र जैसे आकार संस्थान वाली होती है। जैसे ही भाषा बोली जाती है तो उसके द्रव्य सम्पूर्ण लोक में व्याप्त हो जाते हैं। लोक की आकृति वज्र जैसी है अतः भाषा भी वज्र के आकार की बतलाई गई है।

(4) भाषा का अन्त कहाँ पर होता है ?

भाषा का अन्त लोकान्त में होता है अर्थात् किसी भी स्थान से बोली गई भाषा लोकान्त तक चली जाती है। इसके आगे नहीं जाती है चूँकि लोकान्त के पश्चात् गति में सहायक धर्मास्तिकाय नहीं है।

(5) भाषा किस योग से उत्पन्न होती है ?

भाषा काय योग (शरीर) से उत्पन्न होती है, चूँकि काय योग से भाषा योग्य पुद्गलों को ग्रहण करके उन्हें भाषा रूप में परिणत करके फिर वचन योग से भाषा को बाहर निकाला जाता है।

(6) कितने समय में जीव भाषा बोलता है ?

जीव दो समय में भाषा बोलता है, क्योंकि वह प्रथम समय में भाषा योग्य पुद्गलों को ग्रहण करता है

और दूसरे समय में उन्हें भाषा रूप में परिणत करके छोड़ता है।

(7) भाषा कितने प्रकार की है ?

भाषा चार प्रकार की है-1. सत्य भाषा, 2. मृषा भाषा, 3. सत्यमृषा भाषा एवं 4. असत्यामृषा भाषा।

(8) कौनसी भाषा बोलने की अनुज्ञा है ?

सत्य भाषा और असत्यामृषा (व्यवहार) भाषा दो प्रकार की भाषा बोलने की तीर्थङ्कर भगवान ने आज्ञा दी है। साधु के लिए अन्य दो भाषाओं के प्रयोग का निषेध है।

भाषा के भेद

(अ) अवधारिणी भाषा के चार भेद हैं-

1. **सत्य भाषा**-इहलोक-परलोक की आराधना करने में सहायक होने से जो मोक्ष प्राप्त कराने वाली है, वह सत्य भाषा है। यह भाषा सत्पुरुषों, मुनियों या शिष्टजनों के लिए हितकारी भाषा है। यह आराधनी भाषा है।

2. **मृषा भाषा**-सत्य भाषा से विपरीत स्वरूप वाली मृषा भाषा है, जिसे झूठ भाषा भी कहा जाता है। यह विराधिनी भाषा है।

3. **सत्यमृषा भाषा**-जिस भाषा में सत्य और असत्य दोनों मिश्रित हो अर्थात् जिसमें कुछ अंश सत्य हो एवं कुछ अंश असत्य हो ऐसी मिश्र भाषा सत्यमृषा कहलाती है। यह आराधनी-विराधिनी दोनों होती है।

4. **असत्यामृषा भाषा**-ऐसी भाषा जो न सत्य है, न असत्य है और न सत्यमृषा है वह असत्यामृषा कहलाती है। यह भाषा न तो आराधनी होती है, न विराधिनी होती है एवं न ही आराधनी-विराधिनी होती है। इस भाषा का विषय आमन्त्रण देना या आज्ञा देना आदि है जैसे साधु द्वारा श्रावक आदि को प्रतिक्रमण, सामायिक आदि करने के लिए कहना।

सत्यभाषी आदि का अल्प बहुत्व

सबसे थोड़े जीव सत्यभाषी हैं, उनसे सत्यमृषा भाषी असंख्यात गुणा है, उनसे मृषा भाषी

असंख्यातगुणा हैं, उनसे असत्यामृषा भाषी असंख्यातगुणा हैं और उनसे अभाषी (नहीं बोलने वाले) जीव अनन्त गुणा हैं।

(ब) प्रज्ञापनी भाषा-

प्रज्ञापनी भाषा का अर्थ है-जिसमें अर्थ (पदार्थ) का प्रतिपादन (प्ररूपण) किया जाए, उसे प्रज्ञापनी भाषा कहते हैं। गाय, मृग, पशु और पक्षी की भाषा प्रज्ञापनी भाषा है एवं यह भाषा मृषा (असत्य) नहीं है।

अन्य अपेक्षा से भाषा के दो भेद हैं-पर्याप्तक एवं अपर्याप्तक भाषा। सत्य भाषा और मृषा भाषा को पर्याप्तक भाषा कहा गया है, यानी जो भाषा निश्चित अर्थ रूप से जानी जा सकती है यानी जिस भाषा से सम्यक् और असम्यक् का निर्णय किया जा सकता है, वह पर्याप्तक भाषा है। इसके विपरीत जो भाषा अर्थ का निर्णय करवाने के सामर्थ्य से रहित है ऐसी सत्यमृषा और असत्यामृषा रूप भाषा अपर्याप्तक भाषा है।

पर्याप्तक भाषा के भेद

(अ) पर्याप्तक सत्य भाषा के दस भेद हैं-

1. **जनपद सत्य**-देश-विदेश की अपेक्षा इष्ट अर्थ का ज्ञान कराने वाली व्यवहार भाषा जनपद सत्य है जैसे कोंकण देश में पानी को पिच्च कहते हैं।

2. **सम्मत सत्य**-सभी लोगों के सम्मत होने से जो सत्य रूप प्रसिद्ध है, वह सम्मत सत्य है। जैसे पंकज शब्द का अर्थ कीचड़ से उत्पन्न होने वाला होता है किन्तु कमल को ही पंकज कहा जाता है, कीचड़ से उत्पन्न होने वाले अन्य कुमुद, शैवाल आदि को नहीं।

3. **स्थापना सत्य**-सदृश अथवा विसदृश आकार वाली वस्तु में वस्तु विशेष की स्थापना करके उसे उस नाम से कहना स्थापना सत्य है, जैसे राम-कृष्ण की मूर्ति को राम कहना स्थापना सत्य है। जब यह किसी आकार विशेष की अपेक्षा से स्थापना की जाती है तो यह सद्भाव स्थापना सत्य एवं आकार विशेष के अभाव में स्थापना की जाती है तो यह असद्भाव स्थापना कहलाती है। नाम और स्थापना वन्दनीय नहीं होते हैं।

4. नाम सत्य—गुण की अपेक्षा न रखकर किसी का नाम विशेष रख देना नाम सत्य है जैसे किसी गरीब का नाम धनराज रखना।

5. रूप सत्य—रूप-वेश देखकर उस प्रकार के गुणों से रहित व्यक्ति को भी उस रूप से कहना जैसे कपट से साधु के वेश पहनने वाले व्यक्ति को भी साधु कहना।

6. प्रतीत सत्य—दूसरी वस्तु की अपेक्षा जो सत्य है वह प्रतीत सत्य है जैसे कोई व्यक्ति अपने पिता की अपेक्षा पुत्र है एवं पुत्र की अपेक्षा पिता है।

7. व्यवहार सत्य—लोक व्यवहार की अपेक्षा जो सत्य प्रचलित है, वह व्यवहार सत्य है। जैसे चूल्हा जल रहा है, गाँव आ गया है आदि।

8. भाव सत्य—वर्ण विशेष की अपेक्षा जो सत्य है, जैसे कोयल काली है, तोता हरा है आदि को भाव सत्य कहा है।

9. योग सत्य—योग का अर्थ सम्बन्ध है। सम्बन्ध अपेक्षा से जो सत्य है, उसे योग सत्य कहा है जैसे दण्ड के सम्बन्ध से दण्डी (वाला) कहना।

10. उपमा सत्य—उपमा की अपेक्षा सत्य उपमा सत्य है। उपमा के चार प्रकार कहे गये हैं—(1) सत् को सत् की उपमा देना—जैसे आगामी तीर्थङ्कर महापद्म महावीर प्रभु के समान होंगे। (2) सत् को असत् की उपमा देना—जैसे नारकी, देवता का पल्योपम, सागरोपम का आयुष्य सत् है, किन्तु पल्य और सागर की उपमा असत्य है। (3) असत् को सत् की उपमा—जैसे पत्र और वृक्ष की बातचीत। (4) असत् को असत् की उपमा—जैसे घोड़े का सींग गधे के सींग जैसा है और गधे का सींग घोड़े के सींग जैसा है।

(ब) पर्याप्तक मृषाभाषा के भी दस भेद हैं—

क्रोध निःसृत, मान निःसृत, माया निःसृत, लोभ निःसृत, प्रेम (राग) निःसृत, द्वेष निःसृत, हास्य निःसृत, भय निःसृत, आख्यायिका निःसृत और उपघात निःसृत।

क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, हास्य और भय के वश बोली हुई भाषा सत्य या असत्य होने पर भी मृषा कही गई है। कथाओं में असम्भव बातों का वर्णन आख्यायिका निःसृत असत्य है एवं जीवों की हिंसा हो ऐसी भाषा बोलना या तू चोर है, इस प्रकार झूठा दोष देना उपघात निःसृत असत्य है।

(स) अपर्याप्तक भाषा—

यह भी दो प्रकार की कही गई है—सत्यमृषा एवं असत्यामृषा।

अपर्याप्तक सत्या भाषा के भी दस भेद हैं—

उत्पन्न मिश्रिता, विगत मिश्रिता, उत्पन्न-विगत मिश्रिता, जीव मिश्रिता, अजीव मिश्रिता, जीव-अजीव मिश्रिता, अनन्त मिश्रिता, प्रत्येक मिश्रिता, अद्वा मिश्रिता एवं अद्वा मिश्रिता।

अपर्याप्तक असत्यामृषा भाषा भी बारह प्रकार की कही गई है—

आमन्त्रणी, आज्ञापनी, याचनी, पृच्छनी, प्रज्ञापनी, प्रत्याख्यानी, इच्छालोमा, अनभिगृहीता, अभिगृहीता, संशयकरणी, व्याकृता और अव्याकृता भाषा।

जीव एवं भाषक अभाषक—

एकेन्द्रिय जीव अभाषक होते हैं। सिद्ध जीव भी अभाषक होते हैं। शेष संसारी जीव भाषक एवं अभाषक दोनों ही होते हैं।

भाषा रूप में ग्रहण किये हुए पुद्गल जीव भिन्न भी निकालता है और अभिन्न भी निकालता है। जो भिन्न निकालता है वे अनन्त गुण वृद्धि से—वृद्धि से बढ़ते हुए लोकान्त को स्पर्श करते हैं एवं जो अभिन्न (भेदन नहीं किए हुए) निकालता है, वे असंख्यात अवगाहना वर्णना तक जाकर भिन्न होते हैं और वे भिन्न हुए पुद्गल संख्यात योजन जाकर नष्ट हो जाते हैं।

आराधक—विराधक

चारों प्रकार की भाषाओं को उपयोग पूर्वक बोलने वाला जीव आराधक होता है, किन्तु असंयत, अविरत, पाप कर्म का प्रतिघात एवं प्रत्याख्यान नहीं

करने वाला जब इन चारों भाषाओं को बोलने वाला विराधक होता है।

सत्यभाषी आदि का अल्प महत्त्व

सबसे थोड़े जीव सत्यभाषी है, उनसे सत्यमृषा भाषी असंख्यातगुणा है, उनसे मृषाभाषी असंख्यातगुणा है, उनसे असत्यामृषा भाषी असंख्यातगुणा है और उनसे अभाषी (नहीं बोलने वाले) जीव अनन्तगुणा है।

सान्तर निरन्तर

जीव भाषा के द्रव्यों को सान्तर भी ग्रहण करता है

एवं निरन्तर भी ग्रहण करता है, किन्तु सान्तर ही निकालता है, निरन्तर नहीं।

जीव केवल स्थिर (स्थित) द्रव्यों को ही द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव से ग्रहण करता है, अस्थिर (अस्थित) द्रव्यों को ग्रहण नहीं करता है।

इस प्रकार भाषा के विषय में उक्त तथ्य पाठकों के लिए मननीय है।

-377 के, वन रोड, भूपालपुर उदयपुर (राज.) मे.

9314061211

जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका का विवरण

(फार्म 2 नियम 8 देखिए)

- | | | |
|--------------------------------|---|---|
| 1. प्रकाशन स्थान | : | जयपुर |
| 2. प्रकाशन अवधि | : | मासिक |
| 3. मुद्रक का नाम | : | डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर |
| 4. प्रकाशक का नाम | : | अशोक कुमार सेठ |
| राष्ट्रीयता | : | भारतीय |
| पता | : | सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार
जयपुर-302003 (राज.) |
| 5. सम्पादक का नाम | : | डॉ. धर्मचन्द जैन |
| राष्ट्रीयता | : | भारतीय |
| पता | : | आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान
ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर,
जयपुर-302015 (राज.) |
| 6. उन व्यक्तियों के नाम व पते: | | सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल |
| जिनका पत्र पर स्वामित्व है | | दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार
जयपुर-302003 (राज.) |

मैं, अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण सत्य है।

मार्च 2020

हस्ताक्षर-अशोक कुमार सेठ
प्रकाशक

आओ मिलकर कर्मों को समझें (4)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा- कर्म जीव रूप है अथवा पुद्गल रूप है ?

समाधान- कर्म जीव रूप भी है तथा पुद्गल रूप भी है। द्रव्य कर्मों की अपेक्षा से यदि कथन करें तो कर्म पुद्गल रूप है, क्योंकि कार्मण वर्गणा के पुद्गल जो आत्मा से सम्बन्धित हो जाते हैं, वे द्रव्य कर्म कहलाते हैं। उन्हें अपेक्षा भेद से ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय आदि आठ प्रकार का कहा जाता है। द्रव्य कर्म पुद्गल रूप होने से अजीव भी कहलाते हैं।

भाव कर्मों की अपेक्षा यदि विचार करें तो कर्म जीव रूप है, क्योंकि राग-द्वेष-काम-क्रोध-लोभ-मोह आदि विकार जीव में उत्पन्न होते हैं। जीव के इन विकारी भावों को, क्रोधादि कषायों को, मिथ्यात्व आदि को भाव कर्म कहते हैं। इन भाव कर्मों के कारण ही द्रव्य कर्मों का बन्ध होता है।

जिज्ञासा- कर्म बन्धने में कितना समय लगता है ?

समाधान- अलग-अलग कर्म प्रकृतियों का बन्ध अलग-अलग समयों में होता रहता है। अनेक कर्म प्रकृतियों का बन्ध एक साथ भी चलता रहता है। कुछ कर्म प्रकृतियाँ एक-दो समय तक बन्धती हैं और बाद में रुक जाती हैं, कुछ अन्तर्मुहूर्त्त तक बन्धती रहती हैं तथा कुछ ऐसी प्रकृतियाँ भी होती हैं, जिनका बन्ध लम्बे समय तक होता रहता है। 5 ज्ञानावरणीय, 4 दर्शनावरणीय, 5 अन्तराय आदि ऐसी भी धुन्न बन्धी कर्म प्रकृतियाँ होती हैं, जो अनादि काल से बन्धती चली आ रही हैं तथा जब तक जीव दसवें गुणस्थान से ऊपर नहीं चला जाता तब तक वे निरन्तर सभी गति, जाति, काया आदि में बन्धती ही रहती हैं।

विरोधी प्रकृतियों में उनके बन्ध का कारण विद्यमान होने पर उनका बन्ध प्रायः अन्तर्मुहूर्त्त में बदल जाता है। विरोधी प्रकृति के बन्ध का कारण तथा

परिणाम विद्यमान नहीं हो तो संख्यात, असंख्यात और अनन्त काल तक भी उन प्रकृतियों का बन्ध हो सकता है। पहले से छठे गुणस्थान तक साता-असाता का बन्ध अन्तर्मुहूर्त्त-अन्तर्मुहूर्त्त में बदल-बदल कर होता रहता है। सातवें से तेरहवें गुणस्थान तक लगातार साता वेदनीय का बन्ध होता रहता है। तेरहवें गुणस्थान में तो देशोन्त क्रोड़ पूर्व तक भी लगातार साता वेदनीय का बन्ध हो सकता है। निगोद में औदारिक, तैजस, कार्मण इन तीन शरीरों का बन्ध अनन्त काल तक भी हो सकता है।

जिज्ञासा- कर्म बन्धने के कितने समय बाद फल देना प्रारम्भ हो जाता है ?

समाधान- कर्म बन्धने के बाद जब तक उसका अबाधा काल पूरा नहीं बीत जाये, तब तक वह कर्म अपना फल देना प्रारम्भ नहीं करता। ज्ञानावरणीय आदि सात कर्मों में यह नियम है कि एक कोटाकोटि सागरोपम की स्थिति का यदि कर्म बन्धता है तो उसका अबाधाकाल 100 वर्षों का होता है। एक कोटाकोटि से कम अर्थात् अन्तः कोटाकोटि सागरोपम का बन्ध होने पर उसका अबाधाकाल सामान्यतः अन्तर्मुहूर्त्त होता है।

आयु कर्म में अबाधाकाल अनिश्चित होता है। आगामी भव की आयु का बन्ध कर लेने के बाद जब तक उस जीव का मरण नहीं हो जाये तब तक के काल को आयु कर्म का अबाधाकाल माना जाता है।

जिज्ञासा- कर्म बन्धने के बाद कितने समय तक वह कर्म उसी रूप में बना रहता है ?

समाधान- कर्म बन्धने के बाद जब तक जीव के परिणामों में विशेष परिवर्तन नहीं आये, तब तक वह कर्म उसी रूप में बना रहता है। जैसे ही उदीरणा, संक्रमण, उद्वर्तन, अपवर्तन आदि के परिणाम जीव में उत्पन्न होते हैं तो उनके अनुरूप उन कर्मों में भी परिवर्तन होता

रहता है। कर्म का जितना अंश गाढ़ निकाचित बन्ध गया है, उसमें प्रायः परिवर्तन नहीं हो पाता। कोई भी कर्म जो बन्धा है तब से लेकर एक आवलिका काल तक उसमें किसी भी प्रकार का करण लागू नहीं होने से वह वैसा का वैसा ही पड़ा रहता है, क्योंकि बन्धावलिका काल सकल करण के अयोग्य होता है।

जिज्ञासा— कर्मबन्ध के मुख्य हेतु कौन-कौन से बतलाये गये हैं?

समाधान— अलग-अलग अपेक्षाओं से कर्म बन्ध के हेतुओं की संख्या बतलाई गई है। जहाँ दो बन्ध हेतु बतलाये वहाँ कषाय और योग बतलाये हैं। जहाँ तीन हेतु कहे वहाँ मिथ्यात्व, कषाय और योग के रूप में कहे दिये। जहाँ चार हेतु कहे वहाँ मिथ्यात्व, अविरति, कषाय और योग बतला दिये। जहाँ पर पाँच हेतु कहे वहाँ मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग बतलाये हैं। कर्म बन्ध के हेतुओं की संख्या में भिन्नता होने पर भी उनके आशय में परमार्थतः कोई विशेष अन्तर नहीं है।

स्थानाङ्ग सूत्र के दूसरे स्थान में बतलाया कि बन्ध दो प्रकार का होता है—राग बन्ध और द्वेष बन्ध। अर्थात् राग-द्वेष ये दोनों सभी कर्मों के बन्ध के बीज रूप कारण हैं।—(स्थानाङ्ग 2.4.393)

स्थानाङ्ग के चौथे स्थान में बतलाया कि जीव ने चार कारणों से आठों कर्म प्रकृतियों का भूतकाल में संचय किया है—क्रोध से, मान से, माया से, लोभ से। (ठाणांग-4.1.92)

जिज्ञासा— कर्मों का बन्ध मुख्यतः कितने प्रकार का होता है?

समाधान— आठ कर्मों में से कोई भी कर्म जब बन्धता है तो बन्ध के प्रथम समय में ही उनके चार प्रकार बन जाते हैं—1. प्रकृति बन्ध, 2. स्थिति बन्ध, 3. अनुभाग बन्ध, 4. प्रदेश बन्ध।

जो कर्म आत्मा के जिन ज्ञानादि गुणों को ढँकता है, आवरित करता है, उसे प्रकृति बन्ध कहते हैं। जो

कर्म जितने समय तक आत्मा के साथ बन्धा हुआ रहता है, उस काल मर्यादा को स्थिति बन्ध कहते हैं। कर्मों के फल देने की तीव्रता-मन्दता रूप शक्ति को अनुभाग बन्ध कहते हैं। जितने कर्म पुद्गलों को जीव बान्धता है अर्थात् जिस कर्म प्रकृति को जितने दलिक हिस्से में प्राप्त होते हैं, उसे प्रदेश बन्ध कहते हैं।

बन्ध के इन चारों प्रकारों को दवाई के उदाहरण से आसानी से समझा जा सकता है। अलग-अलग तरह के रोगों की अलग-अलग दवा होती है, जो जिस रोग के मिटाने में सहायक है, वह उसकी प्रकृति है। जितने समय तक वह दवा प्रभावशाली रहती है, कार्यकारी रहती है, वह काल मर्यादा उसकी स्थिति है। जितनी उस दवा की ताकत है, शक्ति है, 10-20-50-100-250-500 Mg आदि-आदि, वह फल देने की शक्ति अनुभाग है तथा दवाई की जो साइज है, बनावट है, छोटा-बड़ा आकार है वह प्रदेश बन्ध की तरह समझा जा सकता है। **जिज्ञासा**— बन्ध के प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश में चार भेद किस पर आश्रित होते हैं?

समाधान— कर्म बन्ध के प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश ये चार भेद कषाय और योगों पर आश्रित हैं। अर्थात् प्रकृति बन्ध और प्रदेश बन्ध योगों पर आश्रित है। योगों की घन्य-मध्यम-उत्कृष्टता के आधार पर प्रदेशों की संख्या निर्भर करती है। स्थिति बन्ध का सम्बन्ध कषाय से है तथा अनुभाग बन्ध का सम्बन्ध कषाय और लेश्या दोनों से हैं।

जिज्ञासा— कर्मों में प्रदेश, निषेक और अनुभाग किससे बनते हैं?

समाधान— जितने कर्म दलिक आत्मा पर बन्धते हैं, वे प्रदेश कहलाते हैं। अर्थात् कर्म दलिकों का समूह प्रदेश है। 'निषेक' स्थिति से सम्बन्धित होते हैं। जिन कर्मों की जितनी स्थिति बन्धती है, उस स्थिति के अनुपात में क्रम से निषेक बनते हैं। अबाधाकाल को छोड़कर शेष स्थिति में कर्मों की निषेक रचना (क्रमशः स्थापना) होती है। निषेक के क्रमानुसार ही कर्म उदय में आते हैं।

जो कर्म दलिक आत्मा पर बन्धे हैं, उनमें जो रस रहा हुआ है, फलदान शक्ति रही हुई है, उससे स्पर्धक बनते हैं। कर्म पुद्गल के रसों का समूह वर्गणा कहलाती है और अनन्त वर्गणाओं में रहे हुए रसों से मिलकर स्पर्धक बनते हैं। ये स्पर्धक कर्मों की अनुभाग शक्ति को बनाये रखते हैं। कर्म बन्ध के समय में होने वाले जीव के

शुभाशुभ अध्यवसायों के अनुसार स्पर्धक बनते हैं। सरल शब्दों में यह कहा जा सकता है कि कर्म दलिकों से प्रदेश बनते हैं। कर्मों की अबाधाकाल के ऊपर की स्थिति से निषेक बनते हैं तथा रसों के स्पर्धकों से अनुभाग बनता है।

(क्रमशः)

-रजिस्ट्रार, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न
आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

विश्व के लिए खतरा है मांसाहार

श्री मन्नीष चोरड़िया

जैनधर्म के अनुसार 'अहिंसा परमो धर्मः' परम कल्याणकारी मन्त्र है। जिस धर्म में आलु, प्याज जैसे अनन्तकाय सूक्ष्म जीवों की जानकारी है, उस धर्म में मांसाहार तो सर्वथा वर्जित है। नरक में जाने के चार मुख्य कारणों में से पञ्चेन्द्रिय जीव की घात एक कारण है। आज इसी सिद्धान्त की जरूरत है विश्व को।

अभी देखा जाए तो मांसाहार की वजह से फैल रहे कोरोना वायरस से सिर्फ चीन ही प्रभावित नहीं है, दुनिया के अनेक देश खतरे के दायरे में हैं। यह पहली बार नहीं हुआ है जब विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अन्तरराष्ट्रीय आपातकाल घोषित किया हो। पहले भी प्लेग, साँस जैसी महामारियों के आतंक ने अनेक लोगों की जान ली है।

ये सभी बीमारियाँ सिर्फ मांसाहार की वजह से फैली हैं। लोग मछली, मुर्गा, चमगादड़, बिच्छू, साँप, मेंढक आदि जीवों को खाते हुए उनके मांस के साथ अनेक हानिकारक कीटाणु भी खा जाते हैं। वही कीटाणु रोग को फैलाते हैं और महामारी जैसी हालत पैदा कर देते हैं। आज कोरोना वायरस (COVID-19) की वजह से सिर्फ चीन की अर्थव्यवस्था ही नहीं, पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को झटका लग सकता है। मन्दी जैसे हालात बन सकते हैं वह भी एक वायरस की वजह से।

चीन तो एक विकसित राष्ट्र है, 10 दिन में 1,000 बैड वाला हॉस्पिटल खोल दिया, आधुनिक मशीनों की सहायता से उसने पूरी ताकत से इस बीमारी को फैलने से रोकना चाहा। जिस क्षेत्र में यह बीमारी

फैली (बुहाना क्षेत्र) उस क्षेत्र के लोग अपने-अपने घरों में बन्द हैं। स्कूल, कॉलेज, सार्वजनिक स्थल सब बन्द हैं। उस क्षेत्र में से न कोई आ सकता है और न कोई जा सकता है। इतना सब कुछ करने के बाद भी, यह पूरी दुनिया में फैल गया। अब तक इसने लगभग 1,800 से ज्यादा जानें ले ली है।

अगर यही बीमारी भारत में फैलती है तो इसे फैलने में बिल्कुल भी देर नहीं लगेगी। भारत जैसे लोकतान्त्रिक राष्ट्र में किसी क्षेत्र को प्रतिबन्धित करना बहुत मुश्किल है। लेकिन आज भारत कोरोना जैसी महामारी से बचा हुआ है तो वह सिर्फ शाकाहार की वजह से। पर अब भारत में मांसाहारी लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। लोगों को बदलती हुई जीवन शैली में मांसाहार ने भी स्थान बनाना शुरू कर दिया है।

इसलिए आज जैनधर्म की अहिंसा नीति की विश्व को जरूरत है। शाकाहारी होना बहुत जरूरी है। सिर्फ कोरोना वायरस ही मांसाहार का नकारात्मक परिणाम नहीं है। कैंसर, ब्लडप्रेशर, मधुमेह आदि बीमारियों के लिए भी मांसाहार जिम्मेदार है। रूस, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, जापान जैसे देश चीन को चेतावनी देते हैं कि वह अपने लोगों को मांसाहार के प्रति संवेदनशील रखे। शिकागो जैसे शहर मांसाहार के लिए प्रसिद्ध हैं।

मांसाहार को रोकना और शाकाहार को बढ़ाना आज चुनौती के रूप में देखा जाता है। पर हमें समझना पड़ेगा यह चुनौती नहीं आज की जरूरत है। भगवान का सन्देश 'जीओ और जीने दो' को अपनाना ही पड़ेगा।

-ए 9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर

(राज.)

आधुनिकता से अध्यात्म तक*

श्रीमती खुशबू पटवा करनावट

आप सभी ने 'चार्ल्स डार्विन' के विकासवाद के बारे में पढ़ा और सुना होगा। उस सिद्धान्त की सबसे महत्वपूर्ण बात थी 'Survival of the fittest', जिसका मतलब है कि जो सबसे तन्दुरुस्त होगा, वही लम्बे समय तक जीवित रहेगा और तन्दुरुस्त वही रहेगा जो समय के साथ अपने आपको सकारात्मक दृष्टि से परिवर्तित करता रहेगा।

आज जो भी हम आगे बात करेंगे वह आध्यात्मिक दृष्टि से परिवर्तन करने के लिए होगी, जिससे हमें इस आधुनिक समय में Survive करने में मदद मिलेगी।

इस सफ़र की शुरुआत में हमें सबसे पहले ध्यान से समझना होगा कि आज की आधुनिक जिन्दगी कैसी है? आज हम सभी लोग, चाहे बच्चे हों या बूढ़े सोशल मीडिया से जुड़े हुए हैं। फेसबुक, व्हाट्स एप्प, इंस्टाग्राम या स्नेप चेट। सोशल मीडिया से पहले जो हमारी जिन्दगी थी, वह हमारी अपनी थी, पर आज हम जैसे भी हैं, सोशल मीडिया के लिए जीते हैं। अब हमें कौन कहाँ जा रहा है, घूम रहा है, किस होटल में रह रहा है। कैसे कपड़े पहन रहा है, कितना मजा कर रहा है, इसकी पल-पल की जानकारी होती है।

मैं यह नहीं कह रही कि सोशल मीडिया पर होना खराब बात है, पर इससे जो हानि हो रही है वह यह है कि दूसरों की जिन्दगी देख-देखकर हम हीन भावना के शिकार होते जा रहे हैं। आज किसी भी अंधेड़ उम्र की महिला से बात करके देखिये, सब इसी बात से उदास या दुःखी हैं कि बाकी सब महिलाएँ तो इतनी अच्छी

जिन्दगी जी रही हैं, पर हम तो सिर्फ़ घर में ही बैठी हैं। जीवनशैली तो दूसरों की भी हमारी जैसी है, दुःखी वे भी हैं, काम घर का वह भी उतना ही करती हैं, पर फेसबुक पर तो सभी अपना अच्छा दिखाते हैं। और हम उसी को जिन्दगी समझ लेते हैं और परेशान हो जाते हैं।

अगर आप भी सोशल मीडिया पर हैं, तो एक बात समझ लें कि जो भी आप उस पर देख रही हैं वह सिर्फ़ एक हिस्सा है, न कि पूरा सच। अपने मन पर या दिमाग पर उस चीज़ का नकारात्मक असर न होने दें।

उस पर प्रत्येकजन सिर्फ़ यह दिखाना चाहते हैं कि 'देखो मेरी जिन्दगी कितनी अच्छी है।' पर असलियत में सबकी जिन्दगी एक जैसी ही होती है। हमारी जिन्दगी पर उस भ्रम का असर जितना कम होगा, हमारी आध्यात्मिक शक्ति उतनी ही अधिक होगी।

हमारी नई पीढ़ी के लिए तो यह बहुत जरूरी है कि वह समझे कि सोशल मीडिया का इस्तेमाल कैसे करना है। आपमें जो भी योग्यता है, आप जो भी कार्य करते हैं, अपने व्यापार के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करना एक समझदारी है। जैसे कि प्रत्येक वस्तु के दो पहलू होते हैं—सकारात्मक और नकारात्मक। वैसे ही फेसबुक के साथ भी है।

अगर आप इसे अच्छे से इस्तेमाल करेंगे, निश्चित सीमा में इस्तेमाल करेंगे, तो यह आपको फायदा पहुँचाएगा। पर किसी भी चीज़ की अति खराब होती है। अतः इसका अधिक प्रयोग आपको नुकसान भी पहुँचा सकता है। किसी भी तरह का गलत कार्य, समय की बर्बादी, ईर्ष्या भाव, किसी से भी मुकाबला या सिर्फ़ फेसबुक पर समय की बर्बादी आपको इस

आधुनिकता के समय में दिशाहीन कर देगी। खुद पर नियन्त्रण रखना आज के समय की सबसे बड़ी माँग है। अगर हमारे विचार ईर्ष्या, जलन और हीन भावना से भरते जा रहे हैं तो यह बहुत गलत बात है। क्योंकि हम जैसे भी हैं, जो भी हैं, वह सिर्फ हमारे विचारों से बनते हैं। इन्सान का दिमाग एवं उसकी सोच ही उसका व्यवहार बनाती है।

तो कैसे हमारी सोच को हम नफ़रत से प्यार की ओर, हीन भावना से सद्भावना की ओर, नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर, अन्धेरे से उजाले की ओर और आधुनिकता से अध्यात्म की ओर ले जा सकते हैं ?

अध्यात्म और कुछ भी नहीं, बस खुद को देखना है। ध्यान से, Consciously (जागरूक अवस्था में) खुद के विचारों को, आदतों को देखना है।

कहीं भेड़चाल में खुद को, अपने संस्कारों को, सही गलत की समझ को हम भूल तो नहीं रहे हैं, इस बात का ध्यान रखना है।

अध्यात्म की ओर कैसे बढ़ें ?

1. दिशा निर्धारण—सब कुछ भूलकर, सबसे पहले हमें किस पथ पर चलना है, उसका दिशा निर्धारण करें फिर ध्यान से अपनी दिशा की ओर बढ़ते रहें। आदर्श के रूप में हमें चार पहलुओं का पालन करना चाहिए—

To be- कुछ बनें।

To do- कुछ करो। (90 प्रतिशत लोग सिर्फ करने में ही रह जाते हैं, बाकी पहलुओं को भूल जाते हैं।)

To have- कुछ पाओ।

To Give- कुछ दो।

सिर्फ कार्य करते ही नहीं जाना है, उस कार्य से हम क्या बन रहे हैं, वह भी देखना जरूरी है। सही दिशा में कार्य करना जरूरी है। हिटलर और गाँधीजी दोनों ही बहुत अच्छे नेता थे, कार्यकर्ता थे। पर एक देश के लिए पिता बन गए, महात्मा बन गए और एक दुनिया का सबसे बड़ा खलनायक। हम क्या बन रहे हैं, वह सबसे

महत्त्वपूर्ण है न कि मात्र करना। इसलिए कहते हैं **Human Being** न कि **Human Doing**. कुछ भी कार्य करने से पहले (बनना) खुद से (करना) पूछें कि कहीं यह कार्य मुझे पतन की ओर तो नहीं ले जा रहा है।

एक समय की बात है कि एक स्कूल का प्रधानाचार्य जो नाज़ी हिटलर के केम्प में रह चुका था, उसने एक पत्र सभी छात्रों, अध्यापकों एवं अभिभावकों के लिए लिखा। उसने बताया कि मेरी आँखों ने वह देखा है जो किसी भी जीव को कभी नहीं देखना चाहिए। बड़े-बड़े इंजीनियरों ने गैस चेम्बर बनाए, पढ़े-लिखे डॉक्टरों ने बच्चों को ज़हरीली दवाइयाँ दी। जन्मते बच्चे को कार्य कुशल नर्सों ने मारा। मुझे पढ़ाई से डर लगने लग गया। आप सभी से मेरी एक दरख्वास्त है कि सबसे पहले अपने बच्चों को इंसान बनना सिखाएँ, न कि पढ़े-लिखे हैवान।

पढ़ना-लिखना, इतिहास, गणित एवं वर्तनी, ये सब तभी फायदेमन्द हैं जब हमारे युवाओं को पहले इंसानियत सिखाई जाए। सबसे पहले ज़रूरी है खुद का सही मार्गदर्शन और दिशा निर्धारण।

2. एकाग्रता से मनोनियन्त्रण—प्रतिदिन कुछ मिनट के लिए सब कुछ छोड़कर, किसी भी एक वस्तु या चीज पर एकाग्रता से ध्यान लगाएँ। हमारा दिमाग एक जंगली हाथी की तरह होता है। उसको वश में करना बहुत जरूरी है। दिमाग हमारी तब ही सुनेगा जब वह हमारे वश में होगा। इसलिए अपनी श्वास पर ध्यान दें, प्राणायाम करें, मन्त्र उच्चारण करें, सामायिक-स्वाध्याय करें या फिर भजन गाएँ। कुछ भी करें, पर ध्यान एकाग्र होना चाहिए। एकाग्रता न सिर्फ हमारे दिमाग को वश में रखती है, साथ ही दिमाग को तेज और तन्दुरुस्त भी बनाती है। मन-नियन्त्रण से ही स्व-नियन्त्रण आता है।

3. स्वच्छ वातावरण (Control your Environment)— ध्यान दें कि कौन-कौन और क्या-क्या आपके दिमाग को, आपकी सोच को प्रभावित कर रहा है। पीढ़ियों से हमारे बड़े-बुजुर्ग हमें समझाते आए हैं कि अच्छी संगति

में ही रहना चाहिए। बुरी संगति हमें डुबाती है। यहाँ बात अच्छे दोस्त चुनने की ही नहीं है, यहाँ बात है कि हम क्या देखते हैं, क्या पढ़ते हैं, किसे सुनते हैं, किसकी सुनते हैं। बात वातावरण की है। आपने सुना ही होगा—‘संघं शरणं गच्छामि’। जैसा आपका साथ होगा, वैसी ही सोच हो जाएगी और वैसे ही हम सब बन जायेंगे। ऐसे लोगों का साथ छोड़ दें जो हमें गलत रास्ते पर ले जाते हों, नीचा महसूस कराते हों, व्यसन युक्त हों, खराब विचार रखते हों। सही लोगों का साथ चुनें, जो आगे बढ़ने की, ऊँची, नीतिपूर्ण बात करें। जिनके विचार और आचार आगे ले जाने वाले हों, उन लोगों के साथ रहने से हम भी उन जैसे बन सकते हैं। इसलिए संगति का ध्यान रखें। गुरु चरणों में आते रहें। सभी घर के बड़े लोग बोलते रहते हैं कि महाराज साहब के दर्शन करने चाहिए। पर वह क्यों करने चाहिए, यह कोई नहीं बताता। वह इसलिए करने चाहिए ताकि इस भौतिकतावादी जिन्दगी में, सही रास्ते का मार्गदर्शन मिलता रहे। ताकि हम इस भाग-दौड़ और चकाचौंध में खो न जाएँ। जब भी गुरु चरणों में जाएँ तो अपने मन के ज़रूरी सवाल उनसे पूछें। अपनी पीड़ा उन्हें बताएँ, किसी दुविधा में हों तो गुरु भगवन्तों जैसा निवारण कोई और नहीं दे पायेगा। यदि कभी गलत भी किया हो तो उसका पश्चाताप ले कर, पाप से मुक्त हो जायें। यकीन मानिए, वह गलती आप दुबारा कभी नहीं करेंगे। सन्त दर्शन हमें हमेशा हमारी स्थिति का ध्यान कराता रहता है।

4. अच्छी किताबें पढ़ें—अपनी सोच हमेशा ऊँची रखें और उसके लिए अच्छी किताबें एक बहुत अहम किरदार निभाती है। महान् व्यक्तियों की किताबें, उनकी जीवनी पढ़ें। जब हम उनके बारे में पढ़ते हैं तो हमें उनकी सोच, विचार, आचार और अस्तित्व के बारे में पता चलता है। उनके जैसी मनोवृत्ति विकसित होती है। ऊँचे विचार और जीतने की मनोवृत्ति बनने लगती है। महान् व्यक्ति कैसे सोचते थे, वे क्या करते थे, उनके जैसा सोचेंगे तो विचार और भाव ऊँचे ही रहेंगे।

कुछ किताबें जो आप भी पढ़ सकते हैं, उनसे मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला—

1. ‘नमो पुरिसवरगंधहृत्थीणं’—आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. की जीवनी। यह पढ़कर आपको पता चलेगा कि कैसा व्यक्तित्व था हमारे गुरु का, क्या विचार थे, क्या सपना था हमारे संघ के लिए, मेरे और आपके लिए।
2. महात्मा गाँधी की जीवनी।
3. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम आजाद साहब पर कई पुस्तकें व उनकी आत्मकथा।
4. अन्य प्रेरक पुस्तकें।
5. **हमारी सोच क्या होनी चाहिए**— हम यह तो जानते हैं कि हमारी सोच अच्छी होनी चाहिए, पर क्या सोचें? यह किसी ने नहीं बताया। हमेशा सोचें कि हमें क्या मिला है, कितना मिला है। यह मनुष्य जीवन अपने आपमें चमत्कार है।

एक विचार रखें—मेरा आने वाला कल बहुत ही सुन्दर और आज से ज़्यादा चमकदार होगा। हर दिन बीते कल से बेहतर होगा। और उसके लिए हमें निरन्तर मेहनत करनी है। दिमाग को पूरी तरह सकारात्मक विचारों से भर दें। तेरा-मेरा से ऊपर उठें, प्यार, अपनापन, शान्ति, संवेदना, दया और दान की भावना बढ़ाएँ।

लोगों के मन काफी प्रकार के होते हैं— मन की भावनाएँ—

- ☆ सब कुछ मुझे मिल जाए वाली भावना।
- ☆ लोभी/ पदार्थ एवं धन प्रेमी।
- ☆ लड़ाकू/ मीन-मेख निकालने वाले लोग।
- ☆ समाधान प्रवृत्ति के लोग।
- ☆ देने वाली ऊँची प्रवृत्ति के लोग। पंखुड़ियाँ मरते हुए भी खुशबू ही देकर जाती हैं।
- ☆ आपको ही खुद में झाँककर देखना होगा कि हम किस प्रवृत्ति के हैं और कैसा बनना है।

अपनी किस्मत, आपके चरित्र पर निर्भर करती

है। आपका चरित्र आपकी आदतों से बनता है। आपकी आदतें आपके कार्य से बनती हैं और कार्य बनते हैं हमारी सोच से। अगर आप अपनी सोच बदलेंगे तो किस्मत अपने आप बदल जाएगी।

अगर आग से पानी को भी भाप बनाया जा सकता है, अगर जावन से दूध को भी दही बनाया जा सकता है, तो अपने निश्चय से आधुनिकता को भी अध्यात्म में बदला जा सकता है।

-19, उनियारा गॉर्डन, मोती डूंगरी रोड़, जयपुर

हे शक्ति पुञ्ज, हे महापुरुष

श्रीमती सविता शेखर चौपड़ा

हे शक्ति पुञ्ज, हे महापुरुष, देवानुप्रिय,
तुम कहाँ गये ?

यूँ छोड़कर सर्वस्य, शान्तिप्रिय मनस्वी,
बिना कोलाहल के,
चल दिये किस ओर तुम ?

मौन की भाषा को दे दिया एक नव अर्थ,
जानने में भी जिसको हम नहीं हैं समर्थ,
मूढ़ अज्ञानी हम, कुछ समझ पाते,
कि दे दी समता को एक नई परिभाषा,
न किसी की उपेक्षा, न किसी से आशा,
जीवन का मूलमन्त्र देकर,
तुम चल दिये किस ओर ?

राग-द्वेष, छद्म-मिथ्यात्व से परे,
शान्त-दान्त-ओज आभा से भरे,
जिन नहीं पर जिन स्वरूप,
अविचल अटल ब्रह्म स्वरूप
हे महामहिम शान्तिदूत,
तुम कहाँ गये ?

यूँ छोड़कर सर्वस्व, हे पूज्य गुरुवर !
कोलाहल बिना,
तुम चल दिये किस ओर ?

-20/33, रेणु पथ, मानसरवर, जयपुर (राज.)

आत्मीय निवेदन

श्री महेश नाहटा

- ❖ इतना ही लो थाली में, व्यर्थ न जाये नाली में।
- ❖ करनी है जीवन की रक्षा, कन्याओं की करो सुरक्षा।
- ❖ खाओ मन भर, जूठा न छोड़ो कण भर।
- ❖ चाहे जो मज़बूरी हो सामायिक-स्वाध्याय जरूरी हो।
- ❖ हाय हलो छोड़िए जय जिनेन्द्र बोलिए।
- ❖ मानवता के दो आधार, सदाचार और शाकाहार।
- ❖ स्वदेशी अपनाओ और देश को बचाओ।
- ❖ शाकाहार से जीवन दान, व्यसन-मुक्ति से जनकल्याण।
- ❖ कटती गायें करे पुकार, बन्द करो यह अत्याचार।
- ❖ गाय बचेगी देश बचेगा।
- ❖ बन्द करो-बन्द करो, मांस निर्यात बन्द करो।
- ❖ जहाँ पर आपस में प्रेम है, वहीं पर सुख और चैन है।
- ❖ जीवन में सब सहना सीखो, प्रेम से सब रहना सीखो।
- ❖ इस धरती पर सभी प्राणियों को जीने का अधिकार है।
- ❖ जीओ और जीने दो यही सब धर्मों का आधार है।
- ❖ मिलन उत्सव है और मिलकर काम करना महोत्सव है।

-नगरी, धमतरी (छत्तीसगढ़) 9406201351

कोरोना वायरस : प्रकृति का कहर या... प्रकृति की चेतावनी?

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

प्रिय विकास जी,

आपका पत्र मिला, जिसमें आपने मुख्य रूप से लिखा कि “पिछले महीने ही मैं अपने कुछ व्यापारिक मित्रों के साथ साझेदारी में दवाइयों की नई फैक्ट्री शुरू करने हेतु कच्चा माल (जो कि चीन में अत्यन्त सस्ता मिलता है) खरीदने हेतु चीन की यात्रा पर गया था। हमने वहाँ के कुछ निर्माताओं से उनकी फैक्ट्रियों में मुलाकात भी की। उनकी माल बनाने की हिंसक प्रक्रिया को देखना हमारी ज़िन्दगी का बहुत ही बुरा अनुभव रहा, किन्तु इसी बीच वहाँ पर कोरोना वायरस के प्रकोप के कारण हमें अपने कार्यों को अधूरा छोड़कर ही वापस भारत लौटना पड़ा। हमने देखा कि चीन में हर किसी की आँखों में मौत का भय नज़र आ रहा है। हालात दिन-ब-दिन बदतर होते गए और देखते ही देखते सिर्फ चीन का व्यस्ततम शहर शंघाई ही नहीं, बल्कि पूरा चीन सुनसान सा हो गया। लोग अपने घरों में ही कैद से हो गए हैं, खाने-पीने की सामग्री लगभग समाप्त सी हो गयी है। वहाँ के कई लोग अपने ज़िन्दा पालतू पशुओं को बालकनी से सड़क पर फेंककर घरों में दुबक गए हैं और अपने व्यापार के माध्यम से पूरी दुनिया पर बादशाहत जताने वाला चीन आज इस कोरोना वायरस के सामने लाचार और बेबस बना अपने हजारों नागरिकों की मौत पर आँसू बहा रहा है। भारत लौटने के बाद भी मेरी आँखों के सामने वे ही सब हिंसा और मातम के दृश्य नज़र आ रहे हैं। मुझे समझ नहीं आ रहा कि ऐसा कैसे हो सकता है। मैं अभी भी सामान्य नहीं हो पा रहा हूँ, कुछ समझ नहीं आ रहा कि क्या करूँ?”

प्रिय विकासजी, यह आपके भीतर की छिपी हुई करुणा या यूँ कहूँ कि आपके भीतर की संवेदना है, जो हिंसाकारी दृश्यों को देखने के बाद आपको महसूस हो

रही है। लोभ के वशीभूत होकर आपका दिमाग हिंसक पदार्थों से दवाइयाँ बनाकर मुनाफ़ा कमाने की सोच रहा है, लेकिन जैन संस्कारों से सींचा गया आपका अन्तर्मन लोभ की मिट्टी को हटाकर उसके नीचे दबी संवेदना को आंशिक रूप से प्रकट कर रहा है।

कोरोना वायरस का यह प्रकोप एक अपेक्षा से प्रकृति की प्रतिक्रिया है। प्रकृति प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से अनेक बार चेतावनी देती है, लेकिन मानव उन सभी चेतावनियों को अनदेखा करता है और अपने लोभ के कारण क्रूरता की सभी हदें पार करते हुए प्रकृति के साथ कठोर जुल्म करता है और परिणाम स्वरूप प्रकृति का कहर बरसता है। पूरा संसार जानता है कि चीन ने किसी पशु-पक्षी को नहीं छोड़ा, सिर्फ गाय, भैंस, बकरी, मुर्गी जैसे पालतू पशु ही नहीं मछलियाँ जैसे समुद्री जीव ही नहीं, बल्कि साँप, चमगादड़, बिच्छू, बन्दर, खरगोश, बिल्ली, मेंढ़क, कछुए के साथ साथ छिपकली-गिरगिट जैसे जीव तथा कीड़े-मकोड़े इत्यादि असीमित प्राणियों के खून से पूरा चीन लाल हो चुका है। यहाँ तक कि चीन में बाघों, कुत्तों और गधों को भी निर्ममता से मारकर उनके अंगों से दवाइयों का निर्माण हो रहा है। निरीह और निर्दोष प्राणियों की आह कभी खाली नहीं जाती। प्रकृति निर्दोष के प्रति होने वाले अन्याय को कैसे सहन करेगी?

चीनी जाँच अधिकारी खुद इस बात की पुष्टि कर रहे हैं कि मनुष्यों द्वारा साँप अथवा चमगादड़ या अन्य कोई जीव के भक्षण से ही यह विनाशकारी कोरोना वायरस फैला है। कोरोना वायरस से भयभीत अब चीन की सरकार स्वयं जनता को मांसाहार छोड़कर शाकाहार अपनाने को कह रही है। काश प्रकृति की इस चेतावनी के पहले ही इन्सान सम्भल जाता तो इतना खतरनाक मज्जर कदापि नहीं दिखता और भविष्य में भी

प्रकृति के ऐसे कहर की सम्भावना नहींवत् हो जाती।

यह दुर्भाग्य ही है कि हमारा देश भारत भी इस हिंसा की रक्तिम लालिमा से अछूता नहीं रहा और ऋषि मुनियों की पवित्र भूमि कहे जाने वाले इस आर्यावर्त से हर वर्ष छोटे-बड़े अरबों जीवों को जिन्दा अथवा मुर्दा रूप में निर्यात किया जा रहा है। भारत में हर महीने अरबों रुपये की हिंसक दवाइयों एवं मांसाहारी पदार्थों का आयात किया जा रहा है। यह भी दुर्भाग्य का विषय है कि अहिंसा धर्म को मानने वाले अनेक लोग प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से निर्यात-आयात एवं शेरार बाज़ार के माध्यम से चीन में व्याप्त क्रूरतम जीव हिंसा से जुड़े हुए हैं।

जैसा कि आपने बताया कि आप व्यापारिक मित्रों के साथ अपनी दवाइयों तथा सौन्दर्य प्रसाधनों की नई फैक्ट्री के लिए कच्चे माल का ऑर्डर करने के लिए चीन गए थे। तो यहाँ पर प्रश्न यह है कि आप ही नहीं बल्कि हर दवा निर्माता जानता है कि भारत में निर्मित अंग्रेजी दवाइयों का कच्चा माल 70 प्रतिशत से भी ज़्यादा सिर्फ चीन से आयात होता है। चीन में निर्मित पदार्थों में हिंसा, मांसाहार की प्रबलतम सम्भावना है और यह सब जानते हुए भी इस पाप कार्य में कदम बढ़ाना क्या अहिंसा धर्म के साथ विश्वासघात नहीं है? ज़्यादा लोभ के कारण विदेशी पदार्थों को आयात करना क्या देश के साथ गद्दारी नहीं है?

विकासजी, आपने यह भी लिखा है कि पीढ़ियों से जमा हुआ आपका कपड़ों का व्यापार खूब अच्छा चलता है और उसमें से समय निकालकर आप नियमित रूप से साधु-सन्तों के पावन सान्निध्य का लाभ लेते रहते हैं, सामायिक-स्वाध्याय के प्रति भी रुचि है तो फिर बिना प्रबल आवश्यकता के आपको नया व्यापार वह भी हिंसाकारी व्यापार करने की आवश्यकता ही क्यों हुई? एक बार के लिए यदि यह भी मान लें कि आपको अपने मौजूदा व्यापार से आवश्यकता अनुसार

कमाई नहीं भी हो रही है तो भी हिंसाकारी व्यापार करने के लिए एक जैन का अन्तर्मन कैसे गवाही दे सकता है? आप अपनी अन्तरात्मा की आवाज को सुनते हुए अपने भीतर की संवेदना को और अधिक विकसित करते जाएँ, तो कोई भी ऐसा हिंसाकारी व्यापार करने की इच्छा ही नहीं होगी। दुनिया भर से करोड़ों व्यापारी या कम से कम भारत के आप जैसे लाखों व्यापारी भी यदि चीन से हिंसक पदार्थों का व्यापार बन्द कर दें तो करोड़ों बेजुबान प्राणियों की हिंसा रुक सकती है।

सिर्फ गाड़ी के आगे तिरंगा लगाना या कमीज की जेब पर तिरंगे का बैज लगाना सच्ची देश-भक्ति नहीं है, बल्कि हर भारतवासी भारत में बनी सात्त्विक वस्तुओं का प्रयोग करे यह भी सच्चे देशप्रेम की निशानी है। वैसे ही सिर्फ नाम के आगे जैन लगाने मात्र से अहिंसा भगवती की आराधना नहीं हो सकती, बल्कि घर-परिवार-व्यापार में अनर्थ की हिंसा का त्याग करते हुए अर्थ की हिंसा को भी मज़बूरी एवं त्याज्य समझते हुए उसे निरन्तर अल्पतम करते रहना ही जैनत्व युक्त जीवन शैली है।

इसलिए प्रिय विकासजी, आवश्यकता है जागरूक होने की और जागृति फैलाने की। आप अपने समय और श्रम का उपयोग स्वयं भी हिंसा से पीछे हटने और अपने व्यापारिक मित्रों के साथ-साथ अन्य लोगों को भी हिंसा से पीछे हटाने में करें तो यह पहल भी निर्दोष पशुओं की रक्षा में सहयोगी होगी, जीवदया का अनूठा कार्य होगा और आपके अन्तर्मन को भी अत्यन्त शान्ति मिलेगी।

हर मानव प्रकृति का भक्षक नहीं रक्षक बने इसी मंगल भावना के साथ ...

आपका कल्याण मित्र
'तीर्थ'

-"JINSHASAN", B-102, Veetrag City,
Jaisalmer bypass Road, Jodhpur-342008 (Raj.)

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की जैनागम स्तोक वारिधि परीक्षा कक्षा प्रथम (5 जनवरी, 2020) के प्रश्नोत्तर

- प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए- 15 × 1 = 15
- (a) जहाँ जीव अशुभ कर्मों का फल अधिक भोगता है, उसे कहते हैं-
 (क) नरक गति (ख) तिर्यञ्च गति
 (ग) मनुष्य गति (घ) देव (क)
- (b) चतुर्थ पर्याप्ति का नाम है-
 (क) आहार (ख) भाषा
 (ग) श्वासोच्छ्वास (घ) शरीर (ग)
- (c) यह शरीर सभी संसारी जीवों में पाया जाता है-
 (क) आहारक (ख) वैक्रिय
 (ग) औदारिक (घ) तैजस (घ)
- (d) मिथ्यात्वी का प्रकार नहीं है-
 (क) अभवी (ख) भवी
 (ग) सम्यक्त्वी (घ) पडिवाई (ग)
- (e) रसनेन्द्रिय के विषय होते हैं-
 (क) 05 (ख) 02
 (ग) 12 (घ) 60 (क)
- (f) आभ्यन्तर तप का भेद है-
 (क) रसपरित्याग (ख) ऊनोदरी
 (ग) विनय (घ) प्रतिसंलीनता (ग)
- (g) विनय के भेद होते हैं-
 (क) 03 (ख) 08
 (ग) 10 (घ) 05 (ग)
- (h) जिन प्रवृत्तियों से श्रद्धा में अधिक विशिष्टता आती हो, उसे कहते हैं-
 (क) दूषण (ख) भूषण
 (ग) लिङ्ग (घ) प्रभावना (ख)
- (I) "संलाप" किसका भेद है-
 (क) भावना (ख) यतना
 (ग) आगार (घ) स्थानक (ख)
- (j) मोक्ष की तीव्र इच्छा कहलाती है-
 (क) सम (ख) संवेग
 (ग) निर्वेद (घ) आस्था (ख)

(k) देश मूलगुण पचचक्खाण के भेद हैं-

(क) 02

(ख) 05

(ग) 10

(घ) 04

(ख)

(l) आयम्बिल किस तप का भेद है-

(क) संकेय

(ख) सागारं

(ग) अद्धा

(घ) णिरवसेसं

(ग)

(m) द्रव्य की अपेक्षा जीव है-

(क) शाश्वत

(ख) अशाश्वत

(ग) अनित्य

(घ) परिवर्तनशील

(क)

(n) पेट खाली होने से कौनसी संज्ञा की उत्पत्ति होती है-

(क) भय संज्ञा

(ख) आहार संज्ञा

(ग) मैथुन संज्ञा

(घ) परिग्रह संज्ञा

(ख)

(o) अक्रिया का फल है-

(क) तप

(ख) संयम

(ग) अनास्रव

(घ) सिद्धि

(घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए-

15 × 1 = 15

(a) कुंथुआ तेइन्द्रिय जाति का भेद है।

(हाँ)

(b) जीवन जीने की शक्ति विशेष को 'प्राण' कहते हैं।

(हाँ)

(c) बाल तप करने से मनुष्य गति का बन्ध होता है।

(नहीं)

(d) 'मिश्र मोहनीय' चारित्र मोहनीय की प्रकृति है।

(नहीं)

(e) परमाधार्मिक देवों के 15 भेद होते हैं।

(हाँ)

(f) साधुजी का पाँचवाँ महाव्रत 'ब्रह्मचर्य' है।

(नहीं)

(g) गुणियों के मलिन वेश देखकर घृणा करना वितिगिच्छा है।

(हाँ)

(h) प्रभावना के पाँच भेद होते हैं।

(नहीं)

(l) जीव शाश्वत अर्थात् उत्पत्ति विनाश रहित है।

(हाँ)

(j) भव्य जीव कर्मों को क्षय करके नरक में जाता है।

(नहीं)

(k) सर्व मूलगुण पचचक्खाण के 5 भेद हैं।

(हाँ)

(l) 'अतिथि-संविभाग व्रत' शिक्षा व्रत का एक भेद है।

(हाँ)

(m) समुच्चय जीवों में तीनों भंग पाये जाते हैं।

(हाँ)

(n) देवगति से आये हुए जीव में लोभ एवं परिग्रह संज्ञा अधिक पाई जाती है।

(हाँ)

(o) पचचक्खाण का फल वोदाण होता है।

(नहीं)

प्र. 3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए-

15 × 1 = 15

(a) आहारक शरीर

(क) अघाती कर्म

चौदह पूर्वधारी

(b) विभंग ज्ञान	(ख) रसनेन्द्रिय	अज्ञान
(c) गोत्र कर्म	(ग) 10	अघाती कर्म
(d) कषैला	(घ) आगार	रसनेन्द्रिय
(e) अन्तराय कर्म	(च) श्री भगवती सूत्र	घाती कर्म
(f) अभ्याख्यान	(छ) 7	पाप
(g) विनय	(ज) श्री पन्नवणा सूत्र	10
(h) स्थानक	(झ) विज्ञान	6
(i) आस्था	(य) अज्ञान	लक्षण
(j) गुरु-निग्रह	(र) 24 दण्डक	आगार
(k) सुपच्चक्खाण टुपच्चक्खाण	(ल) घाती कर्म	भगवती सूत्र
(l) देश उत्तरगुण पच्चक्खाण के भेद	(व) 6	7
(m) संज्ञा का थोकड़ा	(क्ष) पाप	श्री पन्नवणा सूत्र
(n) दस संज्ञाएँ	(त्र) लक्षण	24 दण्डक
(o) ज्ञान का फल	(ज्ञ) चौदह पूर्वधारी	विज्ञान

प्र.4 मुझे पहचानो-

15 × 1 = 15

(a) मैं आने वाले कर्मों को आत्मा के साथ चिपका देती हूँ।	लेश्या
(b) मेरे क्षय से जीव में अनन्त आत्म सामर्थ्य गुण प्रकट होता है।	अन्तराय कर्म
(c) मुझमें मोहनीय कर्म में मात्र सूक्ष्म संज्वलन लोभ का उदय शेष रह जाता है।	सूक्ष्म सम्प्राय गुणस्थान
(d) मैं एक ऐसा द्रव्य हूँ, जो सभी द्रव्यों को आकाश देता हूँ।	आकाशास्तिकाय
(e) काल द्रव्य मेरा एक भेद है।	षट् द्रव्य/अरूपी द्रव्य/अजीव द्रव्य
(f) मेरे द्वारा लगे हुए दोषों की आलोचना करके आत्मा को शुद्ध किया जाता है।	प्रायश्चित्त
(g) मेरी बाह्य रुचि से आन्तरिक रुचि का ज्ञान होता है।	लिङ्ग
(h) मेरा स्वभाव संसार की उदासीनता है।	निर्वेद
(i) मैं कठिन तपस्या करके धर्म की प्रभावना करता हूँ।	तपस्वी प्रभावक
(j) सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप मेरे उपाय हैं।	मोक्ष
(k) मेरा एक भेद दिवस-चरिम है।	अद्धा तप
(l) पाँचों महाव्रतों का पालन करना, मेरे पच्चक्खाण के भेद हैं।	सर्व मूलगुण पच्चक्खाण
(m) मेरे कर्म के उदय से जीव में आहार संज्ञा उत्पन्न होती है।	क्षुधा वेदनीय कर्म
(n) मेरा फल संयम है।	पच्चक्खाण
(o) मैं वोदाण का फल हूँ।	अक्रिया

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए-

8 × 2 = 16

(a) भंग किसे कहते हैं?

उ. विकल्प रचना को भंग कहते हैं। अथवा कोई भी व्रत-नियम, त्याग-प्रत्याख्यान जितने प्रकार के करण योगों से ग्रहण किया जाता है, उन प्रकारों को भंग कहते हैं।

- (b) छेदोपस्थापनीय चारित्र कौनसे तीर्थङ्कर के शासनकाल में होता है ?
 उ. छेदोपस्थापनीय चारित्र प्रथम और अन्तिम तीर्थङ्कर के शासनकाल में होता है।
 (c) श्रद्धान किसे कहते हैं ?
 उ. तत्त्व श्रद्धा को जागृत करने तथा सुरक्षित रखने के उपायों को 'श्रद्धान' कहते हैं।
 (d) मन शुद्धि किसे कहते हैं ?
 उ. मन से वीतराग देव व सुगुरु का स्मरण, ध्यान और गुणगान करें, अन्य सरागी देव का नहीं करें।
 (e) यतना किसे कहते हैं ?
 उ. सम्यक्त्व रूप अनमोल धन को मिथ्यात्व रूप चोरों से सुरक्षित रखने के प्रयत्न को 'यतना' कहते हैं।
 (f) उत्तरगुण पच्चकखाण के प्रथम दो भेद लिखिए।
 1. सर्व उत्तरगुण पच्चकखाण 2. देश उत्तरगुण पच्चकखाण
 (g) नारकी से आये हुए जीवों में कौन-कौनसी संज्ञा अधिक पाई जाती है ?
 उ. नारकी से आये हुए जीवों में क्रोध और भय संज्ञा अधिक पायी जाती है।
 (h) 'सवणे णाणे' थोकड़े का उल्लेख कहाँ पर किया गया है ?
 उ. श्री भगवती सूत्र के दूसरे शतक के पाँचवें उद्देशक में 'सवणे णाणे' थोकड़े का उल्लेख है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए-

8 × 3 = 24

- (a) वैक्रिय शरीर किसे कहते हैं तथा इसके प्रकारों का भी उल्लेख कीजिए।
 उ. जिस शरीर में विविध अथवा विशेष प्रकार की क्रियाएँ होती हैं, उसे वैक्रिय शरीर कहते हैं। जैसे एक रूप होकर अनेक रूप धारण करना, छोटा-बड़ा शरीर बनाना, दृश्य-अदृश्य रूप बनाना आदि। वैक्रिय शरीर दो प्रकार का होता है-1. भव प्रत्यय-देवों और नारकों में जन्म के साथ ही होता है।
 2. लब्धि प्रत्यय-मनुष्य और तिर्यञ्चों को जप-तप आदि विशिष्ट साधना द्वारा लब्धि से प्राप्त होता है।
 (b) अवधिज्ञान को परिभाषित करते हुए बताइये की यह कैसे होता है ?
 उ. इन्द्रियों और मन की सहायता के बिना साक्षात् आत्मा से होने वाले रूपी पदार्थों के मर्यादित ज्ञान को 'अवधिज्ञान' कहते हैं।
 यह ज्ञान देवों-नारकों में जन्म से ही तथा संज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय व गर्भज मनुष्य में क्षयोपशम विशेष से होता है। अवधिज्ञान से मन की बात भी जानी जा सकती है।
 (c) सकाम एवं अकाम निर्जरा को परिभाषित कीजिए।
 उ. सकाम निर्जरा-सम्यक्त्व के सद्भाव में जो व्रत-नियम, त्याग, तप आदि किया जाता है, उनसे होने वाली कर्मों की निर्जरा को 'सकाम निर्जरा' कहते हैं। यह निर्जरा ही मुक्ति को प्राप्त कराने में सहायक बनती है।
 अकाम निर्जरा-मिथ्यात्व और अज्ञान के सद्भाव में होने वाली कर्मों की निर्जरा को 'अकाम निर्जरा' कहते हैं। प्रत्येक जीव में बन्धे हुए कर्म उदय में आकर आत्मा से अलग होते रहते हैं, उसे भी अकाम निर्जरा कहते हैं।
 (d) ध्यान किसे कहते हैं ? इसके भेदों के नाम लिखिए।
 उ. मन, वचन और काय को किसी एक विषय पर एकाग्र करना अथवा केन्द्रित करना 'ध्यान' कहलाता है।
 कि सी भी कार्य में जब स्थिर अध्यवसाय हो जाते हैं तो उसे भी 'ध्यान' कहते हैं।

- अन्तर्मुहूर्त के लिए एक विषय के बारे में एकाग्र होकर चिन्ता निरोध करना 'ध्यान' कहलाता है।
- नोट-उपर्युक्त तीन में से कोई एक परिभाषा मान्य।
- ध्यान के चार भेद हैं-1. आर्तध्यान, 2.रौद्रध्यान, 3. धर्मध्यान, 4. शुक्लध्यान।
- (e) शुद्धि किसे कहते हैं? काय शुद्धि का अर्थ भी लिखिए।
- उ. विकृत श्रद्धा के निराकरण के प्रयत्न को 'शुद्धि' कहते हैं।
- काय शुद्धि-काय से श्री वीतराग देव व सुगुरु को वन्दना-नमस्कार करें, अन्य सरागी देव को नहीं करें।
- (f) अहो भगवन् ! जीव संयत है, असंयत है या संयतासंयत है? स्पष्ट कीजिए।
- उ. समुच्चय जीवों में तीनों भेद हैं और मनुष्य में भी तीनों भेद हैं। तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में दो भेद हैं-असंयत और संयतासंयत। शेष 22 दण्डक में केवल असंयत ही हैं।
- (g) संज्ञा की उत्पत्ति के अन्तिम तीन कारण लिखिए।
- उ. नोट :-इनमें से किसी भी एक संज्ञा के कारण मान्य-
1. आहार संज्ञा-1. क्षुधा-वेदनीय कर्म के उदय से, 2. आहार का चिन्तन करने से और 3. आहार के दृश्य देखने से।
 2. भय संज्ञा-1. भय मोहनीय कर्म के उदय से, 2. भय का चिन्तन करने से और 3. भय के दृश्य देखने से।
 3. मैथुन संज्ञा-1. वेद मोहनीय कर्म के उदय से, 2. मैथुन सम्बन्धी चिन्तन करने से और 3. मैथुन के दृश्य देखने से।
 4. परिग्रह संज्ञा-1. लोभ मोहनीय कर्म के उदय से, 2. परिग्रह का चिन्तन करने से और 3. परिग्रह के दृश्य देखने से।
- (h) सवणे-णाणे प्रश्नोत्तर के आधार पर पर्युपासना, ज्ञान एवं विज्ञान का फल लिखिए।
- उ. पर्युपासना से 'श्रवण' अर्थात् सम्यक् शास्त्रों का सुनना मिलता है। ज्ञान का फल 'विज्ञान'(हेयोपादेय का विशेष ज्ञान) है। विज्ञान का फल 'पच्चक्खाण' है।

सन्तोषी सदा सुखी

श्री शिखरचन्द छाजेड़

पाकर पृथ्वी पूरी
तृष्णा सदा अधूरी
तृष्णा का ही प्रभाव
चिन्ता-भय-तनाव
बात-बात में बेबनाव
हिंसा-झूठ-चोरी
अब्रह्म-परिग्रह का भाव
क्रोध-मान-माया लोभ से लगाव
कदापि न बहें संसार-बहाव
सन्तोषी सदा सुखी

रखें सदा यही भाव
अरे! चक्रवर्ती सम्राट्-बलदेव-वासुदेव
माण्डलिक-राजा-राणा-सूरी
और अकर्म भूमि युगली
ये सारे के सारे लोग
भोग लें सारे भोग
फिर भी- तृप्ति हुई नहीं पूरी
बुझती नहीं - पेट्रोल से कभी आग
उपाय बस एक सबूरी
वर्ना पाकर पृथ्वी पूरी
तृष्णा सदा अधूरी
तृष्णा सदा अधूरी

-करही (म.प्र.)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं



नूतन साहित्य



श्री गौतमचन्द जैन

विचार मंथन-लेखक-गौतम पारख, सम्पादन-गौरी शंकर शर्मा (सेवानिवृत्त प्राचार्य)। प्रकाशक-रांका फेमिली फाउण्डेशन, अध्यात्म एवं संस्कृति तथा स्वास्थ्य एवं शिक्षा सेवार्थ, मुम्बई (महाराष्ट्र), द्वितीय संस्करण-2019-2020, पृष्ठ-314

लेखक की पूर्व में 'विचार प्रवाह' के नाम से प्रथम रचना प्रकाशित हुई है। उसके पश्चात् यह द्वितीय विचार संग्रह की कृति 'विचार मंथन' शीर्षक से प्रकाशित हुई है। लेखक ने व्यावहारिक जगत् के विभिन्न विषयों पर 74 शीर्षकों से छोटे-छोटे आलेख प्रस्तुत रचना में संजोये हैं। लेखक ने आलेखों में अपने विचारों के साथ-साथ स्वयं के अनुभव एवं अनेक उदाहरण भी दिये हैं, जिनसे विषय एकदम स्पष्ट हो जाता है। प्रत्येक अध्ययन कहानियों एवं घटनाओं के माध्यम से अत्यन्त रोचक एवं प्रभावोत्पादक तथा हृदयग्राही हो गया है। आध्यात्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राजनैतिक एवं धार्मिक आदि सभी विषयों का समावेश प्रस्तुत रचना में किया गया है। लेखक ने अपने विचार स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किये हैं, जो कि उपदेशात्मक भाषा शैली में न होकर कथनात्मक और सलाह के रूप में हैं तथा स्वयं को प्रतिबोध अथवा शिक्षा देने के रूप में हैं। इसलिये पाठक के हृदय में सीधे प्रवेश कर जाते हैं। प्रत्येक अध्ययन के प्रारम्भ में विषय से सम्बन्धित मुख्य तथ्य एक परिच्छेद के रूप में प्रस्तुत किये गये हैं और कहीं-कहीं पर सुन्दर एवं प्रेरणादायी चिन्तन के कण प्रस्तुत किये गये हैं। पाठक के मन में पुस्तक को निरन्तर पढ़ने की जिज्ञासा बनी रहती है। आलेखों में दिये गये कई सूत्र एवं शिक्षायें जीवन में ग्रहण करने योग्य एवं आचरण योग्य हैं। सम्पूर्ण पुस्तक पठनीय है और जीवन को सम्यक् दिशा एवं मार्ग प्रदर्शित करती है।

सम्यग्दर्शन की विधि-लेखक-सीए. जयेश मोहनलाल शेठ, सम्पादन-मनीष मोदी। प्रकाशक-

शैलेश पूनमचन्द शाह, प्राप्ति स्थल-(1) शैलेश पूनमचन्द शाह, 402, पारिजात, स्वामी समर्थ मार्ग, (हनुमान क्रॉस रोड 2), छत्रपति शिवाजी स्कूल के सामने, विले पार्ले-पूर्व, मुम्बई-400057 (महाराष्ट्र), फोन 022-26133048, 9892436799, 9324337326, (2) जयकला नलिन गाँधी, सी-502, एडवेंट नील रेज़िडेन्सी, पूर्णप्रज्ञा हाई स्कूल के पीछे, भरूचा रोड, भाटला देवी मन्दिर के सामने, दहिसर-पूर्व, मुम्बई-400068 (महाराष्ट्र), फोन 022-28952530, 9833677447, 9821952530, पृष्ठ-234+3 = 237

प्रस्तुत रचना 'सम्यग्दर्शन की विधि' लेखक की मौलिक रचना है और स्वयं की अनुभूति एवं साक्षात्कार के आधार पर लिखी गई है। विभिन्न ग्रन्थों/शास्त्रों यथा-पञ्चाध्यायी, समयसार, प्रवचनसार, नियमसार, पञ्चास्तिकाय, अष्ट पाहुड आदि को आधार बनाकर सम्यग्दर्शन का विस्तृत सुन्दर तथा वास्तविक अर्थ एवं विवेचन किया गया है। लेखक ने पुस्तक के प्रारम्भ में ही बताया है- "जो जीव, राग-द्वेष रूप परिणमित होने पर भी, मात्र शुद्धात्मा में (द्रव्य, आत्मा में = स्वभाव में) ही 'मैंपन' (एकत्व) करता है और उसी का अनुभव करता है, वही जीव सम्यग्दृष्टि है। यही सम्यग्दर्शन की विधि है।"

लेखक ने प्रस्तुत रचना में सम्यग्दर्शन का महत्त्व बताते हुए लिखा है कि सम्यग्दर्शन मोक्षमार्ग का द्वार है। निश्चय सम्यग्दर्शन के बिना मोक्षमार्ग में प्रवेश ही नहीं होता और मोक्षमार्ग में प्रवेश के बिना अव्याबाध सुख का मार्ग ही साध्य नहीं होता। मोक्षमार्ग में प्रवेश और बाद के पुरुषार्थ से ही सिद्धत्व रूप फल मिलता है। सम्यग्दर्शन के बिना भव-भ्रमण भी नहीं कटता है। इसलिये मानव भव में यदि कुछ भी करने योग्य है तो वह एकमात्र निश्चय सम्यग्दर्शन ही सर्वप्रथम प्राप्त करने योग्य है, जिससे स्वयं को मोक्षमार्ग में प्रवेश मिले और पुरुषार्थ प्रस्फुटित होने पर आगे सिद्ध पद की प्राप्ति हो।

सम्यग्दर्शन के लिए भेदज्ञान आवश्यक है। अर्थात् पुद्गल और उसके लक्ष्य से होने वाले भावों से आत्मा का भेदज्ञान जरूरी है। सर्वप्रथम शरीर को आत्मा न समझना और आत्मा को शरीर न समझना अर्थात् शरीर में आत्मबुद्धि होना, मिथ्यात्व है। शरीर तो पुद्गल (जड़) द्रव्य से निर्मित है और आत्मा (चेतन) द्रव्य है जो पुद्गल से भिन्न है। इसलिये पुद्गल से भेदज्ञान और स्व के अनुभव रूप ही वास्तविक सम्यग्दर्शन होता है।

सम्यग्दर्शन के लिए योग्यता के बारे में मूलगुणों को आवश्यक बताया गया है। मद्य, मांस और मधु के त्याग के साथ पाँच अणुव्रतों के पालन को गृहस्थ के 8 मूल गुण बताया गया है। इसके साथ ही मैत्री, प्रमोद, करुणा और माध्यस्थ भाव अर्थात् आध्यात्मिक अभिप्राय पूर्वक उदासीनता/तटस्थ भाव रखना चाहिये।

लेखक ने प्रस्तुत रचना में 'धन्यवाद! स्वागतम् (Thank You! Welcome!) का ऐसा सूत्र दिया है जिससे प्रत्येक व्यक्ति का जीवन जीने का नज़रिया ही बदल जाता है और वह हर परिस्थिति में सुखी एवं प्रसन्न रह सकता है। यह निश्चित है कि हमें जो भी दुःख आता है, उसमें दोष हमारे पूर्व पापों का ही होता है, अन्य किसी का भी नहीं। जो अन्य कोई दुःख देते ज्ञात होते हैं, वे तो मात्र निमित्त ही हैं। उसमें उनका कुछ भी दोष नहीं है। वे तो आपको, आपके पाप से छुड़ाने वाले हैं।

इसलिये उनको धन्यवाद दें और उनका स्वागत करें ताकि हमारे पूर्व के पाप कर्म नष्ट हों और नवीन कर्मों का बन्ध भी नहीं हो। इस प्रकार हम पूर्व के पापों का/दुष्कृत्य का प्रतिक्रमण करके नवीन पाप कर्म/दुष्कृत्य नहीं करने का प्रत्याख्यान करते हैं और समभाव-सामायिक में रहते हैं एवं वास्तव में सुखी होते हैं।

लेखक ने अनेक उदाहरण देकर सम्यक् प्रकार से स्पष्ट किया है कि किस प्रकार से हम पुराने कर्मों को समभाव से सहन कर नवीन कर्मों के बन्ध से बच सकते हैं और पुराने कर्मों की निर्जरा/क्षय कर सकते हैं। सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के लिए बारह भावनाओं का प्रतिदिन चिन्तन करने और पञ्चपरमेष्ठी का चिन्तन करने के भी निर्देश/सुझाव दिये गये हैं। साथ ही कुछ सर्वाधिक महत्वपूर्ण बिन्दु भी संक्षेप में मनन करने हेतु प्रस्तुत किये हैं जो प्रत्येक पाठक को मनन करने चाहिये। अन्त में सुन्दर, प्रेरक तथा जीवन निर्माणकारी एवं सम्यग्दर्शन प्रकट कराने वाली चिन्तन कणिकाएँ प्रस्तुत की गई है और समाधिमरण के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण चिन्तन दिया गया है।

यह सभी मुमुक्षु जनों के लिए आद्योपान्त पठनीय एवं जीवन में आचरणीय है।

-पूर्व डी.एस.ओ., 70, 'जयणा', विश्वकर्मा नगर-द्वितीय, महारानी फॉर्म, जयपुर (राजस्थान)

भक्ति एवं आस्था का रूप

श्री जिनेन्द्र कुमार जैन 'प्रेम'

श्री सम्पतराजजी भाण्डावत के बंगले में गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. विराज रहे थे। आचार्यश्री को मैं 'बाबजी सा' से सम्बोधित करता था।

गोचरी के बाद बाहर धूप में विराज रहे थे। तत्समय धन्नामुनिजी आदि सन्त सेवा में थे। बाबजी सा के चरणों के नाखूनों को सन्त अपनी अंगुली के नाखूनों से तोड़-तोड़कर कागज के पन्ने में डाल रहे थे। बाबजी सा ने फरमाया सन्तों को कि नाखूनों को

जाकर ध्यान से परठ कर आओ।

मेरे पर बाबजी सा की कृपा थी मैंने बाबजी सा की आज्ञा से चरणों के टूटे हुए नाखूनों को अपनी झोली में लेने की जिद्द करली। बाबजी सा ने पूछा- 'भोलिये, तू क्या करेगा इनका?' मैंने भोलेपन में कहा दिया कि- 'अब ये चरणों के नाखून मेरी सम्पत्ति है।' बाबजी सा ने कृपा कर दी। वह सम्पत्ति आज भी मेरे पास सुरक्षित थाती है।

-346, दरीबा कालान, कूंचा सेठ के सामने, चाँदनी चौक, दिल्ली-110006

समाचार विविधा

पूज्य आचार्यप्रवर की सन्निधि में पीपाड़ बना पावन केन्द्र

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, सामायिक-शीलव्रत-रात्रिभोजन-त्याग, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा एवं व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा. आदि महासती वृन्द के विराजने से पुण्यधरा पीपाड़ में धर्म प्रभावना का सुन्दर प्रसंग बना हुआ है। अध्यात्म योगी, युगमनीषी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का 110वाँ जन्मदिवस 9 जनवरी, 2020 को तप-त्याग के साथ मनाया गया। माघ शुक्ला द्वितीया 26 जनवरी, 2020 को 100वाँ दीक्षा-दिवस चतुर्विध संघ की उपस्थिति में गुणानुवाद, सामूहिक सामायिक एवं अनेक विध तप-त्याग के साथ मनाया गया। मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि का भी सान्निध्य प्राप्त था। तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. अब विहार कर मेड़ता, पुष्कर, थाँवला होते हुए अजमेर पधार गये हैं। मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. का भी पीपाड़ से विहार हो गया है। वे 29 फरवरी को खेजडला विराज रहे हैं। व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा. का भी पीपाड़ से विहार हो गया है तथा खेजडला पधारे हैं। सेवाभावी महासती श्री विमलावतीजी म.सा. शक्तिनगर जोधपुर पधार गये हैं। पीपाड़ संघ धर्मारधना एवं आतिथ्य सेवा का लाभ ले रहा है। गोटन, कोसाणा, पीपाड़, जोधपुर आदि संघ चातुर्मास हेतु विनति कर रहे हैं। कोटा, जयपुर, सवाईमाधोपुर, अयनावरम्-चेन्नई, सलेगाँव, भोपालगढ़, आवड़ी, तिरुवन्नामलई, बुलढाणा, जालिया, हिण्डौनसिटी आदि अनेक संघ भी चातुर्मासों की विनति में लगे हैं।

फाल्गुनी चौमासी के पश्चात् 15 मार्च, 2020 को आगामी चातुर्मासों की घोषणा सम्भावित है। 13 फरवरी को दिगम्बर आचार्य श्री रयणसागरजी आदि ठाणा-2 पूज्य गुरुदेव के दर्शनार्थ पधारे।

जलगाँव-आचार्यप्रवर 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 2 का जलगाँव में श्री वर्धमान स्थानकवासी श्रावक संघ, जलगाँव की विनति पर 16 जनवरी, 2020 को रतनलाल सी. बाफना जैन स्वाध्याय भवन में मंगल प्रवेश हुआ। 20 वर्षों के बाद रत्नसंघ के सन्तों का जलगाँव में आगमन होने से सभी में एक खुशी का माहौल था। आचार्य भगवन्त की सत्प्रेरणा से चल रहे भाऊ मण्डल में रविवार को 750 भाई-बहनों ने सामायिक-साधना में भाग लिया। सामायिक सूत्र के पाठों पर विवेचन प्रवचन के माध्यम से चला। प्रतिदिन 700-800 की उपस्थिति रही। साथ ही रात्रि में 8.00 से 9.15 बजे तक भाइयों के लिए युवाशाला रही, जिसमें लगभग 50 से ऊपर भाइयों ने उपस्थिति दर्ज कराई।

महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5, महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 5, महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3, महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4, महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 कुल ठाणा 21 नन्दुरबार, जलगाँव, कजगाँव, अमलनेर, धुलिया, खानदेश के पाँचों स्थानों पर यशस्वी चातुर्मास सम्पन्न कर, विभिन्न ग्राम-नगरों को फरसते हुए जलगाँव पधारे।

आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. के 100वीं दीक्षा-दिवस पर 101 तेले की माँग को भी संघ ने 108 के ऊपर तेले कर पूरा किया। यहाँ से श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. का विहार हो गया है।

जलगाँव एवं जयपुर में जैन भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के मंगल आशीर्वाद से खानदेश के मुकुटमणि जलगाँव में **मुमुक्षु बहिन सुश्री निमिषाजी लुणावत** की जैन भागवती दीक्षा **श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा के पावन मुखारविन्द से एवं गुलाबीनगरी जयपुर में **मुमुक्षु बहिन सुश्री दीपिकाजी मुणोत** की जैन भागवती दीक्षा **साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा.** के पावन मुखारविन्द से 29 जनवरी, 2020 को सानन्द सम्पन्न हुई।

जलगाँव दीक्षा के अवसर पर श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 2 के साथ ही विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा., महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा., महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 21 विराजमान थे।

जयपुर दीक्षा के अवसर पर साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा 11, व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा 9 एवं व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 विराजमान थे।

दोनों ही स्थानों पर मुमुक्षु बहिनों की भव्य शोभायात्रा निकाली गई, तत्पश्चात् मुमुक्षु बहिनों एवं वीर परिवारों का 28 जनवरी, 2020 को संघ की ओर से अभिनन्दन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

शोभा यात्रा

जलगाँव-28 जनवरी, 2020 को प्रातः 8.30 बजे मुमुक्षु बहिन सुश्री निमिषाजी लुणावत की शोभायात्रा नयन तारा शोरूम, सुभाष चौक से प्रारम्भ हुई। शोभायात्रा का विहंगम परिदृश्य जलगाँव के सम्पूर्ण जैन समाज की एकता को परिलक्षित कर रहा था। मुमुक्षु बहिन हाथी पर सवार होकर सभी का अभिनन्दन कर रही थी। साथ चल रहे वीर परिवार के सदस्यों की प्रसन्नता उनके मुखमण्डल से बयाँ हो रही थी। सफेद गणवेश में श्रावकवर्ग एवं लाल चून्दी में श्राविकावर्ग स्वानुशासन के साथ चल रहे थे। दीक्षा के महत्त्व को दर्शाते हुए भजनों की स्वर लहरियाँ एवं नारे वातावरण को संयम की सुगन्ध से सुरभित कर रहे थे। जलगाँव के निर्धारित मुख्य मार्गों से होती हुई शोभायात्रा गणपति नगर स्थित स्वाध्याय भवन पहुँची, जहाँ मुमुक्षु बहिन एवं जन समुदाय ने श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से मांगलिक श्रवण की।

जयपुर-28 जनवरी, 2020 को प्रातः 9.30 बजे मुमुक्षु बहिन सुश्री दीपिकाजी मुणोत की भव्य शोभायात्रा वीर परिवार के अस्थायी निवास से निकलकर स्वाध्याय भवन में विराजित महासती मण्डल से मांगलिक पाठ श्रवण कर प्रारम्भ हुई। बैण्ड बाजों की मधुर ध्वनि, भजन मण्डली के संयम गीत तथा श्रावक-श्राविकाओं के द्वारा गुञ्जित नारे शोभायात्रा की शोभा को बढ़ा रहे थे। शोभायात्रा में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-जयपुर, श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संस्था, सांगानेर-प्रतापनगर के श्रावक-श्राविकाएँ, युवक परिषद् के सभी युवा साथी, बालिका मण्डल की बालिकाएँ अपनी निर्धारित एक-सी वेशभूषा के साथ व्यवस्था को निरन्तर सम्भाल रहे थे। जयपुर के प्रतापनगर क्षेत्र में ऐसा भव्य नजारा सम्भवतः पहली बार ही देखने को मिल रहा था। सुसज्जित बग्गी में मुमुक्षु बहिन सुश्री दीपिकाजी मुणोत सभी का अभिवादन कर रही थी। मार्ग के दोनों ओर खड़े अनेक लोगों ने शोभायात्रा का भव्य नजारा देखा तथा विरक्ता बहिन के प्रसन्नचित्त मुख मण्डल को निहारते हुए संयम जीवन की शुभकामना स्वरूप आशीर्वाद प्रदान किया। देश के विभिन्न प्रान्तों से श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाएँ संयम की अनुमोदना करने हेतु इस पावन अवसर पर उपस्थित हुए।

अभिनन्दन-समारोह (28 जनवरी, 2020)

जलगाँव-शोभायात्रा के पश्चात् दोपहर 2.00 बजे वीर परिवार एवं मुमुक्षु बहिन के अभिनन्दन हेतु अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता शासन सेवा समिति के संयोजक एवं जलगाँव के प्रतिष्ठित श्रावक रत्न श्रीमान रतनलाल सी. बाफना जी ने की। महाराष्ट्र विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष माननीय श्रीमान् अरुणभाई गुजराती-चौपड़ा ने मुख्य अतिथि के रूप में पधार कर समारोह की शोभा बढ़ाई। विशिष्ट अतिथि के रूप में संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक, संघसेवा शिरोमणि श्रीमान् मोफतराजजी मुणोत, संघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री बुधमलजी बोहरा ने पधारकर मञ्च को शोभायमान किया। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-जलगाँव द्वारा आगन्तुक अतिथियों का माला, शॉल एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर बहुमान किया गया। वीर माता-पिता सहित वीर परिवार के सदस्यों का स्वागत करने के साथ ही संघ द्वारा रजत पट्टिका प्रदान कर अभिनन्दन किया गया। अभिनन्दन पत्र का वाचन श्री महावीरजी बोथरा, जलगाँव ने किया। मञ्चस्थ अतिथियों एवं संघ पदाधिकारियों द्वारा मुमुक्षु बहिन सुश्री निमिषाजी लुणावत का स्वागत कर अभिनन्दन-पत्र समर्पित किया गया। मुमुक्षु बहिन ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए संयम के महत्त्व को प्रदर्शित किया। जीवन के विभिन्न संस्मरणों के माध्यम से उन्होंने अपने जीवन में आयी वैराग्य भावना के बारे में बताया। वीर परिवार द्वारा भी अपनी भावना व्यक्त की गई तथा मुमुक्षु बहिन के निराबाध संयम-जीवन की कामना की। अतिथिगण ने अपने उद्बोधनों में संयम के प्रति मुमुक्षु बहिन के उच्च भाव एवं उत्साह की प्रशंसा की।

जयपुर-मुमुक्षु बहिन सुश्री दीपिकाजी मुणोत की भव्य शोभायात्रा प्रतापनगर क्षेत्र के विभिन्न मार्गों से होती हुई 11.30 बजे अभिनन्दन स्थल पर पहुँची। अपार जनसमूह ने कार्यक्रम स्थल पर पहुँचकर निर्धारित स्थान ग्रहण किया। भव्य पाण्डाल भी जनसमूह के समक्ष छोटा प्रतीत हुआ। मुमुक्षु बहिन एवं वीर परिवार के सदस्यों ने निर्धारित मञ्च पर अपना स्थान ग्रहण किया। संचालक महोदय श्री राजेन्द्रजी 'राजा' ने कार्यक्रम को प्रारम्भ करते हुए रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्रीमान् प्रकाशजी टाटिया को अध्यक्षता करने हेतु मञ्च पर आमन्त्रित किया। मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराजजी चौपड़ा, विशिष्ट अतिथि के रूप में जयपुर शहर सांसद श्री रामचरणजी बोहरा, सांगानेर विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्री अशोकजी लाहोटी तथा संघ संरक्षक श्री विमलचन्द्रजी डागा ने मञ्च को सुशोभित किया।

मंगलाचरण एवं स्वागत-गीत के पश्चात् प्रतापनगर संघ के अध्यक्ष डॉ. जितेन्द्रसिंहजी कोठारी ने आगन्तुक अतिथियों, वीर परिवार तथा देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुए श्रद्धालुजनों का शब्दों से स्वागत किया। उन्होंने आचार्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की कि भगवन्त ने महती कृपा कर प्रतापनगर संघ को यह पावन पुनीत अवसर प्रदान किया। संघ द्वारा पधारे हुए सभी अतिथिगणों का माला, शॉल, साफा तथा स्मृति चिह्न प्रदान कर बहुमान किया गया। प्रतापनगर संघ द्वारा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री प्रकाशजी टाटिया का भी बहुमान किया गया। वीर दादीजी श्रीमती सूरजबाईजी मुणोत, वीरपिता श्री कुन्दनमलजी मुणोत, वीरमाता श्रीमती कमलेशजी मुणोत, वीरभ्राता श्री प्रियांशजी श्री मनीषजी मुणोत का संघ द्वारा स्वागत कर रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया। वीर परिवार की ओर से भ्राता श्री प्रियांशजी मुणोत ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए मुणोत परिवार की ओर से अपनी बहिन को शुभकामना देते हुए सुन्दर संयमी जीवन की कामना की। मुमुक्षु बहिन सुश्री दीपिकाजी मुणोत को दिये जाने वाले अभिनन्दन-पत्र का वाचन जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्द्रजी जैन द्वारा किया गया। संघ द्वारा

मुमुक्षु बहिन का माला एवं चून्दड़ी से अभिनन्दन करते हुए मञ्चासीन अतिथियों द्वारा अभिनन्दन-पत्र समर्पित किया गया। संघ की जयपुर शाखा एवं प्रतापनगर संघ द्वारा भी मुमुक्षु बहिन का स्वागत अभिनन्दन किया गया। न्यायमूर्ति श्री प्रकाशजी टाटिया ने अपना अध्यक्षीय उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए संयमियों के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। अतिथिगणों ने भी अपने आशीर्चन में मुमुक्षु बहिन को संयम मार्ग पर सफलतापूर्वक आगे बढ़ने की भावना व्यक्त की। मुमुक्षु बहिन सुश्री दीपिकाजी मुणोत ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए आचार्यप्रवर, सन्त मण्डल, साध्वीप्रमुखाजी, अपनी दोनों सांसारिक बुआ म.सा. सहित समस्त महासती मण्डल की महती कृपा हेतु कृतज्ञता ज्ञापित की। संघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्रीमान् आनन्दजी चौपड़ा ने आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी वर्ष पर संघ द्वारा निर्णीत कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम का सफलतापूर्वक सञ्चालन संघ के राष्ट्रीय मन्त्री श्रीमान् राजेन्द्रजी जैन 'राजा' ने किया। संघ महामन्त्री श्री धनपतजी सेठिया द्वारा सभी आगन्तुकों का आभार व्यक्त किया गया।

दीक्षा-महोत्सव (29 जनवरी, 2020)

जलगाँव-29 जनवरी, 2020 का पावन दिवस मुमुक्षु बहिन सुश्री निमिषाजी लुणावत की संयम यात्रा का प्रथम दिवस था। परिवार से विदाई प्राप्त कर प्रातः 9.30 बजे मुमुक्षु बहिन की अभिनिष्क्रमण यात्रा प्रारम्भ होकर रतनलाल सी. बाफना स्वाध्याय भवन, गणपतिनगर पहुँची, जहाँ श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. एवं महासती मण्डल पूर्व में ही पधार कर भक्तजनों को जिनवाणी का रसपान करवा रहे थे। इस अवसर पर जलगाँव में विराजित वयोवृद्ध तपस्वी सन्त श्री कानमुनिजी म.सा., अरिहन्त मार्गी सन्त पूज्य श्री धर्मेशमुनिजी म.सा. भी अपने सन्त मण्डल के साथ दीक्षा महोत्सव पर उपस्थित हुए।

मुमुक्षु बहिन ने सन्त-सतीवृन्द को वन्दना की, तत्पश्चात् मांगलिक श्रवण कर वेश परिवर्तन हेतु प्रस्थान किया। महासती मण्डल एवं सन्तवृन्द ने उपस्थित श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं को संयम की महत्ता बताते हुए गृहस्थ जीवन से सन्त जीवन प्राप्त कर मोक्ष की ओर आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की। श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने प्रवचन में फरमाते हुए कहा कि आज इस महोत्सव में हम 7 सन्त एवं 21 महासतियाँ उपस्थित हैं तथा एक मुमुक्षु बहिन की दीक्षा होने जा रही है। इस तरह से कुल योग 29 बन रहा है, और संयोग से आज की तारीख भी 29 ही है। उन्होंने फरमाया कि मोक्ष मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए संयम ग्रहण करना आवश्यक है। वैराग्य भाव को जाग्रत कर जो लोग संयम ग्रहण कर सकें, वे अवश्य आगे बढ़ें। अन्य सभी संयम एवं संयमियों की अनुमोदना करने में पीछे न रहें।

मुमुक्षु बहिन वेश परिवर्तन के पश्चात् जैसे ही दीक्षा-स्थल पर पहुँची, जय-जयकारों से पाण्डाल गुञ्जायमान हो गया। मुमुक्षु बहिन ने सभी महापुरुषों को वन्दना कर उपस्थित चतुर्विध संघ तथा वीर परिवार के सदस्यों से क्षमायाचना की। श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने वीर परिवार एवं संघ पदाधिकारियों से आज्ञा लेकर मुमुक्षु बहिन को करेमि भंते के पाठ से दीक्षा प्रदान की। जैसे ही दीक्षा पाठ दिया गया, उपस्थित जनसमुदाय ने आचार्य भगवन्त, उपस्थित सन्त-सतीवृन्द की जय के साथ नवदीक्षित साध्वीजी का भी जयकार किया।

दीक्षा महोत्सव पर लगभग 3000 श्रावक-श्राविकाओं ने पहुँचकर दीक्षा की अनुमोदना की। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ-जलगाँव, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-जलगाँव, श्राविका मण्डल, युवक परिषद् के कार्यकर्ताओं ने दीक्षा महोत्सव की सम्पूर्ण व्यवस्था में अपना महनीय योगदान प्रदान किया। दीक्षा हेतु आवास-निवास भोजन की एवं आवागमन की व्यवस्था श्री रतनलाल सी. बाफणा परिवार द्वारा की गई।

जयपुर—जैनाचार्य पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञा से रत्नसंघ की बगिया में नये फूल के रूप में मुमुक्षु बहिन सुश्री दीपिकाजी मुणोत की जैन भागवती दीक्षा सांगानेर-प्रतापनगर के भव्य पाण्डाल में 6 हजार से अधिक जनमेदिनी के उत्साह के साथ सानन्द सम्पन्न हुई। आचार्य हीरा की आज्ञानुवर्तिनी साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. ने अपने मुखारविन्द से मुमुक्षु बहिन को दीक्षा पाठ प्रदान किया।

नौ वर्ष की वैराग्यावधि से परिपुष्ट हुई मुमुक्षु बहिन की दीक्षा से पूर्व प्रातः 9.00 बजे महाभिनिष्क्रमण यात्रा वीर परिवार के अस्थायी निवास स्थान से प्रारम्भ होकर महासती वृन्द के चरणों में पहुँची। मांगलिक श्रवण करने के पश्चात् मुमुक्षु बहिन मुण्डन तथा वेश परिवर्तन हेतु निर्धारित स्थान पर पहुँची। इधर दीक्षा स्थल पर साध्वीप्रमुखा जी के साथ ही व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलताजी म.सा. सहित सती-मण्डल ने उपस्थित जनमेदिनी को संयम की महिमा का बखान करते हुए संयम-मार्ग अपनाने की प्रेरणा प्रदान की। महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा., महासती श्री दिव्यप्रभाजी म.सा. तथा महासती श्री कोमलश्रीजी म.सा. ने भी संयम की महत्ता पर प्रकाश डाला।

साध्वी वेश को धारण कर मुमुक्षु बहिन दीक्षा स्थल पर महासतीवृन्द के चरणों में पहुँची। मुमुक्षु बहिन के दीक्षा स्थल पर पहुँचते ही उपस्थित जनमेदिनी ने जय-जयकारों का नाद किया। मुमुक्षु बहिन ने साध्वीप्रमुखा सहित सभी महासतीवृन्द को तिक्रबुत्तो के पाठ से तीन बार वन्दना की तथा अपने पारिवारिक परिजनों, संघ पदाधिकारियों एवं उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं से क्षमायाचना की। पारिवारिक परिजनों तथा संघ पदाधिकारियों से आज्ञा प्राप्त करने के पश्चात् साध्वीप्रमुखाजी के मुखारविन्द से 'करेमि भते' के पाठ से दीक्षा अंगीकार कर मुमुक्षु बहिन महासती बन उपस्थित जनसमूह के लिए वन्दनीय तथा पूजनीय हो गई। श्रावक-श्राविकाओं ने महापुरुषों तथा महासतीवृन्द की जय के साथ नवदीक्षित साध्वीजी का भी जय-जयकार किया। दीक्षा अवसर पर मुमुक्षु बहिन के वीर पिता श्रीमान् कुन्दनमल जी मुणोत, वीरमाता श्रीमती कमलेशजी मुणोत ने साध्वीप्रमुखाजी के मुखारविन्द से सजोड़े आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया। साथ ही वीर पिता श्री कुन्दनमलजी के मामाजी श्रीमान् गणपतलालजी सुराणा एवं मामीजी श्रीमती भीखीदेवीजी सुराणा ने भी दीक्षा के पावन प्रसंग पर आजीवन शीलव्रत के नियम ग्रहण किए।

दीक्षा प्रसंग पर अनुमोदना करने हेतु पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराजजी चौपड़ा, राजस्थान मानवाधिकार आयोग के पूर्व अध्यक्ष और रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायाधिपति श्री प्रकाशजी टाटिया, श्री सुमेरसिंहजी बोधरा, श्री कैलाशजी हीरावत, श्री विमलचन्द्रजी डागा सहित संघ के कई शीर्षस्थ पदाधिकारी उपस्थित थे।

श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संस्था-प्रतापनगर, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-जयपुर, श्राविका मण्डल, युवक परिषद् एवं युवती मण्डल के सभी कार्यकर्ताओं ने दीक्षा की अनुमोदना के साथ ही सम्पूर्ण व्यवस्था में दिन-रात एक कर भरपूर सहयोग प्रदान किया।

राजस्थान के लगभग सभी ग्राम-नगरों के साथ ही देश के लगभग सभी प्रान्तों के श्रावक-श्राविकाओं ने जयपुर उपस्थित होकर दीक्षा की अनुमोदना का लाभ प्राप्त किया।

—सुशीलकुमार जैन, मन्त्री

आचार्यश्री हस्ती दीक्षा-शताब्दी 26 जनवरी से हुई प्रारम्भ

देश के विभिन्न प्रान्तों में कई कार्यक्रम आयोजित

अध्यात्म योगी, युग मनीषी, सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास मार्तण्ड पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. की दीक्षा-शताब्दी माघ शुक्ला द्वितीया 26 जनवरी, 2020 से प्रारम्भ होने के उपलक्ष्य में देश के विभिन्न भागों में सामायिक-स्वाध्याय एवं तप-त्याग के विभिन्न कार्यक्रम हुए तथा पूज्य आचार्यश्री हस्ती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सम्बन्धित विषयों पर व्याख्यान तथा गुणानुवाद हुए।

व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक, प्रातः स्मरणीय, पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि सन्तप्रवरों के सान्निध्य में 100वाँ दीक्षा दिवस चतुर्विध संघ की साक्षी में सामायिक-दिवस और व्रत नियमों की श्रद्धा समर्पित करने के साथ मनाया गया। विभिन्न ग्राम नगरों से श्रद्धालु उपस्थित हुये। संघ सेवा शिरोमणि श्री मोफतराज पी. मुणोत, रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री प्रकाशजी टाटिया, संघ महामन्त्री श्री धनपतजी सेठिया आदि भी इस अवसर पर उपस्थित थे। व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा., सेवाभावी महासती श्री विमलावतीजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा का भी प्रवचन सभा में पधारना हुआ। सन्तप्रवरों एवं महासती वृन्द ने गुरुदेव के जीवन एवं साधना पर प्रकाश डाला। महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री कल्पेशमुनिजी म.सा., महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा., महासती श्री सिद्धिप्रभाजी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव के जीवन पर मार्मिक प्रवचन फरमाए। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने भी इस अवसर पर प्रतिक्रमण एवं आवश्यक सूत्र सीखने पर बल प्रदान किया। (प्रवचन के अंश पृथक् से प्रकाशित)।

आणंद (गुजरात) में सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. के पावन सान्निध्य में तप-त्याग एवं दो-दो सामायिक की साधना की गयी। कार्यक्रम में अहमदाबाद, आणंद एवं पालनपुर के अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। अहमदाबाद से आए श्रावकों ने हस्ती चालीसा एवं गुरु गुणगान के भजनों का उच्चारण किया। विराजित सन्तों ने गुरुदेव की जीवनी पर प्रकाश डाला। साथ ही नित्य सामायिक-स्वाध्याय की सभी को प्रेरणा की। श्री पदमचन्दजी कोठारी ने आचार्य भगवन्त के जीवन के विशेष प्रसंगों का विवरण प्रस्तुत किया तथा सामायिक-स्वाध्याय करने की प्रेरणा की।

जोधपुर के प्रताप नगर में श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में प्रातःकाल रविवारीय सामूहिक-सामायिक की, जिसमें लगभग 250 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। प्रवचन सभा में श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि संवर से कर्मों का आवागमन रुकता है और संयम से मुक्ति प्राप्त होती है। श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव की तीन विशेषताएँ प्रस्तुत करते हुए कहा-आचार्य श्री युगद्रष्टा थे, भविष्यद्रष्टा थे तथा आत्मद्रष्टा थे। आचार्यश्री के जीवन को शब्दों में बाँधना बहुत ही मुश्किल है। इस अवसर पर कतिपय श्रावक-श्राविकाओं ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए।

जयपुर के प्रताप नगर में साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. के सान्निध्य में पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के जीवन एवं सद्गुणों पर महासती वृन्द द्वारा प्रकाश डालते हुए उनके उपदेशों और सन्देशों को प्रस्तुत किया गया। मानसरोवर जयपुर के महावीर भवन में व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. के सान्निध्य में 'आचार्य हस्ती में दस यति धर्म और पाँच महाव्रत' विषय पर न्यायाधिपति श्री जसराजजी चौपड़ा, श्री विमलचन्दजी डागा, डॉ. धर्मचन्दजी जैन, श्रीमती अरूणाजी कर्णावट, श्री मनीषजी मेहता एवं महासती मण्डल ने प्रकाश डाला।

थाँवला में विदुषी महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा., महासती श्री सुयशप्रभाजी एवं महासती श्री पूनमजी म.सा. के सान्निध्य में सामूहिक एकाशन के साथ त्याग-तप का ठाट रहा है। प्रवचन सभा में कई अजैन ग्रामीणों ने पूज्य आचार्य प्रवर के जीवन एवं उपदेशों का श्रवण किया।

अजमेर के पुष्कर रोड़ स्थित स्वाध्याय भवन में व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. ने फरमाया कि अजमेर ही उनकी दीक्षा स्थली रहा है। गुरुदेव का जीवन बोलता था। इस वर्ष में संकल्प किया जाए कि एक वर्ष तक एक अतिरिक्त सामायिक करके सामायिक-स्वाध्याय के फरमान को सार्थक करें। महासती श्री इन्द्रप्रभाजी, महासती श्री रक्षिताजी, महासती श्री विनयप्रभाजी ने पूज्य आचार्यप्रवर के गुणों पर प्रकाश डाला। एक वर्ष में 100 दिन के लिए विभिन्न प्रत्याख्यान अंगीकार किये गये।

चेन्नई (तमिलनाडू) में व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा 10 के पावन सान्निध्य एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-तमिलनाडु के तत्त्वावधान में जैन भवन, साहूकारपेठ में सामायिक-साधना करते हुए श्रद्धालु भक्तों ने महासती मण्डल के मुखारविन्द से आराध्य गुरु हस्ती के गुणों एवं जीवन की अनेक घटनाओं को श्रवण किया। समारोह में संघ एवं समस्त सम्प्रदायों तथा संस्थाओं के अनेक प्रमुख श्रद्धालु भक्तों ने आचार्य भगवन्त के गुणगान करते हुए अपने अहोभाव प्रकट किये। इस कार्यक्रम में लगभग 1100 श्रावक-श्राविकाओं एवं युवक-युवतियों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सराहनीय सहयोग रहा।

बैंगलुरु (कर्नाटक) में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ ट्रस्ट, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद् के संयुक्त सहयोग से एच. उत्तमचन्द प्रमिला भण्डारी सामायिक-स्वाध्याय भवन, राजाजी नगर के प्रांगण में युगद्रष्टा जैनाचार्य श्री हस्ती दीक्षा शताब्दी वर्ष का शुभारम्भ दो-दो सामायिक की सामूहिक साधना और अनेक व्रत-प्रत्याख्यान, त्याग-तप से किया गया। अत्यन्त सौहार्दपूर्ण धार्मिक वातावरण में आचार्य श्री हस्ती की महिमा गुणगान एवं जीवन झाँकी भी अनेक प्रबुद्ध वक्ताओं ने प्रस्तुत की। चेन्नई से पधारे मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता श्री कैलाशमलजी दुगड़ ने कहा कि आचार्य हस्ती का 'जैनधर्म का मौलिक इतिहास' उनकी समग्र जैन समाज को अनुपम देन है। सभा के सञ्चालक रत्नसंघ मंत्री श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल ने धर्म सभा को आने वाले एक वर्ष में निम्नांकित संकल्प करने की प्रेरणा की-1. 100 घण्टों का मौन रखना। 2. 100 सामायिक नियमित नियम के अलावा बढ़ोतरी करना। 3. 100 दिन रात्रि-भोजन का त्याग करना। 4. 100 दिन प्रतिदिन 15-15 मिनट स्वाध्याय करना आदि। इस प्रसंग पर श्रीमती सुशीलाजी भण्डारी, श्री हेमन्तजी ओस्तवाल, श्री तेजराजजी मुथा, श्री भरतजी सांखला, श्री चेतनप्रकाशजी डूंगरवाल, श्री नवरतनमल जी भंसाली, श्री शान्तिलालजी डूंगरवाल आदि ने गद्य-पद्य में अपने-अपने महनीय विचार प्रस्तुत किये। मंगलपाठ श्रावकरत्न श्री शान्तिलालजी डूंगरवाल ने प्रदान किया एवं जयघोष से आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी का शुभारम्भ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

कोलकाता में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक मण्डल की ओर से भवानीपुर स्थित महावीर सदन में पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्ती के जन्म, बाल्यकाल, माँ रूपा के वैराग्य, स्वयं के वैराग्य आदि की झाँकी प्रस्तुत की गयी। इसी शृङ्खला में 22 मार्च को उनकी जीवनी का नाटकीय रूपान्तर कई भागों में प्रस्तुत किया जाएगा। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष नी चंचलमलजी बछावत, श्री गुमानसिंहजी पीपाड़ा, श्री कमलजी भण्डारी आदि के नेतृत्व में कार्यक्रम चल रहे हैं।

बीजापुर (कर्नाटक) में श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ द्वारा श्रमणसंघीय उपाध्यायप्रवर श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में यह दिवस उत्साह एवं उमंग के साथ मनाया गया, साथ ही कर्नाटक गजकेसरी पूज्य श्री गणेशलालजी म.सा. एवं श्रमणसूर्य मरुधर केसरी पूज्य श्री मिश्रीमलजी म.सा. का पुण्य स्मृति दिवस भी तप-त्याग एवं सामायिक के साथ मनाया गया।

सावाईमाधोपुर में आवासन मण्डल स्थित सामायिक स्वाध्याय भवन में प्रातः सामूहिक सामायिक स्वाध्याय संगोष्ठी में आवश्यक सूत्र का स्वाध्याय हुआ। आचार्य श्री हस्ती दीक्षा शताब्दी पोरवाल सम्भाग क्षेत्रीय समारोह 'सामायिक दिवस' के रूप में श्रद्धा-भक्ति उत्साह के साथ श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद् आवासन मण्डल के संयुक्त तत्त्वाधान में आयोजित हुआ। प्रमुखवक्ता श्री शिखरचन्द छाजेड़-करही (मध्यप्रदेश), श्री सुशीलजी हिंगड, पाली मारवाड़ सहित अनेक वक्ताओं ने सामायिक-स्वाध्याय एवं गुरु-महिमा को रेखांकित किया।

नागपुर (महाराष्ट्र) के वर्धमान भवन, वर्धमान नगर में तत्त्वज्ञानी श्रद्धेय श्री सुमतिमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 2 एवं तपस्वी महासती श्री रुचिताकँवरजी म.सा. आदि ठाणा 4 के संयुक्त सान्निध्य में तप-त्याग एवं सामायिक की साधना के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में लगभग 200 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

पुलगाँव (महाराष्ट्र) में श्री अक्षयमुनिजी म.सा. एवं श्री दिनेशमुनिजी म.सा. ने आचार्य श्री हस्ती की जीवनी पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर लगभग 50 सामायिक की आराधना हुई।

पांढरकवडा (महाराष्ट्र) में महासती मण्डल के सान्निध्य में सामायिक-आराधना के साथ तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। इस प्रसंग को चन्द्रपुर, अमरावती, बड़नेरा, पारशिवनी, खापरखेड़ा, भण्डारा, वर्धा, हिगणघाट, मांढेली आदि अनेक शहरों में सामायिक दिवस के रूप में तप-त्यागपूर्वक मनाया गया।

जयपुर में आचार्य हस्ती-स्मृति-व्याख्यान माला आयोजित

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ तथा स्थानीय श्रावक संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद् और युवती मण्डल के संयुक्त तत्त्वाधान में आचार्य हस्ती दीक्षा शती वर्ष के अन्तर्गत रविवार 23 फरवरी, 2020 को प्रातः 10 बजे जयपुर के सुबोध लॉ कॉलेज, मानसरोवर के विशाल सभागार में आचार्य हस्ती-स्मृति-व्याख्यान माला का प्रथम आयोजन किया गया। इस व्याख्यान माला का विषय था- 'आचार्य हस्ती के चिन्तन में आधुनिक समस्याओं के समाधान।' इस विषय पर भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद् नईदिल्ली के पूर्व चेयरमैन एवं अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त दार्शनिक प्रो. सिद्धेश्वर रामेश्वर भट्ट (प्रो. एस. आर. भट्ट) ने तथा राष्ट्रपति-सम्मानित संस्कृत प्रोफेसर दयानन्द भार्गव ने सम्बोधित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता न्यायमूर्ति एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संरक्षक श्री जसराजजी चौपड़ा ने की।

प्रो. एस. आर. भट्ट ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि परम पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. महान् सन्त एवं विचारक थे। उन्होंने अपने उपदेशों में जो कुछ कहा वह आज भी पर्यावरण, सतत विकास, आतंकवाद के विनाश एवं जीवनशैली के बदलाव हेतु उपयोगी है। वे पुरुषों में श्रेष्ठ होने से पुरिसवर गन्ध हस्ती कहलाए। प्रो. भट्ट ने अनेकान्तवाद, अहिंसा एवं अपरिग्रह के सिद्धान्तों के साथ समत्व एवं स्वाध्याय को भी अपने वक्तव्य में समुचित स्थान दिया।

प्रो. दयानन्द भार्गव ने डार्विन के विकासवाद, कालमॉर्क्स के अर्थशास्त्र तथा फ्रायड के अवचेतन मन के सिद्धान्त की चर्चा करते हुए उन्हें अपूर्ण बताया तथा पूज्य आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. के नमो पुरिसवरगन्ध हत्थीण, आध्यात्मिक आलोक आदि ग्रन्थों में प्राप्त वाक्यों से इसकी पुष्टि की। उन्होंने डार्विन के विकासवाद के विरोध में कर्मसिद्धान्त एवं वीतरागता की चर्चा की तथा मॉर्क्स के समाजवाद और अर्थशास्त्र के खण्डन में अहिंसा और अपरिग्रह के सिद्धान्त को प्रस्तुत करते हुए आचार्य हस्ती के उद्धरण दिए। उसी प्रकार फ्रायड के अवाञ्छित दमन के सिद्धान्त का इच्छा परिमाण के द्वारा समाधान प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री जसराजजी चौपड़ा ने आचार्यश्री को विचारक नहीं, एक मनीषी के रूप में प्रस्तुत करते हुए कहा कि आचार्यश्री जैसा विचार रखते थे वैसा जीवन भी जीते थे, इसलिए वे मात्र विचारक नहीं अपितु मनीषी थे। कार्यक्रम का मंगलाचरण एवं स्वागतगीत श्री जैन रत्न शिक्षण संस्थान की छात्रा अन्तिम, इशिका, तृप्ति, किम्मी एवं साक्षी के द्वारा प्रस्तुत किये गए। अतिथियों का शाल, माला एवं स्मृति चिह्न से अभिनन्दन किया गया।

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर के अध्यक्ष श्री प्रमोदजी महनोत ने स्वागत वचन प्रस्तुत करते हुए आचार्यश्री के धैर्य एवं समत्व की सोदाहरण व्याख्या की।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा ने आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी के अवसर पर आयोज्यमान कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की।

सभा का संचालन करते हुए प्रो. धर्मचन्द्र जैन ने अध्यात्मयोगी, युगमनीषी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के अनेक सुभाषित वाक्यों को प्रस्तुत करते हुए व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक एवं वैश्विक समस्याओं के समाधानों को इंगित किया। उन्होंने अपने संक्षिप्त संयोजन में आचार्यश्री के व्यक्तित्व एवं विचारों को तनाव, कलह, पारिवारिक अशान्ति, सामाजिक कुरीति, संकीर्ण सोच, शारीरिक रोग, मानसिक असन्तुलन, वैचारिक विकृति आदि समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करते हुए कहा कि आचार्यप्रवर ने स्वाध्याय के माध्यम से विचार शुद्धि पर बल दिया। क्योंकि विचारों की शुद्धि से ही आचार की शुद्धि सम्भव है एवं ज्ञान के प्रकाश में विभिन्न समस्याओं के समाधान स्वतः हो जाते हैं। सामायिक भी उसी प्रकार समत्व भाव द्वारा मलिन चित्त को समता में लाकर सुन्दर बनाने में सहायक है। आचार्यश्री ने व्यसन-मुक्त जीवन का सन्देश देकर भी अनेक समस्याओं से समाज को मुक्त बनाया।

अतिथियों एवं समागत सुधी श्रोताओं, कार्यकर्ताओं एवं समस्त सहायकों का धन्यवाद ज्ञापन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री विनयचन्द्रजी डागा ने किया। सभा में श्री डी. आर. मेहता, श्री नवरतनमलजी कोठारी, श्री सुमेरसिंहजी बोथरा, प्रो. कुसुमजी जैन, डॉ. संजीवजी भानावत, श्री लाभचन्द्रजी कोठारी, डॉ. सुषमाजी सिंघवी सहित श्रावक संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद् एवं युवती मण्डल के अनेक पदाधिकारी, सदस्य श्रोता के रूप में विद्यमान थे। लगभग 500 सुधी श्रोताओं से युक्त यह कार्यक्रम समय-प्रबन्धन एवं व्यवस्था की दृष्टि से अद्भुत रहा। संघ के द्वारा कार्यक्रम के पूर्व अल्पाहार की सुन्दर व्यवस्था की गई।

हैदराबाद में आचार्य हस्ती सेवा-सम्मान का आयोजन

प्रातः स्मरणीय पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज के दीक्षा शताब्दी वर्ष पर आचार्य हस्ती फाउण्डेशन के तत्त्वाधान में हैदराबाद के कारवान स्थित दादाबाड़ी में 16 फरवरी, 2020 को आयोजित भव्य सम्मान समारोह में सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री सुरेन्द्रमलजी लुनिया को 9 वें आचार्य हस्ती सेवा सम्मान से नवाजा गया। आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाशचन्द्रजी टाटिया, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कैलाशचन्द्रजी हीरावत, शाकाहार रत्न आचार्य श्री निवास, प्रमुख वक्ता के रूप में जिनवाणी के प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द्रजी जैन एवं विशेष अतिथि के रूप में जैन सेवा संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री नवरतनमलजी गुन्देचा पधारे।

कार्यक्रम के सञ्चालक एवं फाउण्डेशन के महामन्त्री श्री श्रीपालजी देशलहरा ने बताया कि यह सम्मान समाजसेवा के क्षेत्र में विशिष्ट सेवाएँ देने वाले को दिया जाता है। कोषाध्यक्ष वीरपिता श्री राजेन्द्रजी कटारिया ने अतिथियों का स्वागत किया और सहमन्त्री श्री सुरेशजी गुगलिया ने श्री सुरेन्द्रजी लुनिया को दिए जाने वाले प्रशस्ति-

पत्र का वाचन किया। समारोह के मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री प्रकाशजी टाटिया ने आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज के प्रवचनों पर आधारित पुस्तक 'आध्यात्मिक आलोक' भेंट कर उन्हें सम्मानित किया। इस अवसर पर आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी वर्ष पर बनाये गए पोस्टर का विमोचन भी किया गया।

प्रमुख वक्ता डॉ. धर्मचन्द्रजी जैन ने आचार्य हस्ती की साहित्य एवं समाज को देन विषय पर विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि आचार्यश्री के सिद्धान्त एवं विचारों ने समाज और जीवन को सुधारने में अपना अमूल्य योगदान दिया है। व्यक्ति अपने दुःख का स्वयं ही कारक होता है। गुरुदेव ने स्वाध्याय और सामायिक के रूप में ऐसे अमोघ उपाय बताए हैं कि व्यक्ति अपने जीवन को खुद आत्मकल्याण की राह पर ले जा सकता है।

शाकाहार रत्न आचार्य श्री श्रीनिवास ने अपने उद्बोधन में अहिंसा के महत्त्व को प्रतिपादित किया। इस अवसर पर विभिन्न भाषाओं में लिखित पुस्तक 'शाकाहार जगत्' का विमोचन भी किया गया। न्यायाधिपति श्री प्रकाशजी टाटिया एवं श्री कैलाशचन्द्रजी हीरावत ने भी आचार्य श्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। आचार्य हस्ती सम्मान से सम्मानित श्री सुरेन्द्रजी लुनिया ने कहा कि उनका सौभाग्य है कि इस आयोजन में जुड़ने का अवसर मिला। समाज-सेवा मेरा लक्ष्य है, मुझे समाज ने जो कुछ दिया है, मैं भी समाज की भलाई में योगदान देकर उसे लौटाना चाहता हूँ।

इस अवसर पर अनेक सामाजिक संस्थाओं ने भी श्री लुनिया का सम्मान किया। कार्यक्रम में अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के क्षेत्रीय प्रधान श्री दलपतराजजी छाजेड़ सहित संघ के पदाधिकारी एवं गणमान्य लोग मौजूद थे।

-श्रीपाल देशलहर

जैन रत्न प्रोफेशनल एसोशिएशन (जे.आर.ए.ओ.पी.) का गठन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अन्तर्गत श्री शेखरजी भण्डारी, मुम्बई के नेतृत्व में जैन रत्न प्रोफेशनल एसोशिएशन का गठन किया गया है जो श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्राविका मण्डल एवं युवक परिषद् के उन सदस्यों का संगठन करेगा जो विभिन्न प्रकार के प्रोफेशनल क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। इस संगठन का उद्देश्य उनमें भ्रातृत्व एवं प्रेम जगाने के साथ उनके क्षेत्र में उन्नयन के अवसर प्रदान करना है। वे जिस भी क्षेत्र में कार्य कर रहे हों उसमें उनकी मदद और मार्गदर्शन करने के साथ यह स्किल डवलपमेण्ट में भी सहयोगी होगा। यह स्पॉन्सर के रूप में तथा पुस्तकालय एवं अध्ययन केन्द्र स्थापित करने में भी सहयोगी होगा। साथ ही सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक कार्यक्रमों को आयोजित करेगा। संघ में ज्ञान, दर्शन एवं आचरण के विकास में भी सहयोगी बनेगा। प्रारम्भ में इस संगठन के द्वारा ज्ञान वितरण सत्र, जीवन-निर्माण-मार्गदर्शन, छात्रवृत्ति, पुरस्कार आदि के कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। इस क्रम में प्रथम सत्र मुम्बई में अप्रैल 2020 में ज्ञान सत्र के रूप में आयोजित किया जा रहा है। इसके अनन्तर इसे जोधपुर, जयपुर, चेन्नई, बेंगलोर, सूरत और अहमदाबाद में आयोजित करने की योजना है। इस सम्बन्ध में श्री शेखरजी भण्डारी से सम्पर्क किया जा सकता है। सम्पर्क सूत्र-शेखर भण्डारी, ईमेल-shekhhar.bhandari@kotak.com, मो. 9819955506

अखिल भारतीय स्तर पर आगम 'आवश्यक सूत्र' पर लिखित परीक्षा 27 जनवरी, 2021 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास मार्तण्ड, युगमनीषी, अध्यात्म-योगी, परम पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. के दीक्षा शताब्दी वर्ष को पूरे भारत वर्ष में अटूट श्रद्धा-भक्ति, सेवा एवं उत्साह के साथ मनाया जा रहा है।

रत्न संघ के प्रत्येक परिवार में कम से कम एक सदस्य प्रतिक्रमण को विधि एवं अर्थ सहित कण्ठस्थ करे, ऐसा लक्ष्य संघ द्वारा निर्धारित किया गया है। प्रतिक्रमण आवश्यक सूत्र आगम का एक अंग है। प्रत्येक सदस्य सूत्रों के अर्थ एवं भावार्थ को समझकर अपने क्रियात्मक पक्ष को मजबूत करे, एतदर्थ अखिल भारतीय स्तर पर आवश्यक सूत्र आगम पर लिखित परीक्षा का आयोजन आचार्य भगवन्त के 111वें जन्मदिवस 27 जनवरी, 2021 को किया जा रहा है। सभी सदस्य दीक्षा शताब्दी वर्ष में 'आवश्यक सूत्र' आगम का प्रतिदिन स्वाध्याय कर इस परीक्षा में अवश्य भाग लें। परीक्षा से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी इस प्रकार है-

1. इस परीक्षा हेतु फॉर्म ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों तरह से उपलब्ध हैं। ऑनलाइन फार्म रत्नसंघ एप्प एवं वेबसाइट के माध्यम से भरे जा सकेंगे।
2. परीक्षा का समय 3.00 घण्टे रहेगा, जिसमें दो तरह के प्रश्न पत्र होंगे। प्रथम Objective Type के प्रश्न-पत्र का समय आधा घण्टा रहेगा, जिसमें परीक्षार्थियों को उत्तर कण्ठस्थ किए गए ज्ञान के आधार पर देना होगा। द्वितीय Subjective Type के प्रश्न पत्र का समय 2.5 घण्टा रहेगा, जिसमें आवश्यक सूत्र की पुस्तक साथ में लेकर प्रश्नों के उत्तर ढूँढकर लिखे जा सकेंगे।
3. परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक सूत्र पुस्तक का अर्द्धमूल्य 50/- रखा गया है। जो परीक्षार्थी इस परीक्षा में भाग लेने हेतु फार्म भरकर देंगे, उन्हें ही पुस्तक दी जायेगी। डाक द्वारा पुस्तक मँगवाने पर उसका व्यय अलग से देय होगा।
4. जहाँ कम से कम 10 परीक्षार्थी होंगे वहाँ परीक्षा का केन्द्र रखा जायेगा।
5. प्रश्न-पत्र में आवश्यक सूत्र की पुस्तक में से कहीं से भी प्रश्न दिये जा सकते हैं।
6. आवश्यक सूत्र की परीक्षा में बैठने वाले सभी परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जायेगा।
7. आवश्यक सूत्र परीक्षा में वरीयता सूची में प्रथम स्थान पाने वाले को रुपये 25000/-, द्वितीय-21000/-, तृतीय-15000/- का पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। परीक्षा में 90 से अधिक अंक पाने वाले को रुपये 1000/- तथा 80 से 90 तक अंक पाने वाले को रुपये 500/- का प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जायेगा।
8. 50 अंक लाने वाले को उत्तीर्ण माना जायेगा तथा सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रशस्ति पत्र दिया जायेगा।
9. उक्त परीक्षा के सम्बन्धित अन्य कोई जानकारी एवं किसी भी प्रकार का उचित परिवर्तन होने पर उसकी सूचना जिनवाणी, रत्नम् एवं रत्नसंघ एप्प के माध्यम से दी जायेगी।

उक्त परीक्षा में देश भर के जैन-जैनेतर सदस्यों के साथ ही संघ एवं सहयोगी संस्थाओं के सभी पदाधिकारी, संस्कार केन्द्र के छात्र एवं अध्यापक, स्वाध्याय संघ के स्वाध्यायी, शिक्षण बोर्ड के परीक्षार्थी एवं केन्द्राधीक्षक, निरीक्षक भी अवश्य भाग लें, ऐसा आग्रह पूर्ण निवेदन है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

आचार्य हस्ती के जीवन-दर्शन पर 'रत्नसंघ एप्प' के माध्यम से ऑनलाइन परीक्षा

सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास मार्तण्ड, युगमनीषी, अध्यात्म-योगी, परम पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. का दीक्षा शताब्दी वर्ष 26 जनवरी 2020 से प्रारम्भ हो चुका है। संघ द्वारा इस वर्ष में आचार्य हस्ती के जीवन दर्शन, सामायिक, प्रतिक्रमण, आवश्यक सूत्र आधारित विषयों को केन्द्र में रखकर कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। इसी कड़ी में रत्नसंघ एप्प के माध्यम से प्रतिमाह ऑनलाइन परीक्षा आयोजित की जायेगी। इस परीक्षा की प्रमुख जानकारी इस प्रकार है-

1. यह ऑनलाइन परीक्षा प्रत्येक माह के अन्तिम रविवार को दोपहर 3 से 4 बजे के मध्य आयोजित होगी। परीक्षार्थियों को इसी एक घण्टे में एप्प में लॉगइन करना होगा। प्रथम परीक्षा 29 मार्च, 2020 को आयोजित की जायेगी।
2. प्रत्येक परीक्षार्थी को एप्प में परीक्षा देने हेतु 30 मिनट का समय मिलेगा, किन्तु 4 बजे के बाद परीक्षा नहीं दे सकेंगे।
3. इस परीक्षा में आचार्य श्री हस्ती के जीवन सम्बन्धी तथा सामायिक प्रतिक्रमण सम्बन्धी बहुविकल्पात्मक 30 प्रश्न प्रतिमाह दिये जायेंगे।
4. तीन माह की परीक्षा के पश्चात् परीक्षार्थियों के तीन माह के औसत अंक निकालकर वरीयतानुसार प्रथम को 2100/-, द्वितीय को 1100/-, तृतीय को 500/- तथा 10 सान्त्वना पुरस्कार 250 रुपये के प्रदान किए जायेंगे।
5. मार्च-2020 से फरवरी-2021 तक की सभी परीक्षाओं में भाग लेने वालों में से सर्वोच्च औसत अंक पाने वाले परीक्षार्थियों को श्रेणी अनुसार विशेष रूप से सम्मानित किया जायेगा।
6. सभी पुरस्कार अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से दिये जायेंगे।
7. उपर्युक्त नियमों में आवश्यकतानुसार उचित परिवर्तन किया जा सकेगा, जिसकी सूचना रत्न संघ एप्प में दी जायेगी।
8. परीक्षा से सम्बन्धित किसी भी जानकारी हेतु ईमेल-sanghwebsite@gmail.com तथा मोबाइल नं. 94142-67824 पर प्रातः 10.00 बजे से सायं 4.00 बजे तक सम्पर्क किया जा सकता है।

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर

(सिद्धान्त शाला) में वर्ष 2020 के प्रवेश हेतु रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ

जयपुर-आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर (सिद्धान्तशाला) में वर्ष 2020 से प्रवेश प्राप्त करने वाले छात्रों के रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ हो गये हैं। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. की प्रेरणा से वर्ष 1973 में संस्थापित शिक्षण संस्थान में आध्यात्मिक शिक्षण के साथ-साथ उच्च अध्ययन की समुचित व्यवस्था है। साथ ही विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए कई कार्यक्रम भी संचालित किये जाते हैं। संस्थान में विद्यार्थियों के लिए उचित आवास-भोजन व्यवस्था के साथ कम्प्यूटर शिक्षण, इंग्लिश स्पीकिंग क्लासेज, सेमिनार एवं मोटिवेशनल कक्षाएँ आयोजित होती रहती हैं।

शैक्षणिक अध्ययन के साथ संस्थान द्वारा निर्धारित धार्मिक पाठ्यक्रम का अध्ययन भी संस्थान में करवाया जाता है। जो छात्र अभिभावक संस्कारित रहकर जयपुर में उच्च अध्ययन करना चाहते हैं, वे रजिस्ट्रेशन के लिए सम्पर्क करें। **रजिस्ट्रेशन के लिए योग्यता**-कक्षा 8वीं से उच्च कक्षा का कोई भी विद्यार्थी रजिस्ट्रेशन करवा सकता है। विद्यार्थी को धार्मिक एवं नैतिक संस्कारों को सीखने में रुचि हो। **रजिस्ट्रेशन कैसे करें**-संस्थान के दिये गये सम्पर्क सूत्र पर सम्पर्क करें अथवा <https://ratnasangh.com/> वेबसाइट से अथवा हमारे फेसबुक पेज facebook.com/people/sidhantshala 1100011420126008 से फॉर्म डाउनलोड कर संस्थान के पते पर अथवा ईमेल ahassanathan@gmail.com पर प्रेषित करें। **संस्थान में प्रवेश कैसे होगा**-माह अप्रैल अथवा जून 2020 में संस्थान में प्रवेश के लिए प्राप्त आवेदनों में से चयनित छात्रों का इण्टरव्यू के आधार पर सलेक्शन किया जायेगा।

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें—दिलीप जैन, प्राचार्य, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) 0141-2710946, 9461456489

महाराष्ट्र, मेवाड़ एवं मध्यप्रदेश में प्रचार-प्रसार सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा महाराष्ट्र, मेवाड़ और मध्यप्रदेश क्षेत्र में 31 जनवरी से 04 फरवरी, 2020 तक प्रवास कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके अन्तर्गत सभी स्थानों पर नये स्वाध्यायी बनाने, पर्युषण पर्व में स्वाध्यायी बुलाने, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में भाग लेकर ज्ञान वृद्धि करने, धार्मिक पाठशाला प्रारम्भ करने, आचार्य हस्ती दीक्षा-शताब्दी एवं स्वाध्याय संघ के हीरक जयन्ती वर्ष में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी प्रदान की गई।

-सुभाष हुण्डीवाल

शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा 05 जुलाई को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा 1 से 12 तक की परीक्षा रविवार, 05 जुलाई, 2020 को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जायेगी। आवेदन-पत्र, पुस्तकें, परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें—अशोक बाफना (चैन्नई) संयोजक-094442-70145, प्रशांत पारख (जलगाँव) सह-संयोजक-094222-32501, सुभाष नाहर (जोधपुर) सचिव-094132-02678, शिक्षण बोर्ड कार्यालय-सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003 (राज) 291-2630490, 76109-53735।

-सुभाष नाहर, सचिव

पुणे में 'व्याख्या-परम्परा से भारतीय दर्शन का विकास' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

दर्शनशास्त्र विभाग, सावित्री बाई फुले विश्वविद्यालय, पुणे में 11 से 13 फरवरी, 2020 को 'व्याख्या-परम्परा से भारतीय दर्शन का विकास' (The Development of Indian Philosophy through Commentarial Tradition) विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में प्रो. दिलीप कुमार मोहन्ता-कोलकाता, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी-पुणे, प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा-सागर, प्रो. अरुण मिश्र-दिल्ली, प्रो. सच्चिदानन्द मिश्र-वाराणसी, प्रो. प्रदीप गोखले-पुणे, प्रो. मधुमिता चट्टोपाध्याय-जादवपुर, प्रो. बिमलेन्द्र कुमार-वाराणसी, प्रो. गोदावरीश मिश्र-चेन्नई, प्रो. मंगला चिंचोरे-पुणे, प्रो. मीनल कातरनिकर आदि विद्वज्जनों ने वेदान्त, न्याय, मीमांसा, सांख्य, योग, बौद्ध आदि दर्शनों पर शोधालेख प्रस्तुत करते हुए टीका-भाष्य साहित्य का महत्त्व प्रतिपादित किया। प्रो. धर्मचन्द्र जैन, जयपुर (सम्पादक, जिनवाणी) ने तत्त्वार्थसूत्र के टीकाकारों द्वारा जैन प्रमाणशास्त्र के विकास में प्रदत्त योगदान को प्रस्तुत किया।

नालन्दा महाविहार में 'कारण-कार्य' विषय पर संगोष्ठी

नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा (बिहार) में 16 से 19 जनवरी, 2020 तक 'नालन्दा डॉयलॉग' के नाम से राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का विषय था—'दर्शन एवं आधुनिक विज्ञान में कारण-कार्य का विचार' (Causality in Philosophy and Modern Science)। इस संगोष्ठी में देश के विभिन्न भागों से दार्शनिकों एवं वैज्ञानिकों ने कारण-कार्य के स्वरूप के विविध पक्षों पर विचार प्रकट किए। उद्घाटन सत्र को जम्मू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मनोज कुमार धर ने मुख्य अतिथि के रूप में, भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद्, दिल्ली के चेयरमेन प्रो. आर. सी. सिन्हा ने विशिष्ट अतिथि के रूप में तथा नव नालन्दा महाविहार के कुलपति प्रो. वैद्यनाथ लाभ ने अध्यक्ष के रूप में सम्बोधित किया।

‘जैनदर्शन के अनुसार कारण-कार्य सिद्धान्त एवं उसकी व्यावहारिकता’ (Causality in Jain Philosophy and its Proctability) विषय पर जिनवाणी के सम्पादक प्रो. धर्मचन्द जैन ने शोधालेख प्रस्तुत कर जैनदर्शन का प्रतिनिधित्व किया तथा एक प्लेनेरी सेशन का समन्वयन किया।

अहमदाबाद में प्रथम जैन अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

वर्ल्ड जैन कॉन्फडरेशन, जीतो (JITO), श्रुतरत्नाकर एवं जैन एसोशिएशन इन नार्थ अमेरिका (JAINA) के संयुक्त तत्त्वावधान में 18-19 जनवरी, 2020 को प्रथम जैन अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अहमदाबाद विश्वविद्यालय के सभागार में आयोजित इस संगोष्ठी को देश के विभिन्न विद्वानों ने सम्बोधित किया, डॉ. बिपिन डोशी मुम्बई, प्रो. गयाचरण त्रिपाठी दिल्ली, प्रो. जगतराम भट्टाचार्य शान्ति निकेतन, प्रो. नरेन्द्र भण्डारी अहमदाबाद, प्रो. धर्मचन्द जैन जयपुर, डॉ. लता बोथरा कोलकाता, डॉ. श्वेता जैन जोधपुर आदि 25 से अधिक विद्वानों के शोधालेख प्रस्तुत किए। श्री वल्लभाई भंसाली एवं प्रो. शैलेन्द्र मेहता ने भी सम्बोधित किया। आचार्य अजयसागरजी का भी प्रेरक उद्बोधन हुआ। जैन संस्था के माध्यम से जैन पारिभाषिक कोश तैयार किया जा रहा है। संगोष्ठी का संयोजन प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. जितेन्द्र शाह द्वारा किया गया।

संक्षिप्त-समाचार

जोधपुर-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र द्वारा 26 जनवरी, 2020 को परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के दीक्षा-शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में जोधपुर के 30 रविवारीय केन्द्रों पर आचार्य श्री की जीवनी के बारे में अध्यापकों द्वारा छात्र-छात्राओं को जानकारी दी गई। 09 फरवरी, 2020 को सभी रविवारीय संस्कार शिविर केन्द्रों पर जीवनी पर आधारित प्रश्नोत्तरी की लिखित परीक्षा आयोजित की गई, जिसमें 214 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहन पुरस्कार एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गये।

-राजेश भण्डारी, सचिव

जोधपुर-श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर द्वारा 19 जनवरी, 2020 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरूपार्क में ‘जिनशासन मेले’ का आयोजन किया गया। मेले का उद्देश्य बच्चों में संस्कार जगाना, युवाओं को धर्म से जोड़ना एवं घर को यतना से सुसज्जित करना था। कार्यक्रम को सफल बनाने में समस्त पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने पूर्ण निष्ठा एवं लगन से अपना सहयोग प्रदान किया। किसी ने अपनी स्टॉल सजाने में, किसी ने खेल बनाने में तो किसी ने खेल खिलाने में सहयोग प्रदान किया। अलग-अलग तरह की स्टॉलें सजाने का कार्य श्राविकाओं एवं छोटी-छोटी बालिकाओं द्वारा किया गया। इस मेले में सोलह सतियों के नाम पर एवं ‘खेल-खेल में सीखें ज्ञान, जैन धर्म है बड़ा महान्’ और ‘यतना से घर को सजाना है, निज आतम को पाना है’ के आधार पर कुल 18 स्टॉल लगाई गई। मेले का उद्घाटन रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री प्रकाशजी टाटिया द्वारा किया गया। इस अवसर पर संघ-संरक्षक श्री प्रसन्नचन्दजी बाफना, संघ महामन्त्री श्री धनपतजी सेठिया, श्राविका मण्डल कार्याध्यक्ष श्रीमती बीनाजी मेहता, स्थानीय संघमन्त्री श्री नवरतनजी गिड़िया सहित संघ, श्राविका मण्डल एवं युवक परिषद् के कई पदाधिकारी उपस्थित थे। श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती सुमनजी सिंघवी ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी आगन्तुकों का धन्यवाद और आभार प्रकट किया।

-काजल जैन, सचिव

चेन्नई-अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र की ओर से प्राकृत भाषा शिक्षण के लिए साप्ताहिक कक्षाएँ दो दशक से आयोजित हो रही हैं, जिनमें वार्षिक पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को राजस्थान विश्वविद्यालय से मान्य

अपभ्रंश साहित्य अकादमी जयपुर से प्रमाणपत्र दिये जाते हैं। इसमें जैन और जैनेतर, हिन्दी तथा हिन्दीतर भाषियों के अलावा साधु-साध्वी भी प्राकृत सीख रहे हैं। वर्ष 2020 के प्रवेश हेतु सम्पर्क सूत्र-डॉ. प्रियदर्शना जैन (मो. 9840368851)।

-मीनू चोरड़िया, 9841611456

नई दिल्ली-ज्ञानोदय चेरिटेबल सोसायटी, नई दिल्ली योग्य जैन विद्यार्थियों के लिए सैकेण्डरी स्कूल तक शिक्षा जारी रखने हेतु आवश्यक आर्थिक सहायता प्रदान करती है। आवेदन-पत्र हेतु सम्पर्क सूत्र-Gyanodaya Charitable Society (Regd. No. 40194/2001) 572, Asiad Village, New Delhi-110049 Ph. 011-26493538/26492386 or 9811449431 वेबसाइट-www.gcsdelhi.org (फार्म वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं)।

-अध्यक्ष, ज्ञानोदय चेरिटेबल सोसायटी

जयपुर-श्री कन्हैयालाल हीरावत चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर ने 17 जनवरी, 2020 को जोगणिया माताजी तहसील बेगू (चित्तौड़गढ़) में राजस्थान राज्य की भ्रमणशील चिकित्सा इकाई के सहयोग से चालीसवाँ निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाया। इसमें मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण एक्स-रे, सोनोग्राफी एवं सारे टैस्ट के पश्चात् ऑपरेशन, दवाइयाँ एवं भोजन आवास आदि सब निःशुल्क रहे। 606 मरीजों की भर्ती के पश्चात् 522 योग्य मरीजों के ऑपरेशन हुए। जिसमें 239 के आँखों के ऑपरेशन, 223 के लैन्स लगाये, 227 सभी पुरुषों के विभिन्न ऑपरेशन, 32 हड्डियों के ऑपरेशन, 11 स्त्रियों के बड़े ऑपरेशन, 13 दाँतों के विभिन्न ऑपरेशन किये गए। यहीं बड़े ऑपरेशनों में खून भी चढ़ाया, 1835 खून की विभिन्न जाँच, 687 पेशाब की जाँच, 1503 की बायाकेमिस्ट्री, 2 वीर्य जाँच, 266 एक्स-रे, 154 ईसीजी, 191 सोनोग्राफी, 582 अन्य जाँच हुई।

-पारसचन्द हीरावत, मैनेजिंग ट्रस्टी

सूरत-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ का पञ्चम स्नेह-मिलन समारोह 23 से 25 जनवरी तक लोनावाला रिसोर्ट एवं एमेजिका थीम पर बहुत ही शालीनता और अनुशासन से सम्पन्न हुआ। सभी सदस्यों ने समाज के इस कार्यक्रम में प्रत्येक दिवस सामायिक-साधना से प्रारम्भ किया और भरपूर आनन्द उठाया।

-सुभाष बोहरा

जयपुर-आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर (सिद्धान्तशाला) के विद्यार्थियों को शॉर्टहैण्ड (स्टेनो) का प्रशिक्षण देने वाले श्री प्रेमराजजी जैन ने अब तक लगभग 6,000 विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया है जिनमें से लगभग 3,500 से अधिक विद्यार्थी केन्द्र सरकार/राजस्थान सरकार/विधान सभा/लोक सभा/सचिवालय आदि कार्यालयों में कार्यरत हैं। इनके द्वारा गजेन्द्र निधि ट्रस्ट को रुपये 21,000/- की राशि भेंट की गई है।

-अशोक कुमार जैन (हरसाना वाले)

मुम्बई-डॉ. अरिहन्त कुमार जैन के सम्पादन में वसन्त पञ्चमी के अवसर पर 'प्राकृत टाइम्स' समाचार-पत्र का शुभारम्भ किया गया, जिसका उद्देश्य लोगों को प्राचीन प्राकृत भाषा के प्रति जागरूक करना है।

बधाई

जोधपुर-श्रावकरत्न श्री मनमोहनजी कर्णावट को अखिल भारतीय कर्णावट भाईपा संघ की रायपुर (छतीसगढ़) में



28-29 दिसम्बर, 2019 को आयोजित साधारण सभा में सर्वसम्मति से निरन्तर दूसरी बार निर्विरोध राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना गया। आप वर्तमान में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर में चिकित्सा समिति के उपाध्यक्ष पद को भी सुशोभित कर रहे हैं।

जोधपुर-श्री नरेशजी सालेचा को भारतीय रेल सेवा में पदोन्नत करते हुए रेल-मन्त्रालय में अतिरिक्त सचिव (राजस्व) का दायित्व सौंपा गया है। वित्त के क्षेत्र में श्री सालेचा की दक्षता को देखते हुए सरकार ने रेल-मन्त्रालय में यह नया पद सृजित किया है। आप दिल्ली मेट्रो, कोलकाता मेट्रो, आई.आर.सी.टी.सी., रेलटेल, हुडको जैसी संस्थाओं में निदेशक के रूप में सेवाएँ प्रदान कर चुके हैं। आपने अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि 30 देशों के समझौतों में राष्ट्र का प्रतिनिधित्व किया है।

-अमरचन्द बाफना

जयपुर-डॉ. निरंजन कुमार खींचा को भारत सरकार के मानव संसाधन मन्त्रालय के इण्डियन कौंसिल ऑफ सोशल रिसर्च संस्थान द्वारा 'पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण : जैन संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में मूल्याङ्कन' हेतु सीनियर फेलोशिप प्रदान की गई है। इस फेलोशिप के अन्तर्गत जैन संस्कृति में पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण के सूत्र पृष्ठाङ्कित किये जायेंगे। आप राजस्थान प्रशासनिक सेवा के सुपरटाइम स्केल से सेवानिवृत्त एक वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी हैं। आप अनेक संस्थाओं के संस्थापक-अध्यक्ष और अनेक राजकीय तथा सामाजिक संगठनों के कार्यकारी अध्यक्ष हैं। आप 'महावीर का अर्थशास्त्र', 'परं को कैसे प्राप्त करें' तथा तीसरी पुस्तक 'स्टॉम्प लॉ-इन राजस्थान' के लेखक हैं।

-डॉ. पी. सी. जैन



अभिनव गुलेच्छा



विमलचन्द सुराणा



उदित बागमार



शनिल रांका

जोधपुर-श्री अभिनवजी सुपुत्र श्रीमती विद्याजी-श्री सुमेरचन्दजी, सुपौत्र श्रीमती सुशीलादेवीजी-स्व. त्रिलोकचन्दजी गुलेच्छा (घी वाले) ने अच्छे अङ्कों में सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपकी दादीजी वरिष्ठ स्वाध्यायी श्रीमती सुशीलाजी श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर की अध्यक्ष रह चुकी हैं।

जोधपुर-श्री विमलचन्दजी सुपुत्र श्री भँवरलालजी सुराणा निवासी सेवकी कला, तहसील बावड़ी ने चार्टर्ड अकाउण्टेण्ट (सीए) परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप वर्तमान में राजस्थान सरकार के उपक्रम जेडीवीवीएनएल, जोधपुर में कार्यरत हैं।

-दिनेश कुमार सुराणा

बेंगलुरु-श्री उदितजी सुपुत्र श्री प्रसन्न जी बागमार जैन (सीए) ने डिप्लोमा इन इण्टरनेशनल टैक्सेशन में समूचे भारत में तृतीय रैंक प्राप्त की है। आपके पिता श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

-सज्जनराज मेहता

जोधपुर-श्री शनिल जी (सी.ए., सी.एस., सी.एम.ए.) सुपौत्र श्री प्रेमचन्दजी सुपुत्र श्री माँगीलालजी रांका की 25 वर्ष की आयु में "Ernest & Young Company" में सहायक प्रबन्धक पद पर पदोन्नति हुई है।

कोटा-श्री महावीरजी जैन (रानीपुरा वाले), सहायक लेखाधिकारी ग्रेड प्रथम को महानिरीक्षक पुलिस, कोटा रेंज कोटा में उत्कृष्ट कार्य के लिए राजस्थान सरकार के स्वायत्त शासन मन्त्री श्री शान्तिलालजी धारीवाल द्वारा जिला स्तरीय 71वें गणतन्त्र दिवस 26 जनवरी, 2020 को स्टेडियम में सम्मानित किया गया।



कोटा-श्री रमेश कुमारजी जैन (रानीपुरा वाले), मुख्य प्रबन्धक, भारतीय स्टेट बैंक शाखा बारों को उत्कृष्ट कार्य के लिए जिला स्तरीय गणतन्त्र दिवस समारोह में 26 जनवरी, 2020 को बारों में गोपालन एवं खान विभाग के मन्त्री श्री प्रमोदजी जैन भाया द्वारा सम्मानित किया गया।



श्रद्धाञ्जलि

जयपुर-अनन्य गुरुभक्त, सरलात्मा सुश्राविका श्रीमती सरदारप्रभाजी धर्मसहायिका स्व. श्री उत्तमचन्दजी मुणोत का देहावसान 29 जनवरी, 2020 को 95 वर्ष की वय में हो गया। आप धर्म एवं करुणा की प्रतिमूर्ति थीं। आप सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थी। आपने मात्र 21 वर्ष की वय में ही बारह व्रत अंगीकार कर लिये थे एवं 30 वर्ष की आयु में 50 पौषध/संवर प्रतिवर्ष और 40 वर्ष की आयु में ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार कर लिया था। आपने जीवन में जैन धर्मानुसार बताए गये सभी बारह प्रकार के तपों को विधि पूर्वक सम्पन्न किया। प्रमुख रूप से 1 मासखमण, 2 वर्षी तप, 11 नवपद ओलीजी, कर्मशूर तप, मेरु तप, बड़ा पखवासा, छोटा पखवासा, अनेक अठाइयाँ, 55 से अधिक तेले तथा अनेक प्रकार की तपस्याएँ की। उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के विक्रम सम्वत् 2061 के जयपुर चातुर्मास में आपने चारों कषायों के आजीवन त्याग कर अपनी आत्मा को निखारा। आपने लगभग 500 व्यक्तियों को व्रतधारी तथा निर्व्यसनी बनाया। आप दीक्षा दिवस पर बूचड़खाने आदि बन्द करवाने में सराहनीय कार्य करती रही। आपने वृद्धावस्था में कुछ वर्षों पूर्व भी जयपुर में प्रस्तावित बूचड़खाने के विरोध में माणक चौक चौपड़ पर धरना देकर मूक जीवों के प्रति करुणा भावना का परिचय दिया। आप शारीरिक रूप से कमजोर होने पर भी अपने दृढ़ मनोबल से अपनी सामायिक साधना एवं तप-त्याग में अग्रसर रही। आपके द्वारा प्रदान किये गये धार्मिक संस्कारों का निर्वहन आपका पूरा परिवार कर रहा है। आपके सुपुत्र श्री प्रमोदचन्दजी महनोत श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर शाखा के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं और आध्यात्मिक शिक्षा समिति के संयोजक पद पर अपनी सेवाओं से समाज को लाभान्वित कर रहे हैं। आपने सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष पद पर अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान की है और उदारमना होकर मुक्त हस्त से कई स्थानों पर स्थानक, छात्रावास, धार्मिक संस्थाओं के उन्नयन में महत्वपूर्ण अर्थसहयोग प्रदान कर रहे हैं। उनके द्वारा मालवीयनगर-जयपुर में 'श्री उत्तम स्वाध्याय भवन' के रूप में निःशुल्क छात्रावास प्रारम्भ किया गया है। श्राविकारत्न के लघु सुपुत्र श्री विवेकजी श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, अजमेर शाखा के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं।

-अशोक कुमार सेठ, मण्डल मन्त्री

जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री जौहरीलालजी पटवा का 1 फरवरी, 2020 को 94 वर्ष की वय में देहावसान हो गया।



देव, गुरु, धर्म एवं संघ के प्रति समर्पित अनन्य गुरुभक्ति से संपृक्त भावना वाले पटवा सा. ने पीढ़ी दर पीढ़ी से प्राप्त धर्म-संस्कारों को आत्मसात् कर भावी पीढ़ी को धर्मसंस्कारों से पोषित किया। गुरु हस्ती एवं गुरु हीरा के सामायिक-स्वाध्याय सन्देश को जीवन में अंगीकार कर साधना-आराधनामय जीवन जीया। जीवनपर्यन्त परोपकारी प्रवृत्ति रही। संघ के लिए सुपुत्रों, पुत्रवधुओं एवं पौत्र-पौत्रियों को भी प्रेरित किया। गुरुदेव एवं सन्त-सतियों के सान्निध्य एवं सेवा का लाभ लेने में सदैव तत्पर रहे। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में आप एवं आपका परिवार सदैव तत्पर रहा है। आपकी इच्छानुसार आपकी पार्थिव देह मेडिकल कॉलेज में प्रदान की गई। आप सुपुत्र श्री राजेन्द्रजी, सुरेन्द्रजी, नरेन्द्रजी, महेन्द्रजी, जितेन्द्रजी, डॉ. शैलेन्द्रजी एवं सुपुत्री श्रीमती आशाजी कुम्भट, उषाजी बरडिया एवं सुधाजी सिंघी का धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गए हैं। आपके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री राजेन्द्र कुमारजी पटवा संघ-सेवा में सक्रिय हैं। उन्होंने

सामायिक संघ में संयोजक तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल में संयुक्त मन्त्री पद का दायित्व बखूबी निर्वहन किया। श्री राजेन्द्रजी की धर्मसहायिका श्रीमती सन्तोषजी पटवा श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर में मन्त्री पद पर अपना दायित्व बखूबी निर्वहन कर रही है। सुपौत्र श्री रितुलजी पटवा सम्प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कोषाध्यक्ष हैं। समस्त पटवा परिवार संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं में सक्रिय रूप से सेवाएँ प्रदान कर रहा है।

-अशोक कुमार सेठ, मण्डल मन्त्री

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री मदनचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री सायरचन्दजी कांकरिया का 1 फरवरी, 2020 को देहावसान हो गया। सन्त-सतीवृन्द की सेवा भक्ति के साथ-साथ आप जीवदया प्रेमी भी थे। स्वधर्मी वात्सल्य की भावना आपके हृदय में पूर्ण रूप से समायी हुई थी। अपने सम्पर्क में आने वाले स्वधर्मी बन्धुओं के सहयोग हेतु आप हमेशा तत्पर रहते थे। अपने पूज्य पिताश्री जो संघ के स्तम्भ थे, उनसे विरासत में प्राप्त संस्कारों को आपने अपने जीवन में सदैव बनाए रखा। आप स्वयं ने संस्कारी जीवन जीते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया था, जिसके फलस्वरूप आपके सुपुत्र श्री शुभमजी एवं पुत्रवधू श्रीमती मधुजी सहित समस्त कांकरिया परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहता है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

बिजयनगर (अजमेर)-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री सोहनलालजी तातेड़ का 29 जनवरी, 2020 को देहावसान हो गया। तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के बिजयनगर चातुर्मास तथा व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकँवरजी म.सा. आदि ठाणा सहित सन्त-सतीवृन्द के शेखेकाल बिजयनगर पधारने पर आप सहित समस्त परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का अपूर्व लाभ प्राप्त किया। आप एक जिन्दादिल शख्सियत थी। आपकी सामाजिक, धार्मिक और शैक्षणिक गतिविधियों में काफी सक्रियता रही। आपने नगरपालिका के अध्यक्ष पद का दायित्व निर्वहन के बाद कई संस्थाओं में विभिन्न पदों पर रहकर उनका बखूबी निर्वहन किया। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी तातेड़ परिवार सदैव समर्पित रहा है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

जयपुर-सुश्राविका श्रीमती मंजुलाजी धर्मपत्नी श्री निर्मल कुमारजी जैन का देहावसान 06 फरवरी, 2020 को हो गया। आप सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थी। आपका जीवन त्याग-प्रत्याख्यान से परिपूर्ण था। आपके मरणोपरान्त आपकी पार्थिव देह नेशनल आयुर्वेदिक इन्स्टीट्यूट, जोरावरसिंह गेट को दान की गयी।

-हेमन्त छाजेड़

कोटा-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री त्रिलोकचन्दजी जैन का 1 जनवरी, 2020 को लगभग 80 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप अखिल भारतीय पल्लीवाल महासभा के सक्रिय सदस्य रहे। आप जिनवाणी मासिका पत्रिका के नियमित पठन के साथ सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आपके जीवन में आतिथ्य सत्कार, कर्त्तव्यनिष्ठा जैसे विशेष गुण थे। आपके दो सुपुत्र श्री उमेशजी, राजीवजी और पुत्रवधुएँ श्रीमती प्रभाजी, श्रीमती रितुजी एवं धर्मसहायिका श्रीमती शकुन्तलाजी जैन हैं। आपकी पुत्रवधू श्रीमती प्रभाजी स्वाध्यायी हैं एवं कोटा मण्डल की सक्रिय सदस्य है।

-नरेश जैन

चेन्नई-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कंचनकँवरजी धर्मपत्नी श्री ज्ञानचन्दजी बागमार (मेड़ता निवासी) का 12 फरवरी, 2020 को 83 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप ग्राम-पीह के कोठारी परिवार की बेटी थी। आपका जीवन त्याग-तप और व्रत-नियमों से मर्यादित था। आपका सुसंस्कारित परिवार गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति अत्यंत भक्ति रखता हुआ सबकी सेवा में तत्पर रहता है।

-गौतमचन्द बागमार

नवसारी-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री अरूण कुमारजी सुराणा का 10 फरवरी, 2020 को देहावसान हो गया। आपने सम्पूर्ण जीवन ईमानदारी से चलकर जीया। परम श्रद्धेय प्रातः स्मरणीय आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.,

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. तथा रत्नसंघ के सन्त सतियों के नवसारी विचरण के समय आप सेवा का खूब लाभ लिया करते थे। आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के नवसारी प्रवास के समय आपने 11-12 वर्ष पूर्व ब्रह्मचर्य व्रत के प्रत्याख्यान लिये थे। आपके दोनों अनुज भ्राता श्री देवेन्द्र कुमार सुराणा एवं श्री जितेन्द्र कुमार सुराणा नागौर संघ में सक्रिय सदस्य हैं एवं पुत्र श्री तेजस सुराणा नवसारी रत्नसंघ के वर्तमान युवा अध्यक्ष हैं। *-मुनेन्द्र सुराणा*



जोधपुर-सुश्राविका श्रीमती ढेलीदेवीजी धर्मसहायिका स्व. श्री मेवारामजी गोलेच्छा का 19 फरवरी, 2020 को देहावसान हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करती थीं और आपको जब भी अवसर प्राप्त होता गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ लेती थी। आप स्वयं ने संस्कारी जीवन जीते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया था, जिसके फलस्वरूप आदरणीय श्री केवलचन्द्रजी गोलेच्छा गजेन्द्रनिधि के ट्रस्टी हैं। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के शेखे काल बाड़मेर पधारने पर आप सहित परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया। सन्त-सतीवृन्द की सेवा तथा स्वधर्मी भाई-बहिनों के आतिथ्य-सत्कार में गोलेच्छा परिवार सदैव तत्पर रहा है। *-धनपत सेठिया, महामन्त्री*

बालोतरा-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री चम्पालालजी सुपुत्र स्व. श्री भूरचन्द्रजी गणधरजी चौपड़ा (दांती) का 6 फरवरी, 2020 को 84 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप शान्त स्वभावी एवं धार्मिक प्रवृत्ति के धनी थे। नियमित सामायिक-स्वाध्याय करना आपका नियम था। आपने विक्रम सम्वत् 2049 में शीलव्रत के नियम आचार्य भगवन्त के बालोतरा चातुर्मास में लिए थे। आपका पूरा परिवार धार्मिक गतिविधियों से जुड़ा हुआ है। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं। *-सोहनलाल जैन, बालोतरा*



सुनाम (पंजाब)-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती प्रकाशवतीजी जैन धर्मसहायिका संथारा-साधक स्व. श्री दीपचन्द्रजी जैन का 8 फरवरी, 2020 को 93 वर्ष की आयु में संथारा पूर्वक प्रयाण हो गया। आपमें उत्तम कुटुम्ब भावना, वात्सल्य, उदारता, सहिष्णुता और समाज के प्रत्येक व्यक्ति के प्रति सौहार्द की भावना थी। 65 वर्षों तक निरन्तर सुनाम महिला मण्डल की अध्यक्ष के रूप में समाज की सेवा की। रत्नसंघ के साधु-साध्वीजी के प्रति भी गहरी श्रद्धा-भक्ति थी। गुरुदेवों के प्रति पंजाब के व्याख्यान वाचस्पति श्री सुदर्शनलालजी म.सा. एवं देव, गुरु, धर्म की भक्ति में सदा लीन रहती थी। दान, शील, तप भावना के संस्कार उनमें बचपन से ही थे। 8 वर्ष की आयु से रात्रि चौविहार का नियम ग्रहण कर रखा था। दिन में ग्यारह सामायिक करना, शास्त्रों का स्वाध्याय करना, उभयकाल प्रतिक्रमण उनके जीवन के अभिन्न अंग थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गयी हैं। *-सुविनीत जैन, सूरत*



सवाईमाधोपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती चोसरदेवीजी धर्मपत्नी स्व. लड्डूलालजी जैन (चौधरी) का 27 जनवरी, 2020 को संथारा पूर्वक देवलोके गमन हो गया। आपने पूज्य श्री धर्ममुनिजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री अपूर्वप्रज्ञाजी म.सा. से संथारा ग्रहण किया। आपने जीवन में दो बार वर्षातप की आराधना के साथ ग्यारह, आठ, पाँच दिवस तपस्या के साथ बेलें, तेलें, उपवास, आयम्बिल आदि विविध प्रकार की तपस्या की। गुरु-भक्ति, धर्मनिष्ठा, उदारता, जीवदया आदि आपके व्यक्तित्व की विशेषता थी। स्वास्थ्य की अनुकूलता नहीं होने पर भी सामायिक-स्वाध्याय, जप-तप की



साधना करती थी। आपके परिवारजनों ने अहोभाव पूर्वक सेवा की। आपके सुपुत्र श्री पारसजी, अशोकजी, मुकेशजी आदि सभी संघ सेवा में अग्रणी हैं।

-त्रिलोकचन्द जैन (चौधरी)

गुलाबपुरा-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री भीमसिंहजी संचेती का 17 फरवरी, 2020 को 92 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप दृढ़ संकल्प के धनी, दूरदृष्टा एवं सहृदय समर्पित श्रावक रत्न थे। आपके जीवन में गहराई तक सरलता, सहजता और करुणा की भावना व्याप्त थी। नानकवंशीय सभी संस्थाओं में अध्यक्ष पद पर रहकर आपने उन्हें उत्कर्ष तक पहुँचाया। आपको सर्वोच्च सम्मान 'प्राज्ञरत्न' के विरुद्ध से नवाजा गया। रत्नसंघीय अनेक संस्थाओं और अन्य सामाजिक-धार्मिक तथा व्यावसायिक संघों-संस्थाओं में परामर्शदाता, संरक्षक या विश्वस्त मण्डल के सदस्य रहकर समाज को नई दिशा प्रदान की। गुलाबपुरा श्रावक संघ के प्रायः आधी शताब्दी तक अध्यक्ष पद का बखूबी निर्वहन किया। आप धीर, गम्भीर और समर्पित धर्मनिष्ठ श्रावक थे। आपके जीवन में धार्मिक आस्था, गुरु के प्रति श्रद्धा तथा जनसामान्य के प्रति करुणा की भावना थी। आप कुशल, दृढ़निश्चयी उद्योगपति थे एवं अपने उद्योग द्वारा सामान्य जन की सेवा के व्रत को आपने पूर्ण किया। आपके विचारों में नवीनता और प्राचीनता का समन्वय था।

-नौरत्नमल चपलोट, 9252447967

पहुंजा (चित्तौड़गढ़)-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कुसुमदेवीजी धर्मपत्नी श्री ललित कुमारजी पुत्रवधू श्री रोशनलालजी बोहरा का 4 फरवरी, 2020 को 50 वर्ष की आयु में आकस्मिक स्वर्गवास सूरत में हो गया। आप अत्यन्त शान्त स्वभावी, सरल व्यक्तित्व की धनी, मृदुभाषी, मिलनसार, व्यवहार कुशल एवं धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत गृहिणी थी। प्रतिदिन सपरिवार सामायिक-स्वाध्याय, प्रतिक्रमणादि करना आपका नित्यक्रम था। आपने इन संस्कारों को अपनी तीनों सुपुत्रियों में भी संक्रान्त किया। तीनों सुपुत्रियाँ सी.ए., सी.एस. जैसी उच्च शिक्षा को प्राप्त करके भी सामायिक-प्रतिक्रमण एवं कई थोकड़े कण्ठस्थ करके सामायिक को आवश्यक समझकर साधनारत रहती हैं। श्री ललितजी बोहरा स्वाध्यायी हैं और पर्युषण में सेवाएँ प्रदान कर चुके हैं। आपका पीहर परिवार भी धर्मपरायण है।

-कन्हैयालाल जैन, स्वाध्यायी

मसूदा (अजमेर)-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती मुन्नीदेवीजी धर्मपत्नी श्री सम्पतराजजी ललवाणी का 12 जनवरी, 2020 को जोधपुर में देहावसान हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक एवं व्रत प्रत्याख्यान करती थी। आप समय-समय पर गुरु दर्शन, वन्दन का लाभ लेती थी। आप अपने परिवार में पति के अतिरिक्त दो सुपुत्र एवं सुपुत्रवधू से भरपूर परिवार छोड़कर गयी हैं।

-सिंहराज ललवाणी

रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष का आग्रह-अनुरोध

रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाशजी टाटिया ने अपने परिपत्र 25 जनवरी, 2020 को रत्नसंघ की प्रत्येक स्थानीय शाखा को प्रेषित किया गया, उसमें आचार्य दीक्षा शती वर्ष (26 जनवरी 2020-13 फरवरी 2021) के अन्तर्गत राष्ट्रीय कार्यक्रम "सामायिक-प्रतिक्रमण" कण्ठस्थ करने तथा आवश्यक-सूत्र की परीक्षा देने का अनुरोध किया गया। संघाध्यक्ष महोदय ने संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं से यह भी अपील की कि संघ का प्रत्येक सदस्य आचार्य श्री हस्ती दीक्षा-शताब्दी वर्ष में राष्ट्रीय कार्यक्रम का तो अनुगमन करे ही, अपने स्तर पर ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन के कार्यक्रम आयोजित कर संघोन्नति में अपनी भूमिका व भागीदारी निभाएँ; साथ ही संघ की एकरूपता पुष्ट कर आबाल-वृद्ध सबमें सामायिक-प्रतिक्रमण कण्ठस्थ करने का पुनः पुनः आग्रह-अनुरोध करके आराध्य आचार्यदेव के दीक्षा शताब्दी-वर्ष को सफलतापूर्वक मनाएँ।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

❁ साभार-प्राप्ति-स्वीकार ❁

4000/-साहित्य सदस्यताआजीवन

(अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

- 805 श्री गौतमचन्द्रजी गुदेचा, सोजतरोड़, पाली (राज.)
 806 श्री दिनेश कुमारजी जैन, अलवर, (राज.)
 807 श्री रूमित कुमारजी लुणावत, नरसिंहपुर (मध्यप्रदेश)

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन

(अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 16139 से 16140 तक कुल 2 सदस्य बने

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

- 50000/- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मन्त्री श्री अशोक कुमारजी सेठ एच.यू.एफ. की ओर से सप्रेम भेंट।
- 11000/- श्रीमती कुमुमजी रतनचन्द्रजी कोठारी, जयपुर की ओर से सप्रेम भेंट।
- 11000/- श्री विजयजी, जतिनजी नाहर, इन्दौर, स्व. श्रीमती सरलाजी एवं स्व श्रीमती अलकाजी नाहर की पुण्य स्मृति में।
- 5100/- श्री सुनील कुमारजी, रोहन कुमारजी, रूमित कुमारजी लुणावत, नरसिंहपुर, जलगाँव में 29 जनवरी, 2020 को श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. के पावन मुखारविन्द से सुश्री निमिषाजी लुणावत की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न होने पर।
- 2100/- श्री प्रकाशचन्द्रजी, प्रेमराजजी, सुरेशचन्द्रजी भण्डारी, पीपाड़सिटी, सूर्यकान्ताजी सुपुत्री श्री प्रकाशचन्द्रजी भण्डारी के 11 की तपस्या के उपलक्ष्य में।
- 2100/- श्री दौलतराजजी, शैलेशजी, गौतमजी मेहता, मुम्बई, परिवार के एकमात्र चिराग श्री भव्य मेहता द्वारा साढ़े नौ वर्ष की आयु में सूत्र में श्री श्रेयांस विजयसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा संयम (दीक्षा) ग्रहण करने के उपलक्ष्य में।
- 2100/- श्रीमती सुशीलाजी कस्तूरचन्द्रजी डोसी, ब्यावर की ओर से सप्रेम।
- 2100/- श्री हंसराजजी, प्रदीप कुमारजी चौपड़ा, गोटन-नागौर, सुपुत्र श्री प्रदीपजी चौपड़ा के सी.ए. बनने के उपलक्ष्य में।
- 2100/- श्रीमती सुशीलाजी धर्मसहायिका स्व. श्री कंचलराजजी मेहता, श्री नरेन्द्रजी-श्रीमती नूतनजी, श्री नवीन्द्रजी-श्रीमती उर्मिलाजी, डॉ. नवनीतजी-श्रीमती लीनाजी, श्रीमती नीलमजी-श्री ललितजी जैन, श्री सिद्धराजजी मेहता, जोधपुर, श्री कंचलराजजी मेहता की प्रथम पुण्य स्मृति में।
- 1151/- श्री सुरेशचन्द्रजी, निक्कीजी जैन, खातोली वाले, चि. मनीषजी जैन का शुभविवाह सौ.कां. लक्ष्मीजी सुपुत्री श्री धर्मचन्द्रजी जैन आलनपुर के संग 16 जनवरी, 2020 को सुसम्पन्न होने की खुशी में।
- 1111/- श्री शोभागमलजी, हरकचन्द्रजी, हनुमानप्रसादजी, महावीर प्रसादजी, कपूरचन्द्रजी जैन (बिलोता वाले) अपनी मातुश्री की पुण्य स्मृति में।
- 1101/- श्री राजेशजी, योगेश कुमारजी जैन (अणगोरा वाले), सुमेरगंज मण्डी, चि. योगेश कुमारजी जैन का शुभविवाह 4 फरवरी, 2020 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।
- 1101/- श्री पारसमलजी, अशोक कुमारजी, सुरेश कुमारजी जैन, सवाईमाधोपुर, पूज्या मातुश्री श्रीमती चौसरदेवीजी जैन की पुण्य स्मृति में।
- 1100/- श्री महावीर प्रसादजी, दिनेशजी, पारसजी, पंकजजी, मुकेशजी जैन (कुण्डेरा वाले), इन्दौर, वरिष्ठ सुश्राविका श्रीमती शान्तिदेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री रघुनाथ प्रसादजी जैन का 09 जनवरी, 2020 को देहावसान होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।
- 1100/- श्री रमेशचन्द्रजी, सिद्धार्थजी संकलेचा, हरियाडाणा (पीपाड़), जोधपुर, विरक्ता सुश्री प्रियाजी संकलेचा के अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।
- 1100/- श्री दौलतजी, उत्तमजी, दीपकजी चोरड़िवा, चेन्नई, 1980 से नववर्ष की पूर्व रात्रि गुरुचरण सन्निधि में संवर-साधना एवं नववर्ष मांगलिक

- श्रवण करने का सतत क्रम गुरु कृपा से अबाधित गतिशील रहने की खुशी में।
- 1100/- श्री दौलतमलजी, उत्तम कुमारजी चोरड़िया, चेन्नई, दीक्षा-शताब्दी वर्ष पर पुण्य धरा पीपाड़ में गुरुचरण सन्निधि में साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।
- 1100/- श्री सुरेन्द्र कुमारजी, रमेशजी, पंकजजी जैन (उनियारा वाले), सवाईमाधोपुर, श्री माणकचन्दजी जैन की पुण्य स्मृति में।
- 1100/- श्रीमती अंजूजी, मनोजजी कोठारी, जयपुर की ओर से सप्रेम।
- 1100/- श्री अनिल कुमारजी, महेन्द्र कुमारजी, ऋषभजी जैन (पुसेदा वाले), सवाईमाधोपुर, चि. सौमिल के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री सोमप्रकाशजी जैन (विलोपा वाले), आवासन मण्डल-सवाईमाधोपुर, भारत संचार निगम लिमिटेड, सवाईमाधोपुर से कार्यालय अधीक्षक के पद से 31 जनवरी, 2020 को सेवानिवृत्त होने के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री उमेशजी, राजीवजी जैन, कोटा, पूज्य पिताजी श्री त्रिलोकचन्दजी जैन का 1 जनवरी, 2020 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।
- 1100/- श्री बाबूलालजी, कमल कुमारजी, नरेन्द्र कुमारजी, संजय कुमारजी जैन, दादाबाड़ी-कोटा, सुपुत्री सौ. गौरांशी का शुभविवाह चि. शुभम सुपुत्र श्री घनश्यामजी जैन (आटून वाले), सवाईमाधोपुर के संग 27 फरवरी, 2020 को सम्पन्न होने की खुशी में।
- 1100/- श्री देवेन्द्रनाथजी-श्रीमती कमलाजी मोदी, श्रीलोकेन्द्रनाथजी-श्रीमती ऋतुजी मोदी, जोधपुर, सुश्री लोरीजी एवं सुश्री आर्विजी मोदी, जोधपुर, कीर्तिशेष श्री हुकमनाथजी मोदी के पुण्यस्मृति दिवस 15 फरवरी, 2020 पर भावाञ्जलि स्वरूप।
- 1100/- श्री महावीर प्रसादजी जैन (सहाडी वाले), जयपुर, सुपौत्र श्री नीरजजी सुपुत्र श्रीमती निर्मला-रविन्द्र कुमारजी जैन का शुभविवाह सौ.कां. उर्वशीजी सुपुत्री श्रीमती अलका-नरेश कुमारजी जैन के संग 25 फरवरी 2020 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

आगामी पर्व तिथि

चैत्र कृष्णा 8, सोमवार	16.03.2020	अष्टमी, भगवान आदिनाथ जन्म कल्याणक एवं आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 86वाँ जन्म दिवस।
चैत्र कृष्णा 14, सोमवार	23.03.2020	चतुर्दशी, पक्खी।
चैत्र शुक्ला 7, मंगलवार	31.03.2020	आयम्बिल ओली प्रारम्भ।
चैत्र शुक्ला 8, बुधवार	01.04.2020	अष्टमी।
चैत्र शुक्ला 13, सोमवार	06.04.2020	भगवान महावीर जन्म कल्याणक
चैत्र शुक्ला 14, मंगलवार	07.04.2020	चतुर्दशी, पक्खी।
चैत्र शुक्ला पूर्णिमा, बुधवार	08.04.2020	आयम्बिल ओली पूर्ण।
वैशाख कृष्णा 8, बुधवार	15.04.2020	अष्टमी।
वैशाख कृष्णा 14, मंगलवार	21.04.2020	चतुर्दशी
वैशाख कृष्णा अमावस, बुधवार	22.04.2020	पक्खी
वैशाख शुक्ला 3, शनिवार	26.04.2020	अक्षय तृतीया, आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्ती मलजी म.सा. का 91वाँ आचार्य पदारोहण दिवस-स्वाध्याय दिवस, आचार्य प्रवर पूज्य श्री कजोड़ीमलजी म.सा. की 141वीं पुण्य तिथि

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द्र प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

मेरी प्यारी सहेली

श्रीमती निधि लोढ़ा

मैं बहुत सालों के बाद अपनी बचपन की सहेली से मिलने वाली थी। मन में एक अलग ही खुशी थी। गूल में उसका पता डालकर निकल पड़ी। गगनचुम्बी सुन्दर इमारतें और नीचे के बगीचे वहाँ की समृद्धि का मानो गुणगान कर रहे थे।

उसे बचपन में केरी का अचार बहुत पसन्द था जब तक वह केरी को चूस-चूसकर सफेद न कर देती तब तक केरी नहीं छोड़ती तो मैं हाथ में केरी का अचार लेकर चल पड़ी। सिक्यूरिटी पर इतने सवाल जवाब मानो मैं सहेली से नहीं प्रधानमन्त्री से मिलने जा रही थी।

खैर वह घड़ी भी आ गई। तेज चलने वाली लिफ्ट ने मुझे फटाफट सत्तरहवीं मञ्जिल पर पहुँचा दिया। मुझे लगा घण्टी बजते ही मेरी सहेली नीता दरवाज़ा खोल देगी और मैं उसके गले लग जाऊँगी। घण्टी बजायी, एक सुन्दर बीस-बाईस वर्ष की लड़की ने दरवाज़ा खोला और मुझे सोफ़े पर बैठने को कहा।

बड़ा-सा झूमर, मुलायम कार्पेट, शाही सोफ़े, सुन्दर फूलों वाला फूलदान, इतना सुन्दर घर कि आँखें जहाँ देखती, नज़र वहीं ठहर जाती।

पानी लेकर वही लड़की वापस आई। मैंने कहा नीता कहाँ है? तुम कौन हो?

उसने मुस्कुराते हुए कहा-“दीदी आ रही है, मैं यहाँ काम करती हूँ, मेरा नाम अलीशा है।”

थोड़ी देर में नीता भी आ गयी। ऐसे लगा जैसे मेकअप का फिर से टचअप करके निकली है। बातों का सिलसिला तो ऐसा निकला कि समय का पता ही नहीं चला। कुछ देर में अलीशा फिर आयी और डाइनिंग टेबल पर नाश्ते की तरफ़ इशारा करके बोली-“पहले यह ले लीजिए।”

सारे बर्तन चाँदी के और जिस क़रीने से टेबल सजाई गई वाह! मज़ा आ गया। गरमा-गरम समोसे और चाय से पेट भर गया। अब खाने की जगह ही नहीं बची। कुछ देर बाद नीता ने एक पुरानी-सी स्टील की प्लेट, मुड़ा हुआ चम्मच लिया, उसमें नाश्ता रखा और गिलास में अलीशा को भी चाय डाल दी।

बाद में मुझे आकर कहा-“और सब तो ठीक है पर प्लेटें अलग ही रखती हूँ, मुझे नहीं पसन्द।”

मैंने कहा-“खाना रोज़ घर पर ही खाती हो?”

उसने कहा-“रविवार शाम को तो खाना पकता ही नहीं। नये-नये रेस्टोरेण्ट और नयी-नयी डिशेज ट्राई करनी होती है।”

मैं बोली-“तो क्या तुम अपनी प्लेट साथ भी ले जाती हो? वहाँ पर भी तो हर जाति और हर धर्म के लोग आते हैं। हम उन प्लेटों में खुशी-खुशी खाते हैं और जो

लड़की बरसों से तुम्हारा घर सम्भाल रही है उसके लिए अलग प्लेट।”

शायद उसे मेरी बात बुरी लगी।

उसने कुछ नहीं कहा, पर चेहरा फ्रीका पड़ गया। मुझे कुछ बात ठीक नहीं लगती तो मैं सामने बोल देती हूँ।

प्रभु महावीर के शासन में हर जाति के लोग थे और आज भी जैनधर्म में कई साधु-साध्वीजी अलग-अलग धर्म और जाति वाले दीक्षित हुए हैं, कहीं कोई भेदभाव नहीं फिर जो लड़की हमारे घर में दिन-रात रहकर हमारा काम करती है, हमारी सेवा करती है, उसके लिए अलग प्लेट क्यों?

क्या यह सोचने का विषय नहीं? सुज्ञजन स्वयं विचार करें।

-3C 204 Whispering Palms, Lokhandwala township, Kandivali (East), Mumbai (Mh.)

पाठशाला

श्री नमन सचित देडीया

पाठशाला में जैनों के बच्चे जाते हैं। पाठशाला में जाने वाले बच्चे हमेशा संस्कारी होते हैं। जो बच्चे पाठशाला में नहीं जाते वे अपने माता-पिता की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं। अपने बच्चों को पाठशाला में भेजने का माता-पिता का काम है। जो माता-पिता अपने बच्चों को पाठशाला नहीं भेजते हैं वे पछताते हैं। जो बच्चे पाठशाला में जाते हैं वे गुणवान बनते हैं। जो माता-पिता अपने बच्चों को पाठशाला में भेजकर उनको गुणवान बनाते हैं, वे भाग्यशाली हैं। जो बच्चे पाठशाला में जाकर गुणवान बनते हैं वे आगे जाकर सुखकारी बनते हैं।

-वरणगाँव (महाराष्ट्र)

Questions and Answers

Sh. Dulichand Jain

Q.1- Why should we control our senses?

Ans. As human beings, we use our body's five senses to perceive and experience the world around us. Slowly, we become

intoxicated by our sensory experiences and restlessness sets in. We start yearning for more, giving rise to our desires and passions. Gradually, our desires start to get out of control.

Sensory control is the first step on the path of spiritual evolution. Mahāvīra has stated, "If there were numberless mountains of gold and silver as big as Mount Kailash, they would not satisfy an avaricious man; for avarice (desire) is boundless like the sky." To cultivate self-control over our desires and passions, we must conquer our senses.

No. 70, T.T.K. Road, Aalwarpath, Chennai-600018
(Tamilnadu) 9444047263

सम्भाषण के सामान्य सूत्र

श्रीमती नीलू डग्गा

- ✳ बोलने हेतु उचित समय की प्रतीक्षा करें।
- ✳ सोच विचार कर बोलें।
- ✳ बात करते हुए दो व्यक्तियों के बीच में न बोलें, जरूरी हो तो अनुमति लेकर बोलें।
- ✳ बात बोलने से पहले सामने वाले की मनःस्थिति भाँप लें।
- ✳ कम बोलें और तभी बोलें जब सामने वाला सुनने को तैयार हो।
- ✳ धैर्यपूर्वक दूसरों की बात भी सुनें, फिर जो कहना है, कहें।
- ✳ आदर से और धीरे से बोलें, अपनी बात में आवेश न लाएँ।
- ✳ बहस में न उलझें और प्रतिप्रश्न न करें।
- ✳ एक बात बार-बार न कहें, बिना पूछे सुझाव भी न दें।
- ✳ दूसरों को अपशब्द न कहें एवं व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग न करें।
- ✳ मिथ्याभाषण (झूठ) न कहें।
- ✳ अन्यायपूर्ण बात न कहें।
- ✳ तकिया कलाम की आदत से बचें।

- ✱ अहंकार युक्त वाणी का प्रयोग न करें।
- ✱ अशिष्ट लोकोक्ति एवं मुहावरों का प्रयोग न करें।
- ✱ भाषा की शुद्धता एवं वाक्य रचना का ध्यान रखें।
- ✱ दूसरों की निन्दा नहीं, प्रशंसा करें।
- ✱ आत्म प्रशंसा न करें।
- ✱ दूसरों के दुःख में सहानुभूति और सुख में प्रसन्नता व्यक्त करें।
- ✱ मर्मकारी (गुप्त बात प्रकट करने वाली) भाषा नहीं बोलें।

-7 ए, शार्दूल गंज, बीकानेर (रज.)

व्यवहार सम्यक्त्व के 67

बोल

- (1) श्रद्धान-4, (2) लिंग-3, (3) विनय-10, (4) शुद्धि-3, (5) लक्षण-5, (6) दूषण-5, (7) भूषण-5, (8) प्रभावना-8, (9) आगार-6, (10) यतना-6, (11) भावना-6, (12) स्थानक-6.

पहले बोले श्रद्धान चार

तत्त्व श्रद्धा को जागृत करने तथा सुरक्षित रखने के उपायों को 'श्रद्धान' कहते हैं।

1. परमार्थ अर्थात् जीवादि नव तत्त्वों का परिचय प्राप्त करना।
2. परमार्थ अर्थात् जीवादि नव तत्त्वों के स्वरूप को भली प्रकार जानने वाले आचार्य आदि की सेवा करना।
3. जिन्होंने सम्यक्त्व का वमन कर दिया है, उन श्रद्धा भ्रष्ट पुरुषों की संगति नहीं करना।
4. कुदृष्टि अर्थात् कुदर्शनियों की संगति का त्याग करना।

दूसरे बोले लिङ्ग तीन

श्रद्धावान व्यक्ति की वह बाह्य रुचि जिससे आन्तरिक रुचि का ज्ञान होता हो, उसे 'लिङ्ग' कहते हैं।

1. जैसे तरुण (कामी) पुरुष राग रंग में विशेष अनुराग रखता है उसी प्रकार भव्य जीव शास्त्र श्रवण में

अनुरक्त रहे।

2. जैसे तीन दिन का भूखा आदमी खीर खाण्ड का भोजन रुचि सहित करता है, उसी प्रकार वीतराग की वाणी आदर सहित सुने।
3. जिस प्रकार अनपढ़ को पढ़ने की चाह रहती है और पढ़ने के अवसर मिलते ही हर्षित होता है, उसी प्रकार वीतराग की वाणी सुनकर हर्षित होवे।

तीन मनोरथ

आरम्भ परिग्रह तजि करी, पञ्च महाव्रत धार।
अन्त समय आलोचना, करूँ संथारो सार॥

भगवान महावीर ने स्थानाङ्ग सूत्र में फरमाया है कि साधक तीन मनोरथों का बार-बार चिन्तन करता रहे-

- (1) "वह दिन धन्य होगा, जब मैं अपने धन सम्पत्ति-रूप परिग्रह का पीड़ित जनता के हित के लिए त्याग करूँगा। यह परिग्रह मेरी आत्मा के लिए सबसे बड़ा बन्धन है। यह ममता का ज़हर आध्यात्मिक जीवन को दूषित कर रहा है। धन का सच्चा उपयोग संग्रह में अथवा अपने स्वार्थ के पोषण में नहीं है, प्रत्युत जनहित के लिए अर्पण कर देने में है। अस्तु, जिस दिन मैं अपने परिग्रह को जन सेवा में त्याग कर प्रसन्नता अनुभव करूँगा ममता के भार से हल्का हो जाऊँगा, वह दिन मेरे लिए महान् कल्याणकारी होगा।"
- (2) "वह दिन धन्य होगा, जब मैं संसार की मोह, माया और विषय-वासना का त्याग करके साधु जीवन स्वीकार करूँगा। अहिंसा आदि पाँच महाव्रतों को धारण कर और परीषह उपसर्गों को समभाव से सहन कर जिस दिन मुनि पद की ऊँची भूमिका में विचरण करूँगा, वह दिन मेरे लिए महान् कल्याणकारी होगा।"
- (3) "वह दिन धन्य होगा, जब मैं अपनी संयम यात्रा को सुकशल-निर्विघ्न भाव से पूर्ण कर अन्त समय में आलोचना, निन्दना एवं गर्हणा करके संथारा ग्रहण करूँगा। सभी प्रकार की उपधि, आहार और

जीवन की ममता का भी त्याग कर जिस दिन मैं पूर्ण रूप से अपने आपको वीतराग भगवान की उपासना में लगाऊँगा, वह दिन मेरे लिए कल्याणकारी होगा।”

सुगम उपाय

डॉ. रमेश 'मयंक'

जीवन को

अच्छा बनाने का सुगम उपाय

बुराइयों से रहना दूर

अच्छाइयों की तरफ़

आकर्षित होकर

बढ़ना भरपूर।

महान् व्यक्तियों ने

पहले बुराइयों को जाना,

फिर-

बड़ों की सीख से

दृढ़ संकल्प की प्रक्रिया को अपनाया,

त्यागकर बुराइयों का पथ

जीवन को अच्छाइयों से

परिपुष्ट बनाया।

अनुभवी बताते

सद्विचारों को ग्रहण करने से

जीवन को मिलती सही दिशा

और-

घर परिवार ;

समाज में

बनी रहती विश्वसनीयता

साथ-साथ बढ़ती प्रतिष्ठा।

किसी का बुरा नहीं करने का संकल्प

भला बनकर शान्ति लाता है,

व्यक्ति तिरस्कार न करके

सभी को अपने समान समझ कर

प्रतिकूलताओं से बच जाता है

शारीरिक-मानसिक आघातों से बचकर

आनन्ददायी जीवन बिताता है।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

धोवन पानी के लाभ

‘धोवन पानी’ अध्यात्म एवं स्वास्थ्य दोनों ही दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। ‘धोवन पानी हाथ में, आरोग्य आपके साथ में।’ क्योंकि धोवन (अचित्त) पानी पीकर वायु रोग, कब्जियत, जोड़ों का दर्द, चर्म रोग, एसिडिटी इत्यादि से बच सकते हैं।

धोवन पानी में किसी भी प्रकार के हानिकारक बैक्टीरिया नहीं होते हैं, एकदम शुद्ध पानी होता है। जो शरीर को नीरोगी बनाता है एवं जीवन रक्षा में लाभदायक है।

धोवन पानी पावरफुल ऐन्टी ऑक्सीडेंट के रूप में कार्य करता है, क्योंकि धोवन पानी अल्कलाइन बन जाता है और इसकी pH Value 7 से अधिक हो जाती है जबकि न्यूट्रल पानी (Normal Water) की pH Value 7 होती है और Acidic Water की 7 से कम।

आप सोचते होंगे कि धोवन पानी का विधान क्यों किया गया? वस्तुतः जैनधर्म एक विवेक प्रधान धर्म है, जो हमें यह सिखाता है कि कैसे कम से कम हिंसा में हम जीवन-यापन कर सकें। धोवन बनने से पानी अचित्त हो जाता है, यानी सतत अप्काय के असंख्य जीवों की जन्म-मरण की विराधना से बच जाते हैं।

जीवों के प्रति अनुकम्पा और जिनवाणी के प्रति आस्था से सम्यक्त्व उत्पन्न होता है और हम श्रावक या श्राविका कहलाते हैं। जीवन में यतना और जीवदया के संस्कारों को जागृत करने और स्थिर रखने हेतु कच्चे पानी (सचित्त) के स्थान पर अचित्त पानी-धोवन (राख मिश्रित पानी) ही पीना चाहिए।

-जीवन बोध (भाग-2) पुस्तक से संकलित

समाज की महत्ता

श्रीमती कमला-हणवन्तमल सुराणा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 अप्रैल, 2020 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

ग्रीष्म अवकाश चल रहा था। आरव छत पर खुली हवा में मोबाइल में खेल खेल रहा था। इतने में उसका मित्र श्लोक आता है।

श्लोक-‘यार, मैं जब भी आता हूँ, तुम मोबाइल से खेलते मिलते हो। यह मुझे अच्छा नहीं लगता है।’

आरव-‘तुझे अच्छा नहीं लगता है, पर मुझे तो बहुत ही पसन्द है।’

श्लोक-‘यह एक प्रकार का व्यसन है, हाथ में आ जाने के पश्चात् छूटता नहीं है। मोबाइल में खेलते समय कोई व्यक्ति आ जाए तो अखरने लगता है, क्योंकि मनोरञ्जन में बाधा पड़ जाती है। कोई हमसे कुछ पूछता है तो उसका उत्तर तुरन्त नहीं दे पाते हैं और एँ-एँ करते हैं जैसे भैंस के आगे बीन बजा रहे हैं।’

आरव-‘पढ़ने के पश्चात् क्या करूँ?’

श्लोक-‘मैं भी यही सोचता हूँ क्या करूँ। सोचते-सोचते मस्तिष्क में आया कि कोई सामाजिक कार्य करें। योग शिविर में प्रशिक्षण ले चुके हैं। मोहल्ले के किशोरों को इकट्ठा करके योग करें। उसमें अपनी रुचि भी है। सायं 5 बजे से 6 बजे तक का समय रखेंगे। आधा घण्टा योग और प्राणायाम करेंगे और आधा घण्टा अन्य खेल खेलेंगे। स्थान रूपल उद्यान रखेंगे। एक पञ्जिका में सबके नाम लिख लेंगे। मेरे पिताजी सामाजिक कार्य करते हैं। प्रतिदिन संध्या के समय अस्पताल जाकर

रोगियों की सेवा करते हैं। उनके लिए दवाइयाँ, फल एवं अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। कभी-कभी मैं भी जाता हूँ। कार्य प्रारम्भ करने के पहले पिताजी से सलाह ले लेते हैं, अन्य कार्य बताएँगे तो वह कर लेंगे।

श्लोक आरव को साथ लेकर घर आ जाता है।

आरव-‘नमस्कार चाचाजी!’

श्लोक के पिता विनयचन्दजी दोनों को आशीर्वाद देते हैं।

आरव-‘श्लोक मुझे मोबाइल पर खेल खेलने से मना करता है और कहता है व्यर्थ में समय गँवाता है, संघ से जुड़कर, काम करें।’

विनयचन्द-‘समाज को समय देकर समय का सदुपयोग करो। समाज नव पीढ़ी पर आश्रित है।’

आरव-‘मैं किसी पर आश्रित नहीं हूँ। अपना काम स्वयं कर लेता हूँ। पढ़ाई में समस्या आती है तो मोबाइल से समस्या हल कर लेता हूँ। खाने-पीने की सामग्री ऑन लाइन मँगवा लेता हूँ। मैं तो अकेला ही अच्छा हूँ।’

विनयचन्द-‘तुम अकेले नहीं रह सकते हो। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से दूसरों पर निर्भर हो। मोबाइल द्वारा अपनी समस्या का समाधान कर लेना, ऑन लाइन सामान मँगवा लेना ठीक है। यह सब कार्य अपने आप तो नहीं हुए। ऑन लाइन घर बैठे सामान आना, यह प्रौद्योगिकी किसी न किसी की देन है। मोबाइल भी

बुद्धिजीवियों की भेंट है। ये वैज्ञानिक भी सामाजिक प्राणी हैं।’

आरव-‘चाचाजी, ये लोग पैसा लेकर कार्य करते हैं।’

विनयचन्द-‘आरव, तुम बहुत भोले हो। पैसे देने के पश्चात् हमारा काम तो बन जाता है। सभी लोगों को अपनी जीविका चलाने के लिए पैसे चाहिए। मनुष्य काम भी नहीं करे और पैसा भी नहीं कमाएगा तो समाज पर भार बन जाएगा, बेरोजगारी बढ़ जाएगी। जो लोग अपने पूर्वजों का कार्य सम्भाल कर पैसा कमाते हैं वे कर्तव्यनिष्ठ हैं। तुम सब काम अकेले नहीं कर सकते हो जैसे कृषि करना, लुहार, सुनार, बढ़ई, धोबी आदि काम करने वालों की सहायता लेनी ही पड़ती है। विकसित और स्वस्थ समाज के लिए इञ्जीनियर, डॉक्टर, वकील, सी.ए., शिक्षक एवं वैज्ञानिक का समन्वय जरूरी है। समाज के सभी लोग अपनी भूमिका निभाते हैं। समाज के बिना मनुष्य अधूरा है। उसकी मान-मर्यादा समाज से होती है। समाज से उसका अस्तित्व जुड़ा हुआ है।

एक उदाहरण से इसका स्पष्टीकरण करता हूँ।

सिर में घने और काले-काले बाल से चेहरा खिलता है। इसलिए बालों की विशेष सुरक्षा की जाती है। उनको संवारते हैं। एक भी बाल टूटने नहीं देते हैं। टूटने पर दुःख होता है। उनकी रक्षा के लिए बड़े दाँतों का कंघा रखा जाता है। अधिक झड़ने पर चिकित्सा की जाती है। सफेद होने पर वे काले किए जाते हैं। नवयुवक-नवयुवतियाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के केश-विन्यास करती हैं। जो बाल टूट जाते हैं तो घृणा के साथ उन्हें फेंक दिया जाता है। एक भी बाल खाने में आ जाता है तो ऊब होने लगती है। खाना छोड़कर उठ जाते हैं।

ऐसा क्यों? चेहरे की सुन्दरता बढ़ाने वाले ही तो बाल हैं। समूह में थे तब उनकी सुरक्षा थी, उनका मान था, इसी प्रकार व्यक्ति भी समाज का अंग बनकर रहता है तो उसका सम्मान है। हिलमिल कर रहने से सब हितैषी रहते हैं।

श्लोक-‘मैं आठवीं कक्षा में पढ़ रहा था। पापाजी गणित पढ़ा रहे थे। उसी दिन गणित की परीक्षा थी। इतने में फोन आया। पड़ोसी जगजीतसिंहजी का देहान्त हो गया। 10 बजे शव यात्रा का प्रस्थान होगा। पिताजी तुरन्त उठ गए। लोकाचार में जाने के लिए तैयार होने लगे।’

श्लोक ने कहा-‘मेरे गणित की परीक्षा है। आप जा रहे हैं।’

पिता-‘मुझे लोकाचार में जाना है।’

श्लोक-‘मुझे गणित कठिन लगती है, आप कल बैठक में चले जाना।’

पिता-‘बेटा! गणित के प्रश्न तुम स्वयं हल कर सकते हो। मैं जहाँ जा रहा हूँ, वहाँ सबको मिलकर काम करना होता है। जिनके घर में मृत्यु हुई है वे बहुत दुःखी हैं। उन्हें सान्त्वना देनी होती है। कफन लाना होता है। पार्थिव देह को अर्थी पर रखने हेतु तैयार करना होता है। अन्तिम संस्कार के लिए कन्धों पर उठाकर श्मशान घाट ले जाना होता है। सगे-सम्बन्धी अड़ोसी-पड़ोसी मिलकर अपना-अपना कर्तव्य निभाते हैं। यह कार्य श्रेष्ठ कार्यों में अपना स्थान रखता है। एक घटना सुनाता हूँ जिससे तुम्हें आभास होगा कि समाज का कितना महत्त्व है।

अपने ही नगर में अत्यधिक धनी सेठ रहते थे। वे लोकाचार में घोड़े पर बैठकर जाते थे, श्मशान के कार्य में हाथ नहीं बँटाते थे। उन्हें पैसे का बहुत घमण्ड था, सभी को छोटा मानते थे।

सेठजी की माताजी का देहान्त हो गया। परिचितों को सूचित किया गया। सभी लोग घोड़े पर बैठकर आ गए। उनके कार्य में किसी ने हाथ नहीं बँटाया। सेठजी राह देख रहे थे कि लोग अन्दर आकर रीति-रिवाज पूरे करें, समय पर यहाँ से अर्थी रवाना हो जाए। तीन-चार घण्टे बीत गए अर्थी बाहर नहीं आई। एक व्यक्ति अन्दर जाकर कहने लगा-“सेठजी जल्दी कीजिए सभी लोग बाहर राह देख रहे हैं। काले-काले बादल भी गरज रहे हैं, वर्षा आने की सम्भावना बढ़ रही है।”

सेठजी-‘आप लोग अन्दर पधारिए और क्रियाकर्म कीजिए। बहुत कहने के पश्चात् भी लोग टस से मस नहीं हुए। अन्त में सेठजी को अपनी गलती का भान होने लगा। मन ही मन चिन्तन करने लगे कि मैं कभी किसी के काम नहीं आया, इसलिए मेरे साथ ऐसा ही व्यवहार हो रहा है।’

सेठजी का अहंकार भंग हो गया। वे अपनी पगड़ी समाज के लोगों के चरणों में रखकर सबके गले मिले।

सेठजी जैसे ही नम्र हुए, लोगों ने घोड़ों को रवाना कर दिया। कुछे देर के बाद अर्थी बाहर आ गई।

विनयचन्द्रजी-‘श्लोक-आरव आप समझ गए होंगे कि समाज से जुड़कर रहने से ही सफल जीवन व्यतीत कर सकते हैं।’

आरव-‘चाचाजी, मैं संघ सहायक बनकर समाज के लिए भलाई के काम करूँगा।’

श्लोक-‘मेरी तो यही सोच है कि मैं समाज के हित में भागीदार बनूँ।’

-ई 123, नेहरू पार्क, जोधपुर (राज.)

- प्र. 1. व्यसन किसे कहते हैं? ये हमारे जीवन के लिए अनुपयोगी क्यों हैं?
- प्र. 2. ‘समाज के बिना मनुष्य अधूरा है।’ ऐसा कहने के पीछे कारण स्पष्ट कीजिए।
- प्र. 3. लोगों ने सेठजी का सहयोग क्यों नहीं किया?
- प्र. 4. सेठजी को किस बात का अहंकार था और वह कैसे दूर हुआ?
- प्र. 5. ‘जीवन में समाज की महत्ता’ विषय पर 80-100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए।
- प्र. 6. पर्यायवाची शब्द लिखिए-आश्रित, पीढ़ी, बाल, जीविका।



बाल-स्तम्भ [जनवरी-2020] का परिणाम

जिनवाणी के जनवरी-2020 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'आपका का क्या होगा?' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम		अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	सक्षम जैन-आलनपुर, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	24
द्वितीय पुरस्कार-300/-	प्रियंका चौपड़ा-अजमेर (राजस्थान)	23.5
तृतीय पुरस्कार- 200/-	अरिष्ठ कोठारी-अजमेर (राजस्थान)	23
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	प्रणव भण्डारी-जोधपुर (राजस्थान)	22.5
	जिनेन्द्र पारख-धनारीकलां, जोधपुर (राजस्थान)	22.5
	आयुषी आहूजा-जयपुर (राजस्थान)	22
	आरची जैन-सिंगोली (मध्यप्रदेश)	22
	अदिती बाँठिया-नागपुर (महाराष्ट्र)	22

बाल-जिनवाणी फरवरी, 2020 के अंक से प्रश्न

1. 'मेरे बिना कैसे चलेगा' कहानी में निहित सन्देश को स्पष्ट कीजिए।
2. 'आदर्श जीवन-निर्माण में धर्म की भूमिका' विषय पर आठ-दस पंक्तियों में अनुच्छेद लिखिए।
3. सच्चा श्रावक किसे कहते हैं?
4. निरतिचार सातिचार छेदोपस्थापनीय चारित्र से किस प्रकार भिन्न है?
5. चारित्र किसे कहते हैं? वर्तमान समय में कौन-कौन से चारित्र पाये जाते हैं?
6. How Positivity can make our lives better?
7. नेहा अस्पताल में रहती हुई क्या चिन्तन करती है?
8. आत्म उन्नति कब सम्भव है?
9. Write five characteristics of positive people.
10. Write synonyms of miserable, potential, excuses and appearances.

बाल-जिनवाणी [दिसम्बर-2019] का परिणाम

जिनवाणी के दिसम्बर-2019 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम		अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	क्षितिज जैन-अलीगढ़-रामपुरा (राजस्थान)	38
द्वितीय पुरस्कार-400/-	धीरज कोठारी-न्यावर (राजस्थान)	37
तृतीय पुरस्कार- 300/-	रितेश जैन-कोटा (राजस्थान)	36
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	कविश जैन-चौथ का बरवाड़ा (राजस्थान)	35
	ममता आर. छाजेड़-भुसावल (महाराष्ट्र)	35
	कपिल जैन-अफजलपुर, मन्दसौर (मध्यप्रदेश)	35

संस्कार केन्द्र एवं पाठशाला अध्यापकों से निवेदन

आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र एवं धार्मिक पाठशालाओं के अध्यापकों से निवेदन है कि वे जिनवाणी पत्रिका में प्रकाशित 'बाल-जिनवाणी' का वाचन कक्षा में करावें एवं उसमें पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भेजने हेतु व्यवस्था करावें। आचार्य हस्ती दीक्षा शती वर्ष में बालकों को संस्कारित करने का यह भी एक उत्तम साधन है।

आस्रव भावना

श्रीमती अभिलाषा हीरावत

आत्म प्रदेशों में कर्मों का आना आस्रव रूप है
कर्म रहित आत्मा ही शुद्ध निज स्वरूप है
आस्रव है आत्मा की मोह दशा में कर्मों का प्रवाह
मिथ्यात्व, अत्रत, प्रमाद, कषाय, योग से
फैलता यह बहाव
अनभिज्ञता मद मोह, मदिरा पान सम दुःख रूप है
अविवेकी मिथ्यात्व वश भूला अपना स्वरूप है
'मिथ्यात्व' के संसर्ग से होता बुद्धि में विपर्यास
मोह मिथ्या के जाने से होता चित्त में सरलता का वास
पाप का वार-सा है 'अविरति' प्रवाह
इच्छा निरोध, पाप निवृत्ति से रुकता अशुभ प्रवाह
पंच प्रमाद सेवन से संसार भ्रमण है चलता
अप्रमत्त बनकर साधक पूर्व कर्म निर्जरण है करता
प्रमाद रहित होने से ही मञ्जिल पास है आनी,

चतु 'कषाय' आत्मा का परिभ्रमण बढ़ाते हैं
दुर्गति में ले जाकर भव चक्र संसरण कराते हैं
आत्मा की बाह्य सृष्टि बाह्य प्रवृत्ति मिलान 'योग' है
आत्मा की होने वाली क्रिया प्रवृत्ति कर्म का संयोग है
शुभ-अशुभ, पाप-पुण्य, सब कारण है बन्धन का
पार लगे ना नैया जब तक आस्रव रहता कर्मों का
चेतन! अब तो आस्रव को जान, दोषों को पहचान
पूर्ण निरास्रवी ही पाता है चौदहवाँ गुणस्थान
कर्मबन्ध कार्य हैं और पंच आस्रव कारण
आस्रव रहित वही जो करता धर्म को धारण
'प्रसन्नचन्द्र राजर्षि' ने अप्रमत्त हो 'आस्रव भावना' भायी
अनुप्रेक्षा से आचरित कर त्वरित मुक्ति है पायी,
'आस्रव भावना' की अनुप्रेक्षा कर ले रे भवी प्राणी!
दिखला रही मुक्ति पथ हमको 'मुदित' जिनवाणी।
-1101, बुड साइड, जी साउथ गोखले रोड, प्रभादेवी,
मुम्बई-400025 (महाराष्ट्र) 9892417640

जयगुरु हस्ती

जयगुरु हीरा

जयगुरु मान

मोक्ष मार्ग का भाता

स्वयं के लिए चाहोगे साता, खोलोगे दुःख का खाता.
अन्य लिए चाहोगे साता, पाओगे मोक्षमार्ग का भाता।



VIRSAT

The Digital Hub

Electronics Retail Chain Store

& POOJA

MARKETING

Wholesaler of Electronics Home Appliances.

OUR BRANCHES

HOSHANGABAD ROAD

Surenbra Land Mark, Block B, Bhopal

KOH-E-FIZA

A-9, Main Road, Bhopal

SEHORE

163, Khajanchi Line

Tel No. 0755-429901 Mob : 9826024431, 9039911108

वेबर चन्द प्रेम चन्द नाहर एवं समस्त नाहर परिवार भोपाल

अहंकार के वृक्ष पर
विनाश के फल लगते हैं।



ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

फोन : 022 2628 7187

ई-मेल : oswalmatrimony@gmail.com

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)



जय गुरु हस्ती

||GURUDEV||

जय गुरु हीरा-मान



गुरु हस्ती के दो फरमान
सामायिक स्वाध्याय महान

गुरु हीरा का यह सन्देश
व्यसन मुक्त हो देश विदेश



UDAY INDUSTRIES CHENNAI PVT. LTD.

IMPORT & EXPORT AND DEALERS OF IRON & STEEL
LONG & FLAT PRODUCTS

UDAY CONSULTS LLP

OVERSEAS AND DOMESTIC MANPOWER RECRUITMENT
AND
FACILITY MANAGEMENT

CONNECTING BRIGHT TALENT WITH THE RIGHT COMPANY

STEEL

| **LOGISTICS** |

MANPOWER

WITH BEST COMPLIMENTS from:

G R SURANA & RAJESH SURANA

No.10&11, Jawaharlal Nehru Road,
Koyambedu, Chennai - 600 107.

Mobile No: 9940566666, Contact No: 044-24797675

Website: www.udaygroup.net

Mail Id: industries@udaygroup.net





जयगुरु हस्ती

जयगुरु हीरा

जयगुरु मान



वीतराग देव, निर्ग्रन्थ गुरु एवं दयामय धर्म के प्रति श्रद्धा रखने वाले सभी स्वधर्मी है
फिर चाहे वे गरीब हों या अमीर, उनकी सहायता करना धर्म की आराधना है।

- आचार्य हीरा

BAGHMAR TOWER .
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karnataka)

With Best Compliments from :

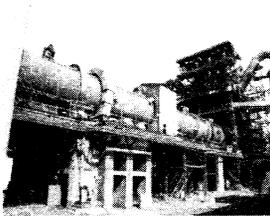
C. Sohanlal Budhmal Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurabh, Akhilesh,
Jiyansh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)

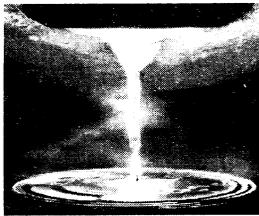
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)



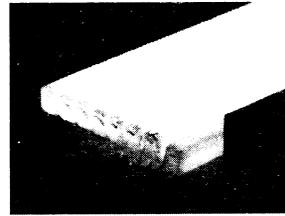
Gurudev



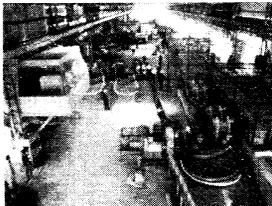
DRI Plant



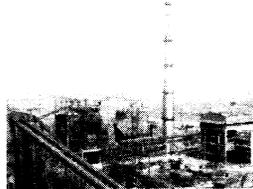
Electric Arc Furnace



Billets



Rolling Mill



Captive Power Plant



Windmill

With best wishes from



ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL | POWER | MINING

॥ श्री महावीराय नमः ॥

हस्ती-हीरा जय जय !

हीरा-मान जय जय !



छोटा सा नियम धोवन का ।
लाभ बड़ा इसके पालन का ॥

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.

एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHVIRAJ PREM KUMAR KAVAD

690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056

Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273



MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

GURU HASTI THANGA MAALIGAI

(JEWELLERS & BANKERS)

5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056

Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

गजेन्द्र निधि

आचार्य हस्ती मेघावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. We Have Launched Membership Plans For Donors.

We Have Launched Membership Plans For Donors

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)		
SILVER MEMBER RS.50000	GOLD MEMBER RS.75000	PLATINUM MEMBER RS.100000
DIAMOND MEMBER RS.200000		KOHINOOR MEMBER RS.500000

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund IFSC Code - UTIB0000168

A/c No. 168010100120722

PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभिमान के सदस्य बनकर योजना की निरंतरता को बनाए रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पृथार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्चों एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची -

KOHINOOR MEMBER (RS. 500000)	PLATINUM MEMBER (RS. 100000)
श्रीमान् मोफतराज सा मुणोत, मुम्बई। श्रीमान् राजीव सा नीता जी डामा, इस्टन। युवातरु श्री हरीश सा कवाड़, चेन्नई।	श्रीमान् दूलीचंद बाधमार एण्ड संस, चेन्नई। श्रीमान् दलीचंद सा सुरेश सा कवाड़, पूनामल्लई। श्रीमान् राजेश सा विमल सा पवन सा बोहरा, चेन्नई। श्रीमान् प्रेम सा कवाड़, चेन्नई।
SILVER MEMBER (RS. 50000)	श्रीमान् अम्बालाल सा बसंतेशी जी कर्नाट, चेन्नई। श्रीमान् सम्पतराज सा राजकंवर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन-चेन्नई। कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण वैस्टिबल ट्रस्ट, अहमदाबाद।
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चेन्नई। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चेन्नई। श्रीमति गुप्त सहयोगी, चेन्नई। श्रीमान् महावीर सोहनलालजी बोधरा, जलगांव (भोपालगढ़) श्रीमान् सोहनराज जी बाधमार, कोयम्बटूर। कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण वैस्टिबल ट्रस्ट, अहमदाबाद। श्रीमान् विजयकुमार जी कुशेश जी विनीत जी गोदी, मदनगंज-फिसनगढ़।	

सहयोग के लिए बैंक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें- M.Harish Kavad - No.5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-56

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए संपर्क करें- मनीष जैन, चेन्नई (+91 95430 68382)

‘छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का’

Jai Guru Heera

Jai Guru Hasti

Jai Guru Maan

॥ जैनं जयति शासनम् ॥

With Best Compliments from:

Dharamchand Paraschand Exports

Paras Chand Hirawat

CC 3011-3012, Bandra Kurla Complex, Bandra (E),

Mumbai-400 098 (MH)

Tel. : +91 22 4018 5000

Email : dpe90@hotmail.com

KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER

PACHPADRA-PALI-ERODE

Dhruvi Mill India

'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali-306401 (Raj.)

Mobile : 094141-22757

135, N.M.S. Compound, ERODE-638001 (T.N.)

Tel. : 3205500 (O), Mobile : 093600-25001

Basant Jain & Associates, C.A.

BKJ & Associates, C.A.

BKJ Consulting Pvt. Ltd.,

Megha Properties Pvt. Ltd.

Ambition Properties Pvt. Ltd.

बसंत के जैन

अध्यक्ष: श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई

ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines,

Mumbai - 400020 (MH)

Ph. : 022-22018793, 22018794 (o), 022-28810702

जो भी साधर्मी व्यक्ति अपनी आजीविका के लिए कुछ सीखना या प्रशिक्षण लेना चाहते हैं उनसे निवेदन है कि वे अपनी फोटो के साथ अपना बायोडाटा एवं प्रशिक्षण कार्य का विवरण निम्नलिखित पते पर भेजने की कृपा करें या ई-मेल करें।

Address :

A/1502, Naman Midtown, S.B. Road, Elphistone Road, Mumbai-400013

e-mail: info@nhstudioz.tv



JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS

BREAKFAST CEREALS

FORTIFIED RICE KERNELS

WHOLE & BLENDED SPICES

VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

*Special Foods for undernourished Children
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes*

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)

Tel.: 0141-2770294

Email-jvsfoods@yahoo.com

Website-www.jvsfoods.com

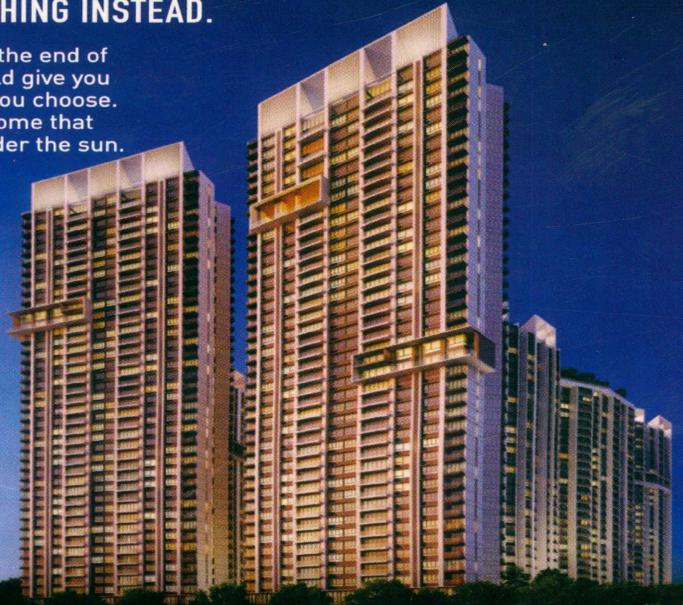
FSSAI LIC. No. 10012013000138



**WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T
FORCE YOU TO CHOOSE.
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.**

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

 **022 3064 3065**



ARTIST'S IMPRESSION

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENSA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | Tel: +91 22 3064 5000 | Fax: +91 22 3064 3131 | **Email:** sales@kalpataru.com | **Website:** www.kalpataru.com

In association with



This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

(आ. स. 6700)
श्री मन्त्री महोदय
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा-382007,
जिला-गाँधीनगर (गुजरात)

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए... द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182, बपू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन